بي نظير روشني

پروفيسر ارجن ڪرپالاڻي

بي نظير روشني

(ڪهاڻين جو مجموعو)

ليکڪ

پروفيسر ارجن ڪرپالاڻي
بياور

2013

پرڪاشڪ

آنوپما پبليڪيشن

3/10، شاستري نگر، بياور

ٻه اکر

بلاشڪ 21 صديءَ ۾ گهريلوُ هِنسا، زور زناءُ، ٺڳيءُ، هتيا... آتم
هتيا، طلاق، تيزابي حملا ڏينهون پوءِ گهٽجڻ بدران وڌندا ئي پيا وڃن.
ر اِن صديءَ جو هڪ سچ اِهو به اَسانجي سامهون ڳالهه اونچو ڪري
يتو آهي ته اَڄ جي اِستريءَ پنهنجي چُپ-ماٺ کي پنهنجي اَندران
نڙي ڪڍِي ٻاهر ڦٽو ڪري ڇڏيو آهي.... هُنجو ڊپ اَندران نڪري
روار ٿي رهيو آهي.... هاڻي اُنکي اَنياءُ، ظلم، زيادتي موُر برداشت
ڪونهي.... او پنهنجي زندگيءَ جي قيمت تي به نه! چوندا آهن جتي
ڊپ ناهي، اُتي سچ هوندو آهي ۽ سچ کان وڏو نه قانون هوندو آهي ۽
ه ئي ٻيو ڪو هٿيار.... اِن سچ جي سهاري هوءَ پڪتي قدمن سان
پنهنجي خلاف ٿيندڙ هر اَنياءَ سان مقابلو ڪرڻ لاءِ بِنداس، بيباڪ شِوَ
جو ڊمروُ پنهنجي هٿ ۾ کڻِي وڃائڻ لڳِي آهي ۽ مَرّدن جي خلاف
تانڊوَ ڪرڻ لڳِي آهي، جيڪو ظالم مَرّدن لاءِ پرلئه جو سَنيڪت آهي!

منهنجي ڪهاڻين جي مجموعي ”بي نظير روشنيءَ“ جون تمام
اِستريون پنهنجي پنهنجي زندگيءَ ۾ سندن سان ٿيندڙ ظلم، ڏاڍائي
۽ اَنياءَ خلاف پنهنجو سڀ ڪجهه داوَ تي لڳائي، مُنيون تاڻي، دانهون
ڪوڪون ڪري، سموري ڪائنات کي پنهنجي وجود جو اَحساس ٿيون
ڪرائين ته جيستائين حق ۽ اِنصاف نه ملندو، ڏوهاري مرّدن کي سزا
نه ملندِي، هنجِي جنگ جاري رهندِي.... حياتيءَ جي آخرين ڏينهن
تائين، آخري دم تائين.

اَڄ جي اِستريءَ جِي اِها جُريت ڏسِي نه رڳي تمام مرد حيران
آهن، اَندران ڏڪيل آهن.... اِستري جمائت به اِهو سڀ ڏسِي حيران
آهي. وقت ۾ آيل هيءُ ڦيرو وقت جِي تقاضا به آهي ۽ آواز به.... اِها
چڻنگ، اِها آگ دائم قائم رهي. آمين!

پروفيسر اَرجن ڪرپالاڻي

بي نظير روشني

(ڪهاڻين جو مجموعو)

ليکڪ

پروفيسر ارجن ڪرپلاڻي

ائڊريس : 3/10، شاستري نگر،
بياور (راجستان)
فون : 01462-225215
موبائيل : 98292-73666

قيمت : -/130 روپيا

سال : ڊسمبر 2013ع

ڇاپو : پهريون

ڇپيندڙ :
اَمر پارٽ آفسيٽ پريس
هاٿي ڀاٽا، اَجمير
فون : 0145-2626372

Published with partial Finance Assistance awarded by
Rajasthan Sindhi Academy, Jaipur

हीउ किताब राजस्थान सिन्धी अकादमी, जयपुर जे
आंशिक मदद सां छपायो वियो आहे।

هيءُ ڪتاب راجستان سنڌي اَڪادمي، جئپور جي
ڪجهه مالي مدد سان ڇپايو ويو آهي.

प्रस्तावना

साहित्य और पत्रकारिता के बीच यदि किसी रिश्ते को स्थापित या परिभाषित करने की जरूरत पड़े तो 'बेनज़ीर रोशनी' को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। प्रो.अर्जुन कृपलानी उन कथाकारों में से एक है जो समाचार पत्र की घटनाओं को केवल खबर की तरह पढ़कर छोड़ देने के बजाय उनके पात्रों के माध्यम से समाज की गलीज व्यवस्था को बेहतर बनाकर आदर्श स्थितियों को साकार होते देखना चाहते हैं।

प्रो.अर्जुन कृपलानी ने अपने इस तीसरे कहानी संग्रह की दस रचनाओं के माध्यम से अपने उसी अभियान को मुकम्मल बनाने का क्रान्तिकारी प्रयास जारी रखा है जो पिछले दो कहानी संग्रह में उनके तेवर रहे। साहित्य लेखन की सार्थकता को सामाजिक सरोकार का बाना पहनाकर उन्होंने आदर्श भी स्थापित करने की कोशिश की है। सदियों से चली आ रही परम्परा के स्थापित मूल्यों को तोड़ने की कोशिश सदा चमत्कार ही लगती है लेकिन कोई अगर ठान ही ले तो फिर मुश्किल भी क्या है?

नारी प्रधान रचनाओं के रूप में प्रस्तुत संग्रह की नायिका 'बेनज़ीर रोशनी' में कभी सुजाता बनकर एड्स पीड़िता के दाम्पत्य जीवन व मातृत्व सुख की तलाश को मुकाम तक पहुंचाती है तो कभी 'सिसकियों भरे सवाल' की नेहा के रूप में बलात्कार के बाद ठहरे गर्भ को जन्म देकर उसे समाज में अपनाने हेतु अपनी ही मां से टकरा जाती है। निशा के रूप में 'निशाने पर न्याय' कहानी की दामिनी और राकेश की कुटिलता से घिरे उसके विश्वास को दरकने के बावजूद वह न्यायालय से अपने साथ हुए अन्याय को दुरूस्त करा उदाहरण पेश करती है तो मधु के रूप में असलम द्वारा छली गयी भावनाओं को बटोरकर 'गुम हो चुके बादल' को ढूंढ लेती है। 'चुभते हुए दाग' कहानी की साक्षी अपने नपुंसक पति के साथ सुहागरात के बाद की सुबह को जीवन की नई सुबह बनाने से नहीं चूकती तो 'मर चुकी मुस्कान' में सलोनी अपने असफल प्रेमी को तेजाब फेंकने के अपराध की सज़ा दिलाकर ही दम लेती है।

हर कहानी में स्त्री के किरदार को उसकी प्राकृतिक मासूमियत, सामाजिक संवेदनशीलता तथा संघर्ष की चुनौतियों की ज्यामिति के साथ प्रभावी तरीके से प्रस्तुत किया गया है। यह रचनाएं नारी जीवन के इर्द-गिर्द बिखरे उसके स्नेह, ममता, कर्तव्य के साथ ही उसकी वेदना, विवशता और विलाप की त्रासदी से अछूती नहीं है। नर और नारी में कौन छोटा, कौन बड़ा? इसके बावजूद स्त्री को दोयम दर्जे पर रखना और उससे व्यवहार के मानदण्डों में दोहरापन, समाज द्वारा उसके दैविक रूप को पूजने के ढ़ोंग को ही उजागर करता है। लेखक ने रोजमर्रा की जिन्दगी में मूल्यहीन आस्थाओं से जुड़ी खबरों पर आधारित कहानियों के द्वारा अपनी प्रतिभा, क्षमता तथा सामाजिक प्रतिबद्धता को प्रमाणित किया है तथा दूसरे रूप में ये कहानियां धराशायी होती मानवीय आस्था का सम्बल भी बन रही है।

संग्रह की सभी कहानियों का कथानक, शिल्प और प्रस्तुति बेहद सरल, रोचक, प्रभावी तथा बोधगम्य है। कई जगह चुटीले व्यंग्यात्मक प्रहारों से कथ्य को पैना बनाकर लेखक ने कलम की गत्यात्मकता को गद्यात्मक रूप में ढाला है। हर कहानी का शीर्षक काव्यात्मक आभा समेटे हुए है तथा कहानी के पात्रों के मध्य संवाद व कथोपकथन शैली इनकी रोचकता को और भी बढ़ा रही है।

कुल मिलाकर संग्रह पठनीय, प्रेरक तथा सहेजने योग्य है।

– रामप्रसाद कुमावत

संस्थापक : निरन्तर (दैनिक), ब्यावर

سلسلو

نمبر	چا بابت	صفحو
1.	بي نظير روشنيِ	7
2.	سُڌڪن پريا سُوال	15
3.	نِشاني تي نياءُ	23
4.	گُمر تيِ ويندڙ بادل	31
5.	مريِ ويل مُرڪ	38
6.	هارايل لُڙڪ	46
7.	ساهيڙيِ	51
8.	ڏنگيندڙ داغ	57
9.	سوُئر	65
10.	مِٺو ٻوجهه	73

بي نظير روشني

منوهر جڏهن ئي شهر جي مشهور شادي هال ’ڪيشوُ گارڊن‘ جي اَندر گهڙيو ته اُتي جي هلچل نه ڏسي منجهي پيو. هوُ سوچڻ لڳو ته ڪٿي هوُ غلط جڳهه تي ته ڪونه اَچي ويو آهي. نه ميوُزڪ، نه ڊي. جي. اِسٽيج به بلڪل خالي هو. اُتي نه گهوٽ-ڪنوار هئا، نه ئي اُنهن جا عزيز مائٽ ئي ڪيس نظر تي آيا. حالانڪ بجلي بتيون روشن هيون. پر ڊي. جي. سائونڊ سِسٽم خاموش هو. فلور ماڳهين خالي هو! هوُ بيحد منجهي پيو. هن کي اِها ماجرا بلڪل سمجهه ۾ نٿي آئي.

اوچتو منوهر جي نظر پنهنجي هڪ جهوني دوست تي وڃي پيئي. هنجي ويجهو وڃي پڇيو- ”اَڙي ڪمل، هي ماجرا ڇاهي! نه گهوٽ-ڪنوار، نه ميوزڪ، نه ناچ-گانو... نه ئي کاڌي جي اِسٽالن تي نيئنڊيل ماڻهو ئي نظر اَچي رهيا آهن! ڪٿي مان ڊنر لاءِ غلط جڳهه تي ته ڪونه اَچي ويو آهيان؟“

”نه منوهر، تون غلط جڳهه تي بلڪل ڪونه پهتو آهين. مان به توکان ٿوري دير اَڳ ئي ڊنر لاءِ هتي پهتو هوس. سڀ ڪجهه ٺيڪ-ٺاڪ هلي رهيو هو. کاڌي جا اِسٽال به ماڻهن سان آباد هئا. جدا جدا طعامن جو لطف ماڻي رهيا هئا. اِسٽيج تي گهوٽ-ڪنوار سيني سان کِلي ڪيڪاري رهيا هئا. ڊي. جي. فلور تي زالون-مڙد ۽ ٻار خوب نچي ٽپي ، مستيءَ ۾ جهومي رهيا هئا. فوٽا ۽ موُويون نڪري رهيون هيون.“

”ڪمال آ! منوهر حيرت مان چيو. ايتري سڀ ٺيڪ کان پوءِ هيءُ سناٽو؟“ ”ٻُڌ ته سهين يار.... ڪمل ڳالهه جي سِري کي جوڙيندي اَڳتي چيو- ”ويڊيءَ جي وقت کان اين ڪجهه پل اَڳ اِها خبر آئي ته گهوٽ کي AIDS آهي! پوءِ ته يار ڪنوار ۽ اُنجي گهر وارن ۽ مٽن مائٽن جا ته پيرَ به ويا ته ڇهه به! ٿورو اَڳ اچي ڏسين ها منوهر. ڇا ته مارمڪ نظارو هو! ڪُنوار- پنهنجي ماءُ جي ڇاتيءَ سان لڳي زار زار

राजस्थान सिन्धी अकादमीअ जा उद्देश्य

1. सिन्धी भाषा ऐं साहित्य जे क्षेत्र में अध्ययन ऐं अनुसंधान खे प्रोत्साहन ड॒ियणु ऐं वाधारो करणु ।
2. राज्य में सिन्धी संस्थाउनि/संगठननि जे कमनि में समन्वय ऐं सहयोग स्थिापित करणु ।
3. सिन्धी साहित्य सा जुड़ियल साहित्यकारनि ऐं साहित्य जे क्षेत्र सां जुड़ियल संस्थाउनि में सहकार वधाइण ऐं अहिड़ियुनि संस्थाउनि जे गठन ऐं वाधारे खे प्रोत्साहन करणु ।
4. राष्ट्रीय ऐं राज्य स्तर ते सिन्धी साहित्यिक संस्थाउनि जे मार्फ़त गोष्ठियूं ऐं सम्मेलन आयोजित करे, साहित्यिक विचारनि जे आदान-प्रदान खे प्रोत्साहत करणु ।
5. साहित्यिक पुस्तकनि, पत्र-पत्रिकाउनि ऐं शोध पत्रनि जो सिन्धी भाषा में प्रकाशन कराइण ऐं प्रोत्साहत करणु ।
6. सिन्धी संगठननि जी ज़रूरत मूजिबि पुस्तकालयुनि ऐं वाचनालयनि जी स्थापना करणु ऐं प्रोत्साहित करणु ।
7. राजस्थान सोसाइटीज रजिस्ट्रेशन एक्ट 1958 जे तहत सिन्धी भाषा ऐं साहित्य जे क्षेत्र में कम करण वारियुनि संस्थाउनि खे मान्यता ड॒ियणु ऐं मान्यता प्राप्त संस्थाउनि खे माली मदद ड॒ियणु ।
8. पुस्तक, प्रदर्शनियुनि, मुशायरनि ऐं साहित्यिक कार्यक्रमनि जे माध्यम सां देश में सांस्कृतिक ऐं साहित्यिक सम्पर्कनि खे वाधारो ड॒ियणु ।
9. योग्य लेखकनि, कवियुनि ऐं बुद्धिजीवियुनि खे स्कॉलरशिप, फैलोशिप ऐं पुरस्कार ड॒ियणु।
10. सिन्धी भाषा जे लेखकनि ऐं कवियुनि खे उन्हनि जी उल्लेखनीय उपलब्धियुनि लाइ मान्यता ड॒ियणु ऐं साहित्यिक कृतियुनि जे प्रकाशन लाइ माली मदद उपलब्ध कराइणु ।
11. अध्ययन, पाठ्यक्रम, व्याख्यान, सेमीनार, सम्मेलन ऐं सर्वक्षण कार्यक्रम आयोजित करे सिन्धी साहित्य जे अध्ययन में वाधारो करणु ।

राजस्थान सिन्धी अकादमी
कला, साहित्य एवं संस्कृति विभाग राजस्थान सरकार के अधीन स्वायत्तशासी संस्थान
अकादमी संकुल, जे-15, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर. टेलीफैक्सः 0141-2700662
راجستان سنڌي آڪادمي
RAJASTHAN SINDHI ACADEMY

ڪشمڪش کان پوءِ هنجو اَندرُ هڪ دردِ فيصلو ڪٺي هنجي سامهون
اچي بيٺو- ”چاهي ڪجهه بہ ٿي وڃي، هوُ اِها سچائي لِڪائي ڪنهن
ہ پرائي جائيءَ سان شادي نہ ڪندو.... چاهي هنکي ڪيترو بہ اِنتظار
ڇونہ ڪرڻو پوي....
X X X X X

منوهر ٿيهہ پورا ڪري ايڪٽيهين ۾ اچي پهتو هو. هڪ نامچين
ڪمپنيءَ ۾ اوُچي پوسٽ تي لڳل هو. ڇهين لکين جو ساليانو پئڪيج
هوس. هوُ شڪل شبيهہ ۾ سهڻو ۽ ناهوُڪو هو.... روش بہ ڪڙا هئس.
گهر ۾ ٻڍا ماءُ پيءُ ئي هئس، جنجي خواهش هئي تہ مرڻ کان اَڳ
ٻچڙي کي سنڌي ٻانهن مليس، جئن اَڪيلو گهر پورڻ ريت روشن ٿي
پوي! پر ڪين اِها خبر ڪانہ هئي تہ سندن اَڪين جو تارو ۽ جانٺو جوان
AIDS جو شڪار هو.

منوهر ٿهي دل نيڪ ۽ ايماندار. پر اَجايو اِهو راز ظاهر ڪري
هن پنهنجي ٻڍڙي ماءُ پيءُ کي وڏيڪ ڳڻتين ۾ وجهڻ نٿي چاهيو.

ديش ۾، خاص ڪري مِڊل ڪلاس ۾ ۽ اَپر مِڊل ڪلاس ۾ AIDS
زور پڪڙي رهي هئي ۽ ملڪ جي ڪجهہ تڪن ۾ تہ ’مهاماريءَ‘ جو
روپ اَختيار ڪرڻ لڳي هئي. منوهر کي پيڙا اِن ڳالهہ تان هئي تہ
AIDS جا شڪار مرد توڙي زالون پنهنجي بيماري لڪائي، شادي ڪري
رهيا هئا. ايترو ئي نہ، اولاد بہ پيدا ڪري رهيا هئا. ظاهر آهي تہ اُها
ايندڙ پيڙهي AIDS کٺي ڏرتيءَ تي اَچي رهي هئي! منوهر اِن سچائيءَ
جو اَحساس ڪري ڏکجي ويندو هو. پر هنجي حساس دل ۾ AIDS
جي شڪار جوان ۽ جوانڙين لاءِ همدردي بہ هئي، جيڪي جيئڻ جي
آش ڇڏي چڪا هئا. جڏهن سماج اُنهن جوان-جوانڙين کي حِقارت
جي نظر سان ڏسندو هو، تڏهن ويچارا سيئي مُنهن لِڪائي، ڪَترائي
نڪري ويندا هئا. ڪيڏي نہ قياس جوڳي زندگي هئي هنن جي! منوهر
سوچڻ لڳو- ڇا اهڙن نوجوان ۽ نوجوانڙين کي سنمان سان جيئڻ جو،
ڏامپتيہ سُک ماڻڻ جو ڪو حق ڪونهي؟ آخر هُنن کي بہ ڪنهنجو تہ

روئي رهي هئي. سندس پيءُ سيتلداس جي تہ ڄڻ سموري دنيا ئي اُجڙي ويئي.... ويچاري جو مال بہ ويو تہ ماڃنو بہ! ڪنوار جي ماءُ پيءُ کي گهڻو صدمو اِن ڳالهہ جو لڳو تہ ري ڪُتئي ڌيءُ جي دامن تي ٽِڪو لڳي ويو! اُهو تہ سنو ٿيو منوهر، جو اِهو راز ويڏيءَ کان اَڳ ئي ظاهر ٿي ويو. نہ تہ تہ شاديءَ کان پوءِ ويچاري سيتلداس ۽ سندس پريوار جو اَلائي ڪهڙو حشر ٿئي ها؟''

منوهر اِهو واقعو ٻڌي جنسي دهلجي ويو! هيڏو وڏو ڏوهہ، سو بہ هڪ نياڻيءَ جي پيءُ سان!

منوهر اُداس قدمن سان شاديءَ جي هال کان ٻاهر نڪري آيو ۽ گهر پهچي ٻُڪئي پيٽ ئي هنڌ تي اچي ليٽيو. اَندر ايڏي تہ آنڌمانڌ مَتل هئي، ايڏو تہ هاهاڪار مَتل هو، جو ننڍ هن کان ڪوهن جا ڪوهہ پري هلي ويئي هئي. رکي رکي هوُ لڳو پاسا وَرائڻ!

شهر ۾ هيءُ پهريون واقعو هو، جنتي AIDS جي ڪري بہ زندگيون هميشهہ هميشهہ لاءِ جُڙي هڪ ٿيندي رهجي ويون هيون. اُهو بہ هڪ ڏوهہ جي آڌار تي. ڏوهہ ڪرڻ وارا اَڄ بہ آزاد ۽ ڇڙواڳ گهمي رهيا آهن!.... نہ هنن جي مٿان قانون جو شڪنجو آهي، نہ سماج جي طرفان ڪا سزا ئي مقرر آهي. ويو تہ ويچاري ڌيءُ جي ماءُ پيءُ جو ويو. هالي تہ ويچارن جو سمورو جهان ئي اُجڙي ويو!

منوهر جي حساس دل ۾ هڪ طوفان اچي ويو!

دراَصل منوهر پاڻ بہ HIV+ هو. بہ سال اَڳ هڪ حادثي ۾ گهايل ٿيڻ سبب کيس اِسپتال ۾ آندو ويو هو. خون وڌيڪ وَهي وڃڻ سبب کيس خون چاڙهڻ لاءِ خون جي اِنتظام دؤران هڪ پيشيوَر بلڊ ڊونر جو خون چاڙهيو ويو، جيڪو خود AIDS جو شڪار هو. منوهر اُن پيشيوَر جو روڳ پنهنجي جسم ۾ ڍوئي رهيو هو.

اَڄ جي واقعي هن کي جنسي ڌونڌاڙي ڇڏيو. هنجا سنسڪار، هنجا اُصول هنجي سِر تي سُوار ٿي ويا. ليٽئي ليٽئي ئي ويچارن جي

چوڪرن ۽ چوڪرين لاءِ هو. منوهر مُفت ۾ اهڙن چوڪرن-چوڪرين جا نالا رجسٽرڊ ڪرڻ جو اِنتظام ڪيو، جڏهن هو سڀ بِنداس پنهنجا بايوڊاٽا ۽ فوٽا وغيره ڪٺي اُتي جمع ڪرائي سگهن.

ڪجهه ئي ڏينهن ۾ منوهر جي اِن تواريخي مئريج بيوُرو ۾ هزارين داخلائون درج ٿي ويون! هاڻي اَهڙن +HIV چوڪرن-چوڪرين کي هيڻٽا، پاڻ لڪائڻ بدران بِنداس، ڪنڌ مٿي ڪٽي هلڻ جي هڪ راهه جو ملي ويئي هئي!

منوهر کي ترتئون سندس ڏنل اِشتهار جي موٽ ۾ هڪ پرپوزل مليو. سُجاتا نالي هڪ سُهڻي، تعليم يافته پر طلاق شده جيوَن ساٿڻ ملِي ويئي، جيڪا +HIV هئي. نهايت سادگيءَ پريل هڪ سماروهه ۾ منوهر هُن سان شادي رَچائي. سندس بِڏا ماءُ پيءُ ته پُٽ-نُنهن کي ڏسي خوشيءَ ۾ نٿي ماپيا. منوهر سُجاتا جي سُلجهيل دل دماغ ۽ نماڻي سياءَ ڪري پاڻ کي ڌنيه سمجهڻ لڳو.

سُهاڳ جي سيجا تي اُن رات منوهر سُجاتا کي پنهنجي تواريخي رِٿا سمجهائيندي چيو- ”ڏس سُجاتا! مهاماريءَ جيان ڦهلجندڙ هن نُگري بيماريءَ کي گهٽائڻ ۽ نااُميد +HIV چوڪري-چوڪرين ۾ هڪ نئين اُميد، نئين آس جڳائي، اَپراڌ بوڌ کان مُڪت ڪرڻ لاءِ ۽ لِڪ چوريءَ هيل تائين +HIV پيڙهيءَ تي اَنڪُش لڳائڻ هاڻ منهنجي زندگيءَ جو مول مقصد آهي. مونکي وچن ڏي ته تون به منهنجي اِن Mission کي ڪامياب بڻائڻ ۾ مون سان کُلهو مِلائي هلندينءَ!

-”منهنجا سوامي! مان ته توهانجو Mission ڏسي، توهانجي اَرڌانگني بڻجي ڌنيه ٿي ويئي آهيان!“ سُجاتا، منوهر جي پيرن کي ڇُهندي اَڳتي چيو- ”زندگيءَ جي آخرين دم تائين مان توهان سان پاڇولي وانگر گڏ رهنديس ۽ توهانجو سپنو ساڪار ڪرڻ جي پوري ڪوشش ڪنديس!“

’سات‘ گهرجي، جيئن توڙ تائين ٻيو نه- پنهنجو ڏک-سُک، پنهنجا جذبات هڪ ٻئي سان وَنڊي سگهن. ڇو ويچارا گُمناميءَ جي اَنڌيري ۾ پنهنجو جيوَن گهارڻ لاءِ اَپيشِپت ٿين!

چوندا آهن- جيڪي ليڪ کان پري هٽي زندگي جيئندا آهن، اُهي ئي اِتهاس رچيندا آهن! منوهر جي ويچارن ۾ مَٿل اُٿل پُٿل ڪيس هڪ چئلينج بڻجي اُنهن سامهون اچي بيٺي هئي. رات جا ٻه لڳي رهيا هئا پر ننڊ هن کان ڪسجي ڄڻ ڪوهه جا ڪوهه پري ڀڄي ويئي هئي! آخر هن ٻرندڙ مسئلي جو ڪو ته حل هوندو؟

اوچتو ويچارن جي چڪرويوهه کي ٽوڙي هڪ حل بجليءَ جي چمڪات وانگر اُنجي اَکين اَڳيان اَچي بيٺو. هڪ بي نظير روشني ڄڻ اُنجي راهه روشن ڪرڻ لاءِ سندس جي سامهون سِر جهڪائي اَچي بيٺي هئي!

صبوح جو اُٿي، پنهنجي راتوڪي رِٿا موجب سڀ کان اَڳ هن پنهنجو پاڻ کان ئي شروعات ڪئي. ديش جي ناليارِي روزاني اَخبار ۾ هُن وِواهڪ اِشتهار وجهايو- ”گُهرجي هڪ +HIV ڇوڪري، پڙهيل ڳڙهيل، پوءِ پلي هوءَ وڌوا هجي يا طلاق شُده. نه ذات جو ٻنڌن ۽ نه ئي ڀاشا يا ڌرم جو!“

منوهر هن اِشتهار سان گڏ پنهنجو موبائيل نمبر ڏنو، جنهن جهٽ ريسپانس ملي. وِواهڪ اِشتهارن جي تاريخ ۾ هي اِشتهار بي نظير هو! حيرت ۾ وجهندڙ هو، پر اُن مان منوهر جي ايمانداري سِر ڪڍي ليِاڪا پائي رهي هئي. شان سان پنهنجو ڪنڌ مٿي ڪيو بيٺي هئي!

جيڪي جوان ۽ جوانڙيون +HIV هئڻ ڪري ڪنڌ لڪائي جي رهيا هئا، زندگيءَ ۾ نا اُميدي ڀاسي رهيا هئا يا جيڪي +HIV جو سچ لِڪائي شادي ڪرڻ جي فِراڪ ۾ لڳل هئا، اُنهن لاءِ هڪ پريرڻا، جيئڻ جي هڪ صحيح راهه اِن اِشتهار ذريعي هٿ لڳي ويئي هئي!

منوهر اِتهاس رَچڻ جي ڪَڙيءَ ۾ هڪ ٻي بي نظير ڪڙي جوڙي. هُن شهر جي وچ ۾ هڪ مئريج بيوُرو کوليو، جيڪو رڳو AIDS جي شڪار

جي آخرين دم تائين اِستريِ-پرش، ٻنهي کي هڪ ٻئي جو ساٿ گهرجي. توهان سُرڪشت ديهہ سنبنڌ ذريعي وِواهڪ جيوَن جو سُک ماڻي سگهو ٿا. ٻڍاپي ۾ هڪ ٻئي سهارو بہ ٻڻجي سگهو ٿا. رهي اؤلاد جي سُک ماڻڻ جي ڳالهہ تہ اُن لاءِ اسانجي سنسٿا توهان کي اَناٿ آشرم مان ٻار گود کڻڻ ۾ ڀرپور مدد ڪندي. اهڙي نموني توهان گود ڪنيل اولاد پالي پچ بہ ڪنيندا ۽ اولاد جون سِڪوُن بہ لاهيندا. گڏوگڏ ڪنڌ لڪائي، اَپراڌ ٻوڌ ڍوئي ۽ پاڻ کي هيٺو سمجهي، سماج کان لِڪڻ لِڪائڻ جي ذلت کان بہ مڪتي پائيندا.''

اِها تقرير ٻڌي سمورو هال تاڙين جي وَسڪارن سان گونجڻ لڳو. ڪا مهل اُهي تاڙيون وڄنديون رهيون. نيوُز چئنل وارا، پريس فوٽوگرافر منوهر ۽ سُڄاتا، ٻنهي کي وَرائي ويا.

منوهر ۽ سُڄاتا جو مِشن ۽ ڪانسيپٽ سيني کي پوري طرح سمجهہ ۾ اَچڻ کان پوءِ AIDS جي ڇوڪرن-ڇوڪرين ۾ هڪ علحدو اُمنگ ۽ جوش ڀرجي ويو.

X X X X X

اوچتو هڪ پترڪار هال مان ٻاهر ايندي منوهر کان هڪ شخصي سوال پڇيو- ''توهان خود ٻئي زال مڙس HIV+ آهيو ۽ شايد ڪجهہ وقت جا مهمان پڻ، توهان کي اِهو اَحساس رکي رکي ٿيندو بہ هوندو، اهڙي صورت ۾....

منوهر هنجي سوال کي اَڌ ۾ ٽِي ڪَٽيندي چيو- ''ڏٺو وڃي تہ چا مان، چا توهان، اَسين سڀ هن دنيا ۾ ڪجهہ وقت لاءِ مهمان ئِي تہ آهيون! توهان ۾ ۽ مون ۾ رڳو ايترو ئِي فرق آهي تہ مونکي منهنجي Date جي خبر آهي ۽ توهانجي اَجا نڪتي ناهي!''

پترڪار منوهر جو جواب ٻڌي حيرت ۾ ڀرجي ويو. منوهر اِن کي وڌيڪ خلاصو ڪندي چيو- ''جيڪي HIV+ ناهن، پلي هوُ اَسان HIV+ کان وڌيڪ بہ ڪٽي جيئنِ پر اُنهن جي مقصد هيڻ لنبي زندگي، جيڪا اُنهن کان اَلائي ڪهڙا گناهہ ڪرائي، اُنهن کي داغدار

منوهر ڪيس پاڪر ۾ پري، نرڙ کي چُمي، فخر سان چيو- ”سچوُ! مونکي وشواس آهي ته هاڻ اسانجي منزل پري نه آهي.“

ٻنهي اِن سهاڳ رات کي پنهنجي اَٽل نشچي سان اِتهاسڪ بڻائي ڇڏيو. آخر ٻنهي لاءِ اِهو فيصلو، زندگيءَ جو سڀ کان اَهم فيصلو هو!

منوهر، پنهنجي جيوَن سنگني سُجاتا سان گڏ نيڪ اِرادو ۽ پختي قدمن سان پنهنجي منزل ڏانهن ڌيري ڌيري اڳتي وڌي رهيو هو. هُن هڪ مقرر ڏينهن تي شهر جي هڪ وڏي شادي هال ۾ +HIV ڇوڪرن-ڇوڪرين جو ’پريچيه سميلن‘ ڪُرايو. شهر جا مُدبر، پترڪار، فوٽوگرافر هن حيرت پرئي اِتهاسڪ پريچيه سميلن ۾ اَچِي سهڙيا. منوهر پنهنجي بِنداس جذبي سان جوشيلي آواز ۾ تقرير ڪندي چيو- ”دوستون! اَڄ AIDS اَسانجي لاءِ هڪ وڏو چئلينج آهي. اَڄ تائين جن پنهنجي بيماريءَ کي لڪائي، شادي ڪري، جيڪا سنتان پيدا ڪئي، ظاهر آهي اُها به AIDS ڪٽي ڌرتيءَ تي آئي. اِن سبب ملڪ جي خاص حصن ۾ اِها بيماري مهاماريءَ جو روپ ڌاري، پنهنجي سامهون بيٺي آهي. پر جيڪو هيل تائين ٿِي گذريو، اُن کان اسانکي سبق سِکڻو آهي. اَسانجِي سنستا- ’اَنوُپم AIDS مئريج بيوُرو‘ جهڙي سنستائن جِي ملڪ جي ڪُنڊ ڪڙڇ ۾ سخت ضرورت آهي. جي توهان چاهيون ٿا ته اِها مهاماري اَڳتي سِر نه ڪڍي ۽ توهان سڀ بنا ڪنهن اَپراڌ-ٻوڌ جي نااُميدي ۽ گُمناميءَ پري زندگِي جيئڻ جي مجبوريءَ کان مُڪت ٿِي، پنهنجو وواهڪ جيوَن جيئُون ته اِنجو هڪ ئِي رستو آهي- جنم ڪُنڊلِي ملائڻ بدران +HIV جي ليوَل جي لئباريٽريءَ ۾ جانچ ڪرائي، اُن موجب ئِي ڇوڪرن-ڇوڪرين کي جيوَن ساٿيءَ جي روپ ۾ جوڙڻ. اِن ۾ توهانکي رڳِي هڪ قرباني ڏيڻِي پوندي- ۽ اُها آهي اولاد پيدا ڪرڻ جي خواهش کان ڪنارو ڪرڻ. بس، جئن ٻنهِي جي سنگ سان هيل تائين پيدا ٿيل +HIV نسُل تي اِتي ئي روڪ لڳِي سگهي. دوستون! هونئن به شادي رڳو سنتان پيدا ڪرڻ لاءِ ئي ضروري ناهي... زندگِيءَ

سُڏڪن ڀريا سُوال

مدر ٽيريسا ناري نڪيتن ۾ جيئن ئي اِها خبر پهتي تہ نيها
ي پٽ جائو آهي، چوڌاري خوشيءَ جي لهر ڦهلجي وئي. پر سيني
ن وڌيڪ خوشيءَ ۾ ٻرجي وئي نيها جي سچي ساهيڙي ۽ همدرد-
يل، جيڪا ناري نڪيتن ۾ نيها سان گڏ رهندي هئي. ناري نڪيتن
۽ هيءَ خوشي ڪا رواجي خوشي ڪين هئي. هن خوشيءَ ۾ سمايل هو
ڪر جو هڪ علحدو اَحساس. جيڪو لاثاني هو!

.... ۽ اِهو اَحساس هو بلاتڪار جي باوجود نيها دوارا گرڀ ۾
ڄندڙ پاپ کي ڪيرائڻ بدران پنهنجي سرير جو، رت مانس جو حصو
مجهي جنم ڏيڻ جو اَٽل فيصلو! جيتوڻيڪ هوءَ بالغ هئي، گرڀ پات
و هنکي قانوني حق هو. پر ماءُ ۽ گهر وارن جي لک سمجهائڻ کان
۽ بہ هوءَ آخر تائين اَڏول رهي.

X X X X X

نيها جي لاءِ اُها رات هڪ اَڻ وسندڙ ڪاري رات مثل هئي. اُن
ينهن هوءَ پاڙي وارين ساهيڙين سان گڏ ڇهين کان نوين واري شو ۾
اليمار ٽاڪيز ۾ ”لگان“ ڏسڻ وئي هئي. جو تہ ٽاڪيز گهر کان ڪو
اص پري ڪونہ هئي، اِن لاءِ سيني ساهيڙين واپسيءَ ۾ پنڌ اَچڻ جو
يصلو ڪيو. اُن ڏينهن نيها جي اِسٽريٽ لائيٽ ڪجهہ ڏينهن کان
راب هئڻ سبب بند هئي ۽ گهٽيءَ ۾ اوندهہ ڇانيل هئي. حالانڪ گهر
ي پڌرن جون بتيون ٻريل هئڻ سبب اُنهن جي روشني گهٽيءَ ۾
لجي رهي هئي، پر اُها ڪافي نہ هئي.

.... ۽ نيها جڏهن ئي ساهيڙين کان موڪلائي پنهنجي گهٽيءَ ۾
ڙي، هن کي اَڪيلو ڏسي نامعلوم ڪٿان ٽن وحشي اِنسانن هنکي
وچي ورتو. سُنسان گهٽي، ٽي. ويءَ تي هلندڙ رات جي پروگرامن ۽
ڪن جو لُطف ماڻيندڙ گهٽيءَ جي باشندن کي خبر ئي ڪانہ پيئي
، هنن جي پاڙي جي هڪ معصوم ڪنواري نياڻي ڪِن بلاتڪارين

ٻڌائي سگھي ٿي. اَلبت اُنھن جي پيٽ ۾ اسانجي HIV+ واري جماعت هاڻي گھٽ ۽ گھٽ لڪ چوريءَ شادي ڪري مهامارِي ڦھلائڻ بدران اَسانجي سنسٿا ذريعي هڪ رچناتمڪ ۽ ڪلياڻڪاري راهه تي هلڻ لاءِ آماده ٿي آهي. هُنن ۾ اَپراڌ-ڀوڄ، هيڻتا ۽ ذلت ڀري زندگي جيئڻ بدران ٻِنداس ڪنڌ مٿي ڪٽي سُرڪشت وواهڪ جيوَن جيئڻ جي راهه تہ ڏيکاري ٿي، گڏوگڏ HIV+ سنتان واري نسُل پيدا ڪرڻ بدران اَنات ٻارن کي گود ڪٽي پُڇ جو سُک بہ ماڻي ٿي ۽ اولاد جون سِکون بہ لاهي ٿي. هاڻي توهان خود ٻڌايو، اِها ننڍي پر مقصد ڀري زندگي بهتر آهي يا توهان جي تتاڪتت لنبي زندگي؟''

پترڪار کي اِنجو ڪو جواب ئي نٿي سُجھيو. هنکي چپ ڏسي منوهر پنهنجو ويچار اَڃا وائکو ڪندي چيو- شريمان، جي HIV+ اِنسان اوُچي پروٽين وارو کاڌو نيم سان کائين، AIDS جون دوائون نيمائتي وٺندا اچن ۽ سُرڪشت وِواهڪ سنبنڌ قائم ڪن تہ HIV+ هوندي بہ هوُ پنهنجي زندگيءَ جا ڏينهن وڌائي سگهن ٿا. اَسانجي سنسٿا اَڳتي هلي اِن ڏس ۾ بہ ڀرپور ڪوشش ڪندي.

ٻئي ڏينهن T.V. جي مختلف چئنلن تي ۽ ملڪ جي مشهور روزاني اَخبارن ۾ منوهر ۽ سُڄاتا جا فوٽا ۽ اِنٽرويوُ شدمد سان ظاهر ڪيا ويا، جنهن کي ڏسي HIV+ جي جماعت فخر ۽ خوشيءَ سان ڀرجي ويئي. سيني منوهر ۽ سُڄاتا کي واڌاين سان وَرائي ڇڏيو. هنن جي نا اُميد ۽ هيڻتا ڀري زندگي منوهر ۽ سُڄاتا جي بي نظير روشنيءَ سان روشن جو ٿي ويئي هئي!

هيانءُ ڏاريندڙ دانهُن ۽ ڪوڪُن جڻ سموري ڪائنات کي ئي ڏڪائي ڇڏيو....

اُن رات گهر جي ڪنهن به ڀاتيءَ به پل به اک نه ٻوٽي. هن اوجاڳي ۾ لڪل خطرناڪ درشيه- ماءُ، ڏيءُ ۽ گهر جي ٻين ڀاتين کي وَر وَر وَرائي ٿي ويا. اَلائي هاڻي ڇا ٿيندو؟ ماڻهو ڇا چوندا؟ ڪير منهنجي ڌيءُ جي ٻانهن وٺڻ لاءِ اَڳيان ايندو؟ او سائين! منهنجا مالڪ! شل مهر ڪر، پت رکجانءِ.... هاڻي تو تي ئي ننگ آهي! هي ورلاپ ٻڌي نيها جو جڻ هيانءُ ٿي ڦاٽو.

وقت وڏي وِٿ آهي.... اونهي ۾ اونها زخم وقت جي مرهم سان پرجي ويندا آهن. هن واقعي کي هڪ حادثو سمجهي ڀُلائڻ کان سواءِ ٻيو ڪو چارو به ڪٿي هو؟ حالانڪ اِهو ايترو سَهنجو نه هو، سَولو نه هو. سيني گهر وارن ملي اِهو فيصلو ڪيو ته اِن حادثي جو ذڪر ڪير به ڪنهن سان نه ڪندو. پر شايد بدنصيب نيها ۽ هنجي وڏوا ماءُ لاءِ اِهو سڀ مُمڪن نه هو. وقت جو قهر اَجا رُڪيو ڪين هو. اِن حادثي کي اَجا اَڍائي مهنا مَس ٿيا هوندا، جو هڪ ڏينهن صبوح جو اُٿندي ئي نيها کي رکي رکي اُلٽين اَچي وَرايو. ماڻس اَڻ لکي ڊپ سبب ڏکي ويئي. تپاس ڪرائڻ تي هنجو شڪ صحيح نڪتو. نيها ڏينهن سان آهي.... اِها خبر اَلائي ڪئن پاڙي ۾ ظاهر ٿِي ويئي. پوءِ ته جڻ هاهاڪار مَچي ويو. هڪ ڏينهن رات جو ماڻس نيها کي جڻ پنهنجو ڪنور فيصلو ٻڌايو- ”توکي اِهو ٻار ڪيرائڻو ئي پوندو! هونئن به اَلائي ڪنهن وَحشيءَ جو پاپ آهي.... ڊوئڻ مان ڪو سار نڪرڻ وارو ڪونهي. پاڻ سڄي عمر لاءِ سِر تي پيا نِڪر پَچندا.“ پر نيها کا ٻيءَ ئي مٽيءَ جي ٺهيل هئي. هنجي تعليم، هنجي رت ۾ سمايل سنسڪار علحدا ئي هئا. هوءَ حقيقت ۾ سچي اِنصاف پرست هئي. هنجي ذهن جي هڪ ڪنڊ ۾ اُهو جملو سدائين پيو گونجندو هو ته ”ڀرونڻ-هتيا پاپ آهي.“

جي وَر چڙهيِ رهيِ آهي. هنن وحشيِ درندن نيها جو مُنهن بند ڪري، رومال سنگهائي، ڪار ۾ کڻي سٽيائونس ۽ پوءِ تنهيِ وحشيِ درندن هنسڪ ڪام واسنا جي جذبي هيٺ هُن معصوم اَبلا جو واري واري سان سَت لُٽيو ۽ هڪ سُنسان جاءِ تي هن کي هنجي حال تي ڇڏي، وٺي ڪار ۾ ڀڳا. زندگيءَ جو هئڙو وحشاڻو حشر بہ ٿيِ سگهي ٿو، هن سپني ۾ بہ ڪين سوچيو هو. حالانڪ بلاتڪار جا دل دهلائيندڙ واقعا هن ڪيترين ئيِ فلمن ۾ ڏٺا هئا ۽ اُن دؤران هنجيِ دل دهلجيِ بہ ويندي هئيِ. من ۾ اهڙا بہ اُڌما جاڳندا هئس تہ جيڪر هنن وحشيِ درندن کي گوليِ هڻيِ خون ڪري ڇڏجي، پر پوءِ جڏهن فلم ڏسيِ ٻاهر ايندي هئيِ، اُهو جوش ۽ بهادريءَ جو جذبو نامعلوم ڪيڏانهن گُم ٿيِ ويندو هو.

پر اُن رات جڏهن هوءَ خود سچ پچ ۾ بلاتڪارين جي وَر چڙهيِ، تڏهن معموليِ وروڌ ڪرڻ کان پوءِ هوءَ ڪجهہ بہ ڪين ڪري سگهيِ. زندگيءَ ۾ هن کي اَسهايہ ۽ اَبلا هئڻ جو شدت سان پهريون ڀيرو اَحساس ٿيو هو. من جي سطح تي هوءَ جيتريِ مضبوط هئيِ، ديهہ جي سطح تي هوءَ ڪيڏيِ نہ ڪمزور آهي. اِن جو اَحساس هن کي اُن ڏينهن ئيِ ٿيو هو.

هڪ اِستريءَ لاءِ عصمت ئيِ وڏي ۾ وڏيِ پونجيِ هونديِ آهي- اِهو سنسڪار هن کي پنهنجيِ پرورش مان مليو هو، پنهنجي پريوار مان مليو هو. اِهو اَپراڌ ٿيڻ کان پوءِ، هوءَ بدحواس ڏيري ڏيري قدم کڻنديِ اَچيِ گهر پهتي. جيجل ماءُ جڏهن ئيِ در کوليو، نيها کي ڏسيِ ڇاڪر پائي اَچيِ رُئڻ ۾ ڇُٽڪيِ. اُن وقت رات جا ساڍا ٻارهن ٿيا هئا. ماءُ ۽ گهر وارن جا هٿيِ جهان ئيِ جڻ هليا ويا هئا. رنڌڻي ۾ رَڌل ديگڙا اِئين جو اِئين پيا هئا. ڪنهنجي بہ مُک ۾ اَن جو هڪ داڻو تڪ ڪونہ ويو هو. نيها جڏهن ئيِ سُڏڪن ڀريل آواز ۾ چيو- ''اَمان! مان لُٽجيِ ويس، برباد ٿيِ ويس.'' سڄي گهر ۾ جڻ راڪاس گهمي ويو. جڻ ڪا مؤتمار وِڄ هنجي گهر جي مٿان نہ پر هنن سينيِ جي دلين تي اَچيِ ڪريِ!

نيها جي ساهيڙيءَ شيل اِهو مارمڪ درشيہ ڏسي نيها تي ڏاڍو فخر ڪندي هئي. X X X X X

اِسپتال کان ڊسچارج ٿي نيها جڏهن ٿي ناري نڪيتن پهتي تہ آرتي ديويءَ پاڪر ۾ پيري، نرڙ کي چُمي ڏيئي آسيس ڪئي- ”جُڳ جُڳ جيئين، سدائين خوشيون ماڻين.“ پوءِ سندن نوَجات پُٽڙي کي ڇاتيءَ سان لاءِ چُمين جي وَرڪا ڪرڻ لڳي ۽ آسيس ڪندي چيائين- شال جڳ ۾ پنهنجو نالو روشن ڪرين ۽ پنهنجي جيجل ماءُ جو ڳاٽ اونچو رکين!“

پاسي ۾ بيٺل شيل نيها سان پاڪر پائي گڏي تہ اَکين مان خوشيءَ جا ڳوڙها وَهڻ لڳس. نيها اُنهيءَ وقت نيزاريءَ پريل نوع ۾ شيل کي چيو- ”پيڻ، منهنجي اَمڙ کي فون ڪري گُهراءِ تہ اَچي ٻچڙي جو منهن ڏسي وڃي ۽ اَسان ٻنهي کي گهر وٺي وڃي.

اِهو ٻڌي شيل ٿورو مايوس ضرور ٿي تہ هڪ نيڪ ۽ پاڪ دل ساهيڙيءَ کان ڪيس جُدا ٿيڻو پوندو. پر ٻئي طرف اِها تسلي ٿي ٿيس تہ نيها جو اَصلي گهر تہ اُهوئي آهي، جتي هنجي ماءُ رهندي آهي ۽ شهر ۾ ئي تہ آهي، جڏهن بہ دل ٿي تہ پاڻ ۾ گڏجي سگهون ٿا.

خبر پوڻ تي سندس ماءُ پنهنجي ڌيءُ نيها سان گڏجڻ ناري نڪيتن آئي ضرور، پر گهر وارن ۽ سماج جي ڊپ هنجي ذهن تي ايترو تہ اونهو اَثر ڪيو هو، جو ڌيءُ سان هميشهہ وانگر نڪي پاڪر پائي گڏي ۽ نہ ئي ڌوهٽي جو مُنهن ئي ڏٺائين. گود ۾ کڻڻ تہ پري جي ڳالهہ هئي، نہ تہ پُٽن لاءِ هرڪو سِڪندو آهي، ٻاسون ٻاسيندو آهي، ۽ ويندي خوشيون ملهايون ونديون آهن.

ماءُ جي بي رُخي ڏسي نيها ڏڪي ويئي ۽ اَکڙيون آليون ٿي ويس. نيها پريل گلي سان ايڏو تہ نيزاريءَ سان چيو- ”اَمان، مونکي گهر وٺي هل، هاڻي مونکي هن اَناٿ آشرم ۾ ناهي رهڻو.“ ڏسڻ ٻڌڻ وارن جون اَکيون پرجي آيون. بار بار هٿ پڪڙي نيها پنهنجي ماءُ

بلاتڪار کان پوءِ سِگهو ئِي هن کي اِن ڳالهہ جو شدت سان اَحساس ٿِي ويو هو تہ هنجيِ ڪُک ۾ ڪو وحشيِ اِنسانن جو ٻج ڏيري ڏيري اُسريِ رهيو آهي.

هن ماءُ کي صاف صاف کولي چيو- اَمان! ڀلي اِهو ٻار سماج ۽ تنهنجيِ نگاهہ ۾ ناجائز آهي، پر هيءُ بہ هڪ اِنسان آهي. اِن ۾ بہ ساهہ آهي. اَڄ هيِ منهنجيِ ديهہ جو هڪ حصو آهي، منهنجي ئيِ رت ماس جو هڪ ٽُڪر آهي. اِن کي 'پاپ' چئيِ ختم ڪرڻ مهاپاپ آهي.

ماڻس جا تہ- اِهو ٻڌِي ناڪ ئي لڳِي ويا. جڏهن هن ڏيِءُ نيها کي پنهنجي فيصلي تي اَٽل ڏٺو تہ لوڪ لڄ جي ڊپ کان اهڙو رستو اَختيار ڪيو، جنهن ۾ سيني جي رهجِي اچي. پنهنجي رِتا موجب ماڻس نيها کي چپ چاپ شهر کان ڇڳو پري نهيل ''مَدر تيريسا نارِي نڪيتن'' ۾ ڇڏي آئِي. موٽندي مهل هن ڏيِءُ کي آٽت ڏيندي چيو- ''ٻچڙيِ، سُک سان تنهنجيِ ڊليوَريِ ٿِي وڃي، پوءِ مان توکي گهر وٺي ايندس. هونئن بہ مون غريب وٽ تنهنجي علاج ۽ وِيم لاءِ ايترو پئسو ڪٿي آهي؟.... گهر جو خرچ ڪئن پيو هلي، توکان ڳجهو بہ ڪونهي.''

لُڙڪن پريل اَکڙين سان نيها ماءُ کان موڪلايو. نارِي نڪيتن کي هلائيندڙ آرتِي ديويِ ڏاڍِي نيڪ ۽ اِنسانيت پرست اِستريِ هئِي. هوءَ نيها جي درد سنڪلپ کان ڏاڍِي متاثر هئِي، اِن لاءِ هنکي تُرت ئِي نارِي نڪيتن ۾ پناهہ ڏني.

X X X X X

زماني جي ڏنين ۽ طعنن جي پرواهہ نہ ڪري نيها ڪُک ۾ پَلجندڙ ماس پنڊ کي جگر جو ٽُڪر سمجهي پالڻ شروع ڪيو. هوءَ روز جگر جي اِن ٽُڪر جي ڌڙڪنن کي ٻڌندي ئِي بود ۾ پرجي ويندِي هئِي. هوءَ من ئِي من ۾ جڻ اُن ماس پنڊ سان ڳالهيون ڪندِي هئِي- ''منهنجا ٻچڙا، چاهي ڪجهہ بہ ٿِي وڃي، توکي جيئڻو آهي. توکي منهنجيِ طاقت ملندِي، جئن مونکي منهنجي ماءُ کان ملِي. جيئڻ لاءِ بس هڪ سهارو ئِي تہ کپي. ماءُ ئِي تہ ٻار جو وڏو ۾ وڏو سهارو هوندو آهي!

ملي؟ هڪ اِستري عصمت لُٽائي، پرش جي پاپ کي نوَ مهنا ڍهه ڏينهن پنهنجي ڪُک ۾ سانڍي، هنکي جنم ڏيئي، سموري ممتا ۽ پيار تي گهوري؛ پوءِ به هوءَ اَڇوت آهي، ڇو؟ هوءَ ئي تازندگي سماج جي ذلت ۽ نفرت جو باعث ڇو بڻجي؟ ڪرمن جو ڦل پاپيءَ کي يوڳڻو ئي پوندو آهي ته ڇا مان پاپڻ آهيان، جنهن هڪ بلاتڪاريءَ جي ٻج کي اُسرڻ ڏنو.... اُن کي رت سَت ڏيئي جنم ڏنو؟ آخر هنکي ڪهڙي پاپ جي سزا ملي رهي آهي؟

نيها کي ڏيئي هينئان اوندهه نظر اَچڻ لڳي. اِستري ئي اِستريءَ جي دشمن بڻجي بيٺي آهي. اَڄ سندس ماءُ به هن کي سماج جي ڇٽي تي لڳي ڪُلٽا ۽ پرشٽ چوَڻ! هن معصوم ٻار جو ڪهڙو ڏوهه، جو اُن کي به پاپ ڇٽي هنجو ترسڪار ڪيو، هن کان مُنهن موڙيو. آخر هوءَ هڪ معصوم بي گناهه ٻار کي وٺي ڪيڏانهن وڃي- پنهنجي گهر هوندي؟ آخر هيڏا ڪشٽ ڪشالا سهي هن هڪ بلاتڪاريءَ جي ٻج کي ڪو آڪار ڏنو.... هن کي جنم ڏنو.... ڪهڙو گناهه ڪيائين؟ آخر ڇو سماج سمورا نِڪرَ اَڄ منهنجي مٿان پيچي رهيو آهي.... او ويندي منهنجي ماءُ به!

سوچيندي سوچيندي هنکي نفرت اَچي ويئي. هيل تائين جنهن اَمڙ جي آس جي سهاري هوءَ جيئي رهي هئي، اَڄ اُها آس ٽُٽندي ڏسي اَندر ۾ هاهاڪار مَچڻ لڳو. جيڪا بلاتڪار کان پوءِ ذهني ۽ شريري طور ڪونه ٽُٽي هئي. اَڄ اُها ٻنهي سطحن تي ٽُٽي اِئين ڦٿڪي رهي هئي، جڻ پاڻيءَ مان زوريءَ ڇڪي ٻاهر ڪڍي پَٽ تي اُڇلائڻ وقت مڇي ڦٿڪندي آهي.

چوطرف نراشا، اَپمان ۽ ذلت جا زهريلا ڏُڪ پي ايترو ته اَچي هوءَ خفي ٿي، جو من ئي من ۾ هڪ اَٽل فيصلو ڪري ورتائين. هوءَ چپ چاپ ٻُوڙي قدمن سان اَڳتي وڌي پنهنجي ڪمري ۾ هلي آئي. پنهنجي پٽ کي چائنٽ جي ٻاهر سُمهاري، ڪمري اَندر گهڙي ۽ اَندران در بند ڪري ڇڏيائين.

ڪي سُڏڪا پريندي ڇا تہ مِنٿون ڪيون، پر ماڻس ٽَس کان مَس نہ ٿي ۽ زوريءَ ڌيءُ کان هٿ ڇڏائي آفيس ڏانهن وڌي. اُتي وينل آرتيءِ ديويءَ کي رڙ ڪندي فيصلو ٻڌايو- ''هيءَ ڇوڪري ڪلنڪني آهي ۽ هيءُ ٻالڪ هڪ پاپ آهي. هنن کي واپس پنهنجي گهر وٺي سماج کي ڪئن مُنهن ڏيکاريندا سين.''

جيجل ماءُ جا زهريلا ويڻ ٻڌِي نيها تہ ڄڻ عرش تان ڪِري اَچي پَٽ تي پيئي. هنکي وشواس ئي نٿي آيو تہ سندس ماءُ بہ ايترو ڪِري سگهي ٿي. اؤلاد لاءِ دنيا رُسي تہ رُسي، پر ماءُ ڪين رُسندي آهي. ڇو تہ هوءَ ئي تہ هڪ ماتر سهارو هوندي آهي. ڇو ڇوندا آهن- آنڌي جي جَر ڏاڍِي تکي هوندي آهي، رت وري بہ دانگيءَ تي ئي وَرندو آهي. ماءُ ۽ اؤلاد جي ناتي-نال جي پرمپرا آد ڄڳاد کان هلندي آئي آهي. پر اَڄ اُها جڙيل، اُها ٻنڌيل پرمپرا اَڄ هڪ ماءُ پنهنجي هٿن سان ڪَٽي ڇڏي. نيها کي وشواس ئي نہ اَچي! ڇا ڇئي ڪري مونکي ناري نکيتن ۾ ڇڏي ويئي هئي. پُلجي وئي پنهنجو وچن! رکي رکي نيها جي هردي کي ماءُ جا اَکر زهريلي تير وانگر وَڍِ وجهڻ لڳا. هوءَ هڪ ڪِريل اِستري، ڪلنڪني اِستري آهي. هوءَ پرشٽ آهي، هڪ پاپ آهي. سماج لاءِ هن جا دروازا هاڻ بند آهن، هميشه هميشه لاءِ بند آهن. پلا هڪ پاپڻ کي سماج ڪيئن پناهہ ڏئي؟

هوءَ سوچڻ لڳي- مون سان بلاتڪار ٿيو. بلاتڪار هڪ پرش ڪيو، اُهو بہ هنسڪ ڪام واسنا جي جذبي هيٺ. پر سماج پاپي هُن کي نہ، مونکي ٿي سڏي. سزا پرش کي نہ، مونکي ٿي ملي. سماج دروازا هن جي لاءِ نہ، منهنجي لاءِ ٿي بند ڪري، ڇو؟ اِئين ڇو؟ اِستريءَ کي ئي پاپ ڇو ٿو لڳي؟ هنکي ئي گهر ڇو ٿو ڇڏڻو پوي؟ ڇو- اُها سيتا هجي يا شڪنتلا.... هنکي پنهنجو گهر ڇڏي ڪنهن پرائي آشرم ۾ رهڻ لاءِ مجبور ٿو ٿيڻو پوي. اَڄ جن جن مون سان بلاتڪار ڪيو، اُهي ڇُٽا، آزاد ٿي پيا گُهمن. ڇو نٿي اُنهن جي خلاف جاچ ٿئي؟ اُنهن کي سزا

نِشاني تي نيباءُ

نِشا جڏهن ٿي ماڻُ مان ٻاهر نڪتي ته پنيان ڪنهن سڏ ڪيس. ڏٺائين پاڙي واري شانتي هئي. ڪا خاص ڳالهه ٻڌائڻ جو واسطو ڏيئي هوءَ نِشا کي پاڻ سان گڏ پاسي واري ريسٽورينٽ ۾ وٺي آئي. چانهه جي چُسڪي ڀريندي نهايت پنهنجائپ ۽ همدردانه نوع ۾ چيو- نِشا، توکي ڏسي منهنجي دل اَڪثر چوندي هئي ته تون هڪ خانداني گهر جي سني، سُلڇڻي، سنسڪارن ۽ سباجهي ڌيءُ آهين. پر سچ چوان ته- سڄي پاڙي کي خبر آهي ته تنهنجو مڙس راڪيش لَمپٽ اَٿئي.... تنهنجي سامهون واري بنگلي ۾ رهندڙ دامني، جيڪا شادي شده آهي، اُنجي پيار ۾ پاڳل ٿيو. ايترو ئي نه، هوءُ ٻئي پنهنجي پنهنجي دامپتيه رشتي سان دوکو ڪري رهيا آهن!

نِشا دپ ۽ حيرت ڀري نگاهه سان نهاريندي پڇيو- اُهو ڪئن؟ تنهن تان شانتيءَ خلاصو ڪندي ٻڌايو- دامنيءَ جو مڙس ڪروڙن جو آسامي آهي، اَڳيان پنيان في الحال ڪير به ناهي. اِن لاءِ هوءَ پنهنجي مڙس سان جڙيل آهي، پر اَندرين حقيقت اِها آهي ته هوءَ سموري تنهنجي مڙس جي آهي؛ اُن سان جڙتوُ آهي. ايترو ئي نه، ٻنهي طئه ڪري ڇڏيو آهي ته جيسين اِهو ڪروڙن جو آسامي جيئرو آهي، تيسين چپ رهي، اِهو لِڪ چپ وارو رشتو جڏهن هلي پيو، تڏهن هلائڻ ۾ سمجهداري آهي ۽ ٻنهي جو فائدو به.... توکي اِها به خبر هئڻ گهرجي ته راڪيش في الحال توسان شادي ٿي اِنڪري ڪئي، جو هنجي ماءُ پيءُ جي- ”شادي ڪر.... شادي ڪر“ واري روز روز جي ٽِڻ ٽِڻ بند ڪانه پئي ٿي، گڏوگڏ پاڙي وارن جا مُنهن بند ڪونه پئي ٿيا.... پر نِشا جي سچ پڇين ته تو سباجهڙي ڌيءُ کي هئن جار ۾ قاتل ڏسي مونکان رهيو نه ٿيو. سوچيم، توکي آگاهه ڪريان! شل سائين سڀ جي ڀلي ڪري!

اِهو مارمڪ درشيہ ڏسي ناري نڪيتن ڪي هلائيندڙ ۽ ٻين اِسترين جا من پڇي ويا.

برابر پندرهن ڏينهن هوءَ پنهنجي ڪمري ۾ پوُريل رهي. نہ اَن جو هڪ داڻو مُک ۾ وڌائين ۽ نہ ئي پاڻيءَ جي هڪ بوند. پنهنجي جگر جي ٽُڪر کي بہ پاڻ کان پري ڪري ڇڏيو. ڇا فائدو هنجي ماءُ سڏائڻ جو؟ جڏهن منهنجي ماءُ ئي منهنجو سهارو نہ رهي تہ مان هنجو سهارو رهي ڇا ڪري سگهندس؟ ڇا مونکي يا هن ٻارڙي کي سماج عزت سان جيئڻ ڏيندو؟ اهڙيءَ زندگيءَ مٿان ٿُڪان ٿي!

۽ سچ پچ پندرهين ڏينهن نيها هن ذلت ڀري دنيا کان هميشه هميشہ لاءِ وداع ٿي ويئي. هن جو لاش ڀَٽ تي ئي پيو هو، جنهن تي اُهائي ماءُ هاٿي چنبڙي، زار زار روئي رهي هئي، پنهنجي رَوش تي بيحد پڇتائي رهي هئي.

نردوش نيها اَڄ هن دنيا ۾ نہ رهي، پر ڪائنات ۾ اَڄ بہ سُڏڪن ڀريا ڪيئي سُوال هوءَ ڇڏي ويئي آهي، جيڪي مرڻ کان اَڳ هنجي سيني ۾ سمايل هئا، پر اُنجا جواب اَڄ بہ ندارد آهن!

ڪم-هاج لاهي نِشا جڏهن ئي بيڊروم ۾ گهڙي ته ڏٺائين راڪيش پنهنجي لئپ-ٽاپ تي اِسڪائپ ذريعي ڪنهن سان نهايت فاحش نموني ڳالهائي رهيو هو. نِشا جي جڏهن ئي اِسڪرين تي نظر پيئي ته هوءَ اَواڪ رهجي ويئي- اَڙي، هيءَ ته دامني آهي، جنهن سان راڪيش جا ناجائز رشتا عام آشڪار هئا!

هن راڪيش کي هٿ جي اِشاري سان روڪيندي بيباڪ نوع ۾ پڇيو- راڪيش، سچ ٻڌاءِ.... دامنيءَ نِسبت مون جيڪي ڪجهه ٻُڌو آهي، ڇا اُهو سورهن آنا سچ آهي؟ راڪيش نِشا جي بيباڪ لهجي سبب ڏمرجي پيو. هنجي سوال کي هڪ نرلج ۽ ڪميٽائپ پيري ڪِل ۾ اُڏائيندي چيو- چڱو ٿيو، توکي دامني ۽ منهنجي رشتي جي جلد خبر پئجي ويئي.... هاڻي تون ڪَن کولي ٻڌي ڇڏ، جي توکي هن گهر ۾ رهڻو آهي ته دامني ۽ منهنجي رشتي جي وچ ۾ اَچڻ جي ڀُلي ڀُلائي به جُريت نه ڪندينءَ، نه ته....! هڪ ته لنڊائي، مٿان وري آڪڙائي.... اِها چوٽي چريتارٿ ٿيندي ڏسي نِشا جو سماج شاستريه علم هنجي اَکيان ساکيات اچي راڪيش جي ڪردار جي روپ ۾ بيهي رهيو. هنکي راڪيش اُنهيءَ مردوادي سوچ جو شڪار لڳو، جنهنجو اَهنڪار نرلج بڻجي پنهنجي غلط آچرڻ کي به قبول ڪرڻ کان نه رڳو اِنڪار ڪري رهيو هو، گڏوگڏ پنهنجي سپتپديءَ جي ڏنل وچنن سان آندل زال کي به اَرڌانگنيءَ جو درجو ڏيڻ بدران، هنکي ٻن ڪوڙين جي حيثيت عطا ڪرڻ کان باز نٿي آيو. هوءَ سوچي ٿي- پتنيءَ کي اَڄ به اِهو دويم درجو ڇو مليل آهي؟.... مڙد جي کهڙي مُراد آهي اِنجي پنيان....؟

X X X X X

هُنجا سنسڪار، هُنجا اُصول ۽ جيجل ماءُ جون پيتل سکيائن جون سُتيون هُنکي، هُنجي شخصيت کي ايڏو ته اَڏول بڻائي چڪيون هيون، جو اَنياءَ جي اَڳيان هٿيار اُڇلائي ڇڏڻ هنجي فطرت ۾ ئي نه هو.

سموري سچائي جاڻي هوءَ جڻ آسمان مان ڪِري اَچي پَٽ تي پيئي! ڪي پل تہ جڻ سُن ۾ جڪڙجي ويئي. اَکڙين مان بي ساخته لُڙڪ وَهڻ لڳا، جن مان اَگيات ڊپ ۽ غير سلامتيءَ جا عڪس صاف پسجي رهيا هئا. هن کي لڳو، جڻ هنجي سپنن جو سمورو سنسار لُٽجي ويو آ. ڪجهہ ڏينهن اَڳ ڪُلوُ - مَناليءَ ۾ گهاريل هنيموُن جون خوشنما يادگيريون جڻ ڊوهہ جو روپ ڌاري هن کي ڏنگي رهيون هيون. هنجو سمورو ذهن زخمي تي پيو!

هوءَ سوچڻ لڳي- سندس جيجل ماءُ، ننڍڙي ڀاءُ، سڀني مٽن مائٽن ۽ ساهيڙين کي جڏهن هن پوتر رشتي جي اَصليت خبر پوندي، تڏهن اُنهن تي ڇا گذرندي!

شانتي نِشا کي ڀاڪر ۾ ڀريندي، دلداري ڏني- ڇري آهين ڇا، جو هيئن روئين تي.... همٿ رک، سائين ڀلي ڪندو. مان توڙ تائين توسان گڏ آهيان.... اُٿ، گهر هلون!

ڳوُري قدمن سان هوءَ اُٿي، اَچي پنهنجي گهر پهتي.... پر شانتيءَ جو ٻڌايل ڪوڙو سچ ڦري ڦري هنجي ذهن تي غالب پوندو پئي ويو.... پلنگ تي ليٽي ليٽي هڪ هڪ ڪري سيئي ڀيبتناڪ اُڌما هنجي اَندر ۾ جاڳڻ لڳا. هنجو سمورو وجود هِلي ويو هو. هنکي لڳو- حاصل ڪيل اونچي تعليم، هنجي سيرت، سياڻپ ۽ سباجهائي، سڀ هنجي قسمت اَڳيان جڻ پوريءَ طرح پراست ٿي پيا آهن ۽ هوءَ هڪ بيبس، لاچار، اَبلا بڻجي رهجي ويئي آهي.... X X X X X

پر نِشا در حقيقت هڪ رواجي اِستري ڪانہ هئي. هنجا سنسڪار، تجربن جي ڪُک مان نڪتل اَڪاٿہ سچ- جيڪي سندس ماءُ مان وراثت ۾ مليل هئا. اِنهن سيني هنجي شخصيت کي ڪجهہ اَلڳ نموني گهڙيو هو.... اِهوئي سبب هو، جو اَندر جي نامعلوم تَهن ۾ لڪي ويٺل آتم بل، اُمالڪ نڪري نروار ٿي پيو. هن نشچو ڪيو تہ اَڄ رات جو هوءَ راڪيش سان هڪ ڀڪائيں ڪري ئي رهندي! X X X X X

-''پر آخر تہ مان تنهنجي پتني آهيان نہ.... تو تي اَڄ بہ منهنجو اَڌڪار آهي.''

يڪدم راڪيش ڪمري اَندر گهڙي هٿ ۾ طلاق جي ڊڪري ڪڍي باهر نڪتو ۽ نِشا کي زوريءَ هٿ ۾ پڪڙائي چيو- هاڻي منهنجو توسان ساماجڪ ۽ قانوني طور ڪو واسطو ڪونهي!

نِشا، طلاق جي ڊڪري پڙهي، ڪجهہ پَلن لاءِ اُتي ئي جڙ تي بيهي رهي. هن کي جهٽ سمجهہ ۾ اَچي ويو تہ راڪيش ڪورٽ جي ملازمن سان سانٺ گانٺ ڪري، پئسا کارائي، ڊڪري هٿ ڪئي آهي، سو بہ بنا سندس جي اهڙيءَ ڪنهن ڄاڻ جي!

هنجي رڳن ۾ وَهندڙ خون ٽهڪڻ لڳو.... هيڏو زبردست ڌوهہ. سو بہ ناحق! هن من ئي من ۾ هڪ اَٽل فيصلو ڪري ورتو- چاهي ڪجهہ بہ ٿي وڃي، هوءَ اَنياءُ هرگز برداشت نہ ڪندي.

نِشا هٿ ۾ جهليل طلاق جي ڊڪري راڪيش جي مُنهن تي ڦهڪائي، پنهنجي هنج ۾ ڏيءُ کي سوگهو سنڀالي، بيٺي بيٺي ئي هُن گهر کان ٻاهر هلي آئي.

X X X X X

سِگهو ئي نِشا کي سندس قابليت آهر هڪ سٺي جاب پيڪي شهر ۾ ئي ملي ويئي. چو تہ نِشا راڪيش واري ڪورٽ جي ڊڪريءَ جي تاريخ ذهن تي ياد ڪري ڇڏي هئي، اِن لاءِ جئپور جي فئملي ڪورٽ مان اُنجي نقل ڪڍائڻ ۾ کيس ذرا بہ مشڪلات ڪونہ آئي. اُتان جي ئي ڪورٽ ۾ پريڪٽس ڪندڙ هڪ هونهار وڪيل نيها، جيڪا نهايت ايماندار هئي، تنهن کي پنهنجو وڪيل بڻائي، اُها نقل جي ڪاپي سنڀالي ڏني.

نيها گنڀيرتا سان طلاق جي ڊڪري پڙهڻ کان پوءِ نِشا کي سمجهائيندي چيو- نِشاجي، تنهنجي مڙس راڪيش هڪ رواجي چال هلي تنهنجي جاءِ تي ٻي ڪنهن اِستريءَ کي پنهنجي پتنيءَ طور ڪورٽ ۾ پيش ڪيو ۽ ڪليم ڪيو تہ اِها اِستري سندس زال آهي.

ظاهر طور هوءَ چپ چاپ اَهنڪارِي ۽ لَمپٽ مڙس کي نند ۾ ئي اَلوداع چئي، پنهنجي اَباڻي گهر اَچي نڪتي! X X X X X

بنا ڪنهن اِطلاع، شاديءَ جي ويهين ڏينهن، سو بہ هِئن اَڪيلي آيل ڏسي سندس ماءُ دهلجي ويئي. پر پوءِ نِشا جي واتان سموري حقيقت بڌي ڏيءُ کي دلداري ڏيندي چيو- ٻچڙي، تون ڪٽي بہ غلط ناهين. چڱو ٿيو، تون سڌو هتي هلي آئينءَ. هاڻي ڀلي تہ تنهنجي لمپٽ مس جو مُنهن پِٽ سان لڳيس. X X X X X

چوٽي آهي تہ سنڪٽ ۽ سُور ڪڏهن بہ اَڪيلا نہ ايندا آهن. سو ئي نِشا اَچا نارمل لائيف جيئڻ جي ڪوشش ۾ ئي هئي، جو قدرت جو هڪ ٻيو قهر هن مٿان اَچي ڪڙڪيو. هوءَ گريوَتي آهي.... اِن سچائيءَ جو اَحساس ٿيندي ئي هوءَ ڊانواڊول ٿي پيئي. پر پوءِ ٻنهي ماءُ ڌيءُ اِن ۾ بہ ڪا ڀلائي سمجهي ٻار کي جنم ڏيڻ جو فيصلو ڪري ورتو.

نيڪ نوَن مهنن ڪان پوءِ نِشا کي هڪ ڌيءَ ڄائي. نانيءَ کي اِطلاع ڪرڻ ۽ چنيءَ تي ضرور اَچڻ جي مِنٿن ڪرڻ ڪان پوءِ بہ چنيءَ تي هنن مان ڪو پڪي بہ لڙي ڪين آيو.

هڪ مهيني ڪان پوءِ نِشا دنيا نيتيءَ موجب پنهنجي ڌيءُ جو مُنهن پيءُ کي ڏيکارڻ لاءِ پنهنجي ساهري گهر جئپور اچي نڪتي. هوءَ جئن ئي گهر اَندر گهڙي، سامهون دامنيءَ کي نوَوَرنيءَ جي ويس ۾ ڏسي اَواڪ رهجي ويئي. هنجي ڇهين اِندريءَ جهٽ اَحساس ڪرائي ڇڏيس تہ دامني اَمير مُڙس جي موت ڪان پوءِ هاڻي اَج راڪيش جي پتني آهي.

راڪيش....!!! هنجي منهن مان بيساخته رڙ نڪري ويئي. ڪمري ۾ ويٺل راڪيش نِشا جي رڙ ٻڌي هڪدم ٻاهر نڪري آيو ۽ ٻرڀان ڪان ئي رڙ ڪندي چيو- هاڻي ڇا لاءِ هتي آئي آهين؟ ويئي هجين ها نہ اُتي ماڻهين جي گهر ئي....

تي هو! ڪجهہ لمحن لاءِ ڪيس اَپراڌ ٻوڏ وڪوڙي ويو! نِشا سان سراسر ناانِصافي ٿي هئي! هن من ئي من ۾ فيصلو ڪري ورتو تہ نِشا کي هنجو حق هوءُ ضرور ڏياريندو!

X X X X X

نِشا کي ٻين مهني جي تاريخ ملي. اِن وچ ۾ ڪورٽ طرفان ساڳيءَ تاريخ تي راڪيش کي بہ حاضر رهڻ جو نوٽيس موڪليو ويو، جنهن کي ڏسي هُنجا پيرَ ئي ڀرا ٿي ويا. هنکي سُپني ۾ بہ اُميد ڪونہ هئي تہ نِشا طلاق جي ڊڪريءَ خلاف ڪو قدم کڻي سگهي ٿي.

مقرر تاريخ تي جج پهرين نِشا کي اَڪيلي ۾ هنجو من وٺڻ ۽ سمجهائش لاءِ پنهنجي ڪمري ۾ گهرايو. نهايت پيار ۽ پنهنجائپ واري نوع ۾ هن نِشا کان پڇيو. ”ٻچڙي! ٻڌاءِ تون ڇاٿي چاهين؟“

- ”مونکي ڪميٽي مڙس کان مڪتي کپي.“

- ”ٻچڙي! منهنجي ڇئي سان هڪ دفعو وري ٿڌي دماغ سان سوچ.“

- نہ، جج صاحب! منهنجي مڙس کا گُنجائش ئي ڪانہ ڇڏي آهي، جو هن لاءِ وري هڪ وار سوچيان. جنهن مڙس پنهنجي سڀيءَ ڏيءُ کي قبول نہ ڪيو، اُنجو مُنهن تَڪ نہ ڏٺو، مونکي ڪڏهن پنهنجي اَرڌانگني نہ سمجهيو.... او ويندي منهنجي جيئري، منهنجي جاءِ تي جعلسازي ڪري ٻي اِستريءَ سان شادي ڪري پنهنجي گهر اچي وهاريو.... اُن کان پوءِ اُها ڪهڙي عورت هوندي، جيڪا ههڙي مڙس کي قبول ڪندي! آخر منهنجو بہ تہ ڪو آتم سنمان آهي!

جج نِشا جو درد جواب ٻُڌي ڪرسيءَ تان اُٿي بيٺو. نِشا کي اِشاري سان ٻاهر وڃڻ لاءِ چئي ڪورٽ ۾ پنهنجي سيٽ تي اَچي ويٺو. ڇو تہ ڪيس آرسيءَ وانگر صاف هو، اِن لاءِ هن گهوشڻا ڪئي تہ اَڄ شام جو ئي ڪورٽ بند ٿيڻ کان اَڳ هوءُ پنهنجو فيصلو ٻڌائيندو.

نيڪ شام جو پنجين ٻجي راڪيش ۽ نِشا جي سامهون جج پنهنجو فيصلو پڙهڻ شروع ڪيو، جنهنجو تاتپرج هن ريت هو-

راڪيش جي پَتيِ پاڙهيل هيءَ زال جڄ اَڳيان Mutual Consent يعني آپسي رضامنديءَ سان طلاق قبول ڪئي.... ايترو ئي نہ، هوءَ آتم سنمان جي خاطر گذارو ڀَتو وٺڻ کان پڻ اِنڪار ڪئي ۽ ڊڪريءَ تي تنهنجي طرفان نِشا جي نالي سان دستخط پڻ هن ئي ڪيا آهن. ظاهر آهن تہ اُهي فرضي آهن.

”پر وڪيل صاحبا، هيءَ تہ سراسر نااِنصافي آهي، گهور ظلم آهي.... سراسر ڌاڌائي آهي.... جو تہ اِنجي بنياد ئي ڪوڙ تي بيٺل آهي.

بلاشڪ نِشا، تون سچ ٿي چوين. نيها اَڄا خلاصو ڪندي ٻڌايو تہ طلاق جي لنبي پرڪريا، وقت جي بربادي ۽ ڌرمائوُ ڌڪا کائڻ کان بچڻ لاءِ ڪيترا راڪيش جهڙا نَڳ مڙد- شاديءَ جا ڊپليڪيٽ فوٽو، ويڊنگ ڪارڊ، او ويندي ڊپليڪيٽ مئريج سرٽيفڪيٽ تڪ پيش ڪري پئسي جي زور تي طلاق جي ڊڪري سولائيءَ سان هٿ ڪري وٺندا آهن. سامهون واري پارٽي بہ پاڻ کي مُڪت سمجهي، وڏيڪ جهنجهٽ ۾ پوڻ کان- ”اِنهيءَ ۾ بہ ڪا ڀلائي“ سمجهي، پنهنجي گرهستي نئين سِر وَسائڻ ۾ جُنبي ويندا آهن.... تون هڪ طرح سان اَپواد آهين نِشا! پر مان نٿي چاهيان تہ راڪيش جهڙا لمپٽ مڙس ڇُٽل ڏڳي جيان آزاد گهمندا وتن، موڄ ماڻيندا وتن ۽ مون جهڙي بيڏوهي اِنسان ساماجڪ آرٿڪ ۽ اِخلاقي سطح تي لتيل پٽيل ۽ هارايل ٿي پيڙا ۽ عذاب ڀوڳي!

نيها سمجهي ويئي تہ نِشا جي مُراد ڇا آهي؟ نشا جي طرفان نئين سِر ايڊيوڪيٽ نيها طلاق جي عرضي اُنهيءَ ساڳي ڪورٽ ۾ داخل ڪئي، جتان ڪجهہ وقت اَڳ راڪيش جعلسازيءَ ذريعي طلاق جي ڊڪري حاصل ڪئي هئي.

X X X X X

سُنوائيءَ جي ڏينهن نِشا جي پاران داخل ڪيل عرضي پڙهي جڄ اَواڪ رهجي ويو! طلاق واري اَڳين ڊڪريءَ تي سندس جا ئي دستخط هئا. پنهنجي هٿن سان ڪيل نياءُ ئي هنجي سامهون اَڄ نِشاني

گُم ٿي ويندڙ بادل

نيت تي چئٽ ڪندي رفيق هڪ اَهڙو جُملو ٽائيپ ڪيو، جنهن کي پڙهي مدو هڪ اَهڙي سُپن لوڪ ۾ ڪوهجي ويئي، جيڪو نه رڳو خوبصورت هو، پيارو ۽ نيارو به هو پر رومانچڪ به هو.... هن لکيو هو- ”مدوُ، تون منهنجي زندگيءَ ۾ سيني کان مٿي آهين. جنهنکي مان سيني کان وڌيڪ پيار ڪندو آهيان.... ۽ جنهن کان سواءِ مان نٿو جي سگهان!

اَلائي اِها عبارت مدوءَ ڪيترا دفعا پڙهي هئي.... هنجي رڳ رڳ، هنجي لِنوَ لِنوَ هن پياري عبارت کي پڙهي بيشمار خوشيءَ سان سرابور ٿي پيئي.... آخر مدوءَ جو اِهو پهريون، خوبصورت پيار پريو اَحساس جو هو!

سترهن سالن جي مدوُ ۽ اَٺاويهن سالن جو رفيق سرفنگ ڪندي ڪندي ٻئي هڪ ٻئي جي پيار ۾ ايترو گهرو اُتري ويا، جو ڪيئن ۽ ڪڏهن ديهه جون تمام سرحدون اورانگهجي ويون. ڪين ٻنهي کي ڪا سَمڪ ئي نه رهي! .... ۽ اِها ڳالهه ٻنهي لاءِ عالم آشڪار هئي ته پلي ئي هوُ ٻئي ايڪويهين صديءَ ۾ جيئي رهيا هُئا پر وقت ۽ سماج ٻنهي کي موُر هڪ جيوَن-ساٿيءَ جي روپ ۾ قبول نه ڪندو; اِها ٻنهي کي چڱيءَ طرح خبر هئي....

- ۽ اِن حقيقت جي ڄاڻ پوندي ئي مدوءَ جا ماءُ پيءُ پهرين ته هڪ اَگيات ڊپ ۾ وڪوڙجي ويا. دنيا.... سماج.... برادريءَ وارا ڇا چوندا.... ڪيئن اُنهن اَگيان ڪنڌُ ڪٽي هلي سگهنداسين.... رکي رکي اِنجي ٿيندڙ اَحساس ٻنهي ماءُ پيءُ جي ننڊ کسي ورتي.

”راڪيش ۽ نِشا جي دامپتيہ رشتي جي بنياد ئي ڪوڙ، فريب ۽ دولاب تي بيٺل هئي. اِن لاءِ اُن رشتي کي اڳتي دائم قائم رکڻ جي ذرا بہ گُنجائش نظر نٿي اَچي. اِن لاءِ ٻنهي جي رضامنديءَ سان طلاق جو آرڊر ۽ ڊڪري جاري ٿي ڪئي وڃي. ڇو تہ راڪيش سَرنديءَ وارو آهي، اِن لاءِ اُن اَبهم معصوم ڌيءُ جي گذاري پَٽي لاءِ ڏهہ لک روپيا، اُنجي نالي سان بئنڪ ۾ ايف. ڊِي. ڪرائڻ لاءِ راڪيش کي پابند ڪيو ٿو وڃي. اَڄ کان پوءِ راڪيش ۽ نِشا پوريءَ طرح آزاد آهن. قانوني خواهہ سماجڪ طور هاڻي ڪنهنجو بہ هڪ ٻئي مٿان ڪو اَڌڪار نہ رهندو. ڪورٽ نِشا کي هنجي همٿ لاءِ بہ شاباسي ٿي ڏئي، جنهنجي ڪري هڪ غلط ۽ اَڻپوري فيصلي کي سُڌاري سگهڻ اَڄ ممڪن ٿي سگهيو آهي.“

فيصلو ٻڌي نِشا جا نيڻ فخر ۽ خوشيءَ وچان پرجي آيا.... آخر هنجي حوصلي جي اَڄ جيت جو ٿي هئي!

اَڪيلي؟

نہ نہ، منھنجو هڪ مائٽ آهي، اُن سان وچِي رهيِ آهيان!

اَنيوي مهلا هنجي هراسيل چهري ۽ لڙڪڙائيندڙ زبان مان پروڙي ورتو تہ پڪ ئي پڪ هيءَ ڇوڪري گهران ڀڄي آئي آهي ۽ هڪ اَڻڄاڻ ۽ جوکم ڀري خطرناڪ راهہ ڏانهن وڃڻ لاءِ آماده آهي. هن ڪان رهيو نہ ويو ۽ سڌو سوال پڇيو- سچ ٻڌاءِ، تون گهران ڀڄِي نڪتيِ آهين نہ!

پهرين تہ مڌوءَ صاف اِنڪار ڪيو پر پوءِ اَنيوي مهلا جي پيار ۽ پنهنجائپ ڀرئي وهنوار سبب هن اَڳيان مڌوُ کُلي پيئي! ايتري قدر جو رفيق جي اَچڻ کان اَڳ مڌوءَ هُن سان گهاريل زندگِيءَ جو هڪ هڪ ورق هن نيڪ دل مهلا اَڳيان کولي ڇڏيو.

ٻولي ڀاليِ ۽ جذبات وهيڻي مڌوءَ جي معصوم چهري کي نهاريندي اوچتو ئيِ هن ۾ ڪيس پنهنجي ڌيءُ ميران جو عڪس نظر آيو. اُمالڪ هنجو من ڀرجيِ آيو ۽ اَکيون آليون ٿيِ ويس.

”آنٽيِ، توهان روئيِ ڇو رهيا آهيو؟“

ڇا ٻڌايانءِ ٻچڙي! بلڪل تو جهڙي سباجهيِ، سهڻيِ ۽ سدوريِ هئيِ منھنجِي ڌيِءَ ميران. پر منهنجو ڏُرڀاڳ.... هڪ ڏينهن ڪالونيءَ ۾ ئي رهندڙ جوزف جي موهہ جار ۾ ڦاسيِ، منهنجي گهر جيِ سموريِ پوُنجيِ ميڙي، هن لُچي چوري سان ڀَڄِي ويئِي.... اَسانکي تہ هوءَ جيئري ئيِ ماري ويئي....

”ڇا؟“ مڌوُ اَواڪ رهجيِ ويئيِ!

ايترو ئيِ نہ، جڏهن منهنجي مڙس ميران کي زمينيِ سچائِيءَ کان ذهينشين ڪرائڻ جِي ڪوشش ڪئي تہ سندس اَکين تي اَهڙا کي اَنڌ جا پڙدا چڙهيل هئا، جو اَڳتي ايندڙ تڪليفن ۽ خطرن جو ٻہ ڪيس

آخر مذوءَ جي ماءُ پيءُ، بنهي ڪنور قدم کڻڻ جو نشچو ڪيو ۽ پوءِ مذوءَ جا پير اڳتي وڌڻ کان روڪڻ لاءِ اُن تي تمام بندشن جو سلسلو شروع ٿي ويو!

X X X X X

وڏاتا چوڪرين جي اَندر اَلائي ڪهڙي ڳرنتي خلقي آهي، جو هوُ پهرين ئي نظر ۾ ڪنهنکي سريشٽ سمجهي چاهڻ لڳنديون آهن ۽ پوءِ اُن کي پائڻ لاءِ هوُ تمام ٻيتيون ٽپڻ لاءِ تيار ٿي ونديون آهن....

۽ جڏهن هڪ ڏينهن رفيق مذوءَ کي گهران ڀڄي قدرت جي خوبصورت نظارن سان ڀرپور شهر گوئا ۾ هلي هڪ نئين زندگيءَ جي شروعات ڪرڻ جي رِٿا ٻُڌائي، تہ مذوُ اُمالڪ اِن لاءِ راضي ٿي ويئي....

X X X X X

۽ اُنهيءَ رِٿا موجب مذوُ بہ لک ڪئش، ماءُ جي سڀي جويلري ۽ ضروري سامان سان ڀريل هڪ وڏي بئگ کڻي ڀوپال جنڪشن جي فرسٽ ڪلاس ويٽنگ روم ۾ هڪ بئنچ تي اَچي ويٺي. هوءَ هڪ طرف پاڻ تي حيران هئي تہ هن هيڏو وڏو جوکم ڀريو قدم ڪيئن کڻي ورتو! اَندران دل ڌڪ سبب تيز ڌڙڪيس بہ پئي پر دل جي ڪُنڊ ۾ هڪ آزاد فضا ۾ زندگي گذارڻ جي خوشيءَ بہ ڪَر پئي موڙيس! رات جا ٻارهن ٿيا هئا ۽ گوئا وڃڻ واري گاڏيءَ ۾ اَجا ٽي ڪلاڪ پيا هئا.

مذوءَ دوارن ڪرائيءَ ۾ ٻَڌل واچ کي بار بار نهاريندي، ويٽنگ روم جي در ۾ بار بار اَکيون کُپائيندي ۽ سندس چهري تي لهندڙ چڙهندڙ ڀوَ جون ريکائون ڏسي، سندس پاسي ۾ ويٺل هڪ وڏي عمر جي مهلا کان رهيو نہ ٿيو ۽ نهايت چوچ مان مذوءَ کان پڇي ويٺي- ٻچڙي! تون ڪيڏانهن ٿي وڃين؟

گوئا، هن مختصر جواب ڏنو.

مذوءَ، ميران جو اَهڙو حشر ڏسي اَگيات ڊپ سبب ڏڪي ويئي. ايترو ئي نہ، هنکي اِئين پئي محسوس ٿيو، ڄڻ ميران هنکي بار بار آگاهہ ڪري رهي هئي تہ اِئين نہ ٿئي جو هُنجو بہ اَهڙو ئي حشر ٿئي.

ٻچڙي، مون پنهنجي ڏيءُ تہ سدا لاءِ وڃائي ڇڏي، پر جڏهن بہ ڪنهن معصوم ۽ ڀولي ڀالي ءَ کي آزادي ءَ سان پنهنجي زندگي جيئڻ جي روَش ۾ گهر مان ڀڄي نئين دنيا وَسائڻ جي مورکتا ڪندي ڏسندي آهيان تہ پاڻ کي روڪي نہ سگهندي آهيان. ٻچڙي، سوچ. صبوح جو جڏهن تنهنجي گهر وارن کي تنهنجي رفيق سان گڏ گهران پئسن ۽ زيوَرن سميت ڀڄي وڃڻ جي خبر پوندي، هنن جي دل تي ڇا گذرندي؟ اوڙي پاڙي، ذات برادري ۽ سڄڻ مٽن مائٽن اَڳيان ڪنڌ ڪٿي سگهندا؟ مونکي لڳي ٿو، توهان ٻنهي جي وچ ۾ جيڪو پيار آهي، اُهو صحيح معنيٰ ۾ پيار نہ، آڪرشڻ آهي.... واسنا آهي! تون تہ اَڃا بالغ بہ نہ ٿي آهين ۽ ديهہ جون تمام حدون ٽپي ورتئہ، ڇا اِهو اِخلاقي طور صحيح آهي؟ ڇا تو گهر مان ڀڄڻ کان اَڳ هڪ دفعو بہ وويڪ کان ڪم ورتو، پنهنجي پريمي ءَ جي پريم جي پرک ڪئي؟ ٻچڙي، مون دنيا ڏٺي آهي.... او ويندي ڀُڳت ڀوڳي بہ رهي آهيان.... اَڪثر ڀڄايل ڇوڪرين سان موَج مستي ڪرڻ کان پوءِ اُنهن جا ٺڳا ڪٺا پريمي، پنهنجي پريمڪائن کي ديهہ واپار جي دلالن کي وڪڻي، هميشهہ لاءِ نرڳ ۾ اُڇلائي ڇڏيندا آهن!

نہ آنٽي.... منهنجو رفيق اُنهن مان ناهي! اُمالڪ مذوءَ صفائي ڏيڻ چاهي. ''ٻچڙي! مونکي تون اِتي سراسر غلط ٿي لڳين. هڪ تہ شادي ءَ کان اَڳ ٻنهي جا ٿيل ديهہ سنبنڌ، مٿان وري گهر وارن کي ٻُهاري، اُنهن جا سڀ ڳهہ ڳَنا ۽ سموري پونجي تنهنجي دوارا آڻڻ لاءِ آماده ڪرڻ صاف ٿو ڏسجي، توسان هڪ سازش جي زير سايعي توکي

اَحساس نہ ٿيو.... اُلٽو مرياداٸن جون سڀ حدون پار ڪري، بيشرميءَ سان پيءُ کي ڌمڪائڻ لڳي تہ ”چپ چاپ واپس هليا وڃو، نہ تہ توهانجي خلاف ڪورٽ ۾ ڪرمنل ڪيس داخل ڪنديس!“

”اَلالہ! ماڳهين اِئين!“ مڌوءَ کان حيرت وچان جڻ رڙ نڪري ويئي.

”پوءِ؟“ مڌوءَ حيرت ڀري جڳياسا وچان پڇيو.

”ڇا ٻڌايانءِ ٻچڙي.... اُن ڏينهن کان پوءِ منهنجي مڙس تہ ڌيءُ سان قانوني طور سڀ رشتا ئي ختم ڪري ڇڏيا هئا. ماٺهو مُئي سَهسائن، اَسان جيئري ئي سَهسائي ڇڏيو.“

مڌو اَندر ۾ ڏبيل جڳياسا روڪي نہ سگهي ۽ اُمالڪ پڇيائين، ”پوءِ ڇا ٿيو آنٽي؟“

سچ پڇين نہ، تہ نوجوان پيڙهي، نہ آزاديءَ جي ۽ نہ ئي پيار جي صحيح معنيٰ سمجهي سگهي آهي. رڳو ديهہ ۾ آڪرشڻ ئي هنن کي گمراهہ ڪري ٿو ۽ جڏهن اُهو آڪرشڻ ختم ٿي وڃي ٿو، پوءِ هوءُ عرش تان ڪِري اچي فرش تي پوَن ٿا ۽ پوءِ ڪين اَٽي دال جي اَگهہ جي ڪين خبر پوي ٿي

ٿورو ساهہ پَٽي هن اَڳتي چيو- ٻچڙي! ميران جا سڀ ڳهہ ڳنا ۽ پئسا جوذف جي گهر وارن کپائي پورا ڪيا.... گهر جي نازڪ ماليِ حالت سبب ميران کي پائڻ ۽ کائڻ لاءِ بہ پورو نہ ڏيندا هئا. او ويندي جڏهن ميران پيٽ سان هئي، تڏهن ڊاڪٽرن صاف چيو- اَئنيميا اَٿس. ڪاڏي پيٽي جو پورو خيال نہ رکيو ويو تہ ماءُ ۽ ٻُڪ ۾ پلجندڙ ٻار تي اُبتو اَثر پئجي سگهي ٿو. جوئاري ۽ شرابي جوذف پنهنجي ۾ ئي پورو رهيو ۽ ميران جي صحيح سار سنڀال نہ ٿيڻ ڪري ڊليوَريءَ دوران ئي هوءَ دنيا کي ڇڏي ويئي ۽ تڏهن ئي وڃي شانتي نصيب ٿيس! اَسان لاچار رڳو گونگا ٻوڙها ٻارڙن کان سواءِ ڪجهہ نہ ڪري سگهياسين.

ڊنئہ مذوُ! اِهو هو تنهنجي پيار جو اَصلي چهرو! شُڪر آهي تون نرڳ جي راهہ تي وڃڻ کان بچي ويئينءَ. ٻچڙي ياد رک، هن دنيا ۾ اؤلاد جا سچا هتيشي ماءُ پيءُ ئي آهن، جيڪي آخري ساهہ تائين اؤلاد جي ڀلائي ئي چاهيندا آهن. هوُ اُنهن جي لاءِ ئي تہ جيئندا آهن.... ياد رکجانءِ، نسوارٿ پريم جو پاٺ هڪ ماءُ کان ئي سکي سگهجي ٿو. اَجا بہ ويل ويئي ڪانهي. اُٿ، پنهنجي اِها ٻئگ کڻي واپس پنهنجي گهر موٽي وڃ.''

''آنٽي!'' سُڏڪا ڀريندي مذوُ هنجي سيني سان لڳي ويئي.

پُٺ ٿپيريندي هن چيو- ٻچڙي! وري اَهڙو اُبهرو قدم اَکيون پوُري اَصل نہ کڻجانءِ. پنهنجي آئينده تي غوُر ڪري، اُن کي روشن ڪرڻ جي ڪوشش ڪجانءِ. مان دعا ٿي ڪريان، توکي هڪ ڏينهن اوُچو وَر ۽ گهرُ ملندءِ.... منهنجي آسيس اَٿيئي!

مذو، پختي قدمن سان هلندي اِسٽيشن کان ٻاهر اَچي بيٺي. هن آسمان ڏانهن نهاريو. کيس لڳو، بدناميءَ جا گهِڙي آيل بادل ٻِکرجي اَگيات دشا ۾ گُم ٿي رهيا هئا!

پوريءَ طرح پوڳڻ کان پوءِ نرڳ ۾ اُڇلائڻ کان سواءِ مونکي ته ٻيو ڪجهه نظر نٿو اچي. جيڪڏهن تون چاهين ته منهنجي چوڻ سان هڪ دفعو رفيق کي پرکي ڏس.''

اِهو ٻڌي مڌو يڪدم اِن لاءِ تيار ٿي ويئي ۽ هُن نيڪدل مهلا جي رِٿا موجب مڌوءَ رفيق کي فون لڳايو....

''هيلو! مڌو تون نيڪ طرح سان پهچي ويئينءَ نه اِسٽيشن تي!'' رفيق پڇيو.

''ها رفيق، دير ڇو ڪيئه؟ مان گهڻي دير کان تنهنجي واٽ پيئي نهاريان!''

''بس، مان اِجهو ٿو تو وٽ پهچان.''

''ها رفيق، هڪ گڙٻڙ ٿي ويئي.''

وري ڇا ٿيو؟ رفيق جي آواز ۾ چنتا ۽ حيرت صاف ظاهر پئي ٿي.

''مون ڏاڍي ڪوشش ڪئي، پر مميءَ جي اَلمارِيءَ جي چاٻي، جنهن ۾ سمورا ٻهه ۽ پئسا هئا.... اُها هٿ ئي نه آئي، اِن لاءِ ڪجهه ضروري ڪپڙا ۽ مون وٽ پنهنجا جيڪي پنج ست سؤ روپيا هئا، سي ئي پاڻ سان گڏ کڻي اَچي هتي پهتي آهيان!''

ڇا! تون ڇري ته ڪونه ٿي پيئي آهين، اُنهن ٻهن ۽ پئسن بنا....

''پر رفيق، تون جو مون سان گڏ آهين!'' مڌوءَ هن جي ڳالهه اَڌ ۾ ڪٽيندي چيو. اِهو ٻڌي رفيق مڌوءَ تي ايڏو ته ڏمرجي پيو، جو ڪاوڙ ۾ جڻ فرمان جاري ڪندي چيو، ''ٻُڌ مڌوُ، تون ترت ئون واپس موٽي اَچ.... اَڳتي پوءِ ڏٺو ويندو.'' اِئين چئي رفيق موبائيل ڊسڪنيڪٽ ڪري ڇڏيو. مڌوُ رفيق جي رَوش ڏسي اَواڪ رهجي ويئي! اَکين مان لڙڪن جي ڌارا وَهڻ لڳي.

.... ۽ اهڙيءَ طرح ٻنهي جو پيار پروان چڙهڻ لڳو. سَلونيءِ سريش جي وشواس جي ڏور سان هُن ڏانهن ڇڪجڻ لڳي. ڪڏهن Skype تي، ڪڏهن واٽس اَپ ذريعي رات جو هڪ هڪ ٻي ٻي ٻجي تائين پيار جي اِظهار ۾ ٻئي رُڌجڻ لڳا.

هڪ ڏينهن سِريش، سَلونيءَ کي 'شنڪر پئليس هوٽل' ۾ لنچ تي اِنوائيٽ ڪيو. هوءَ سهي-سَنيري جئن ئي ڊائننگ هال ۾ پهتي، سريش ڪيڪاريندي چيو- ''سَلوُ ! اَڄ تہ تون غضب سيڪسي پيئي لڳين!''

پنهنجي ساراهہ ٻڌي هوءَ ڳاڙهي ٿي پيئي. اُمالڪ سريش پنهنجي کيسي مان هڪ مخملي ڊٻي ڪڍي. هنجو هٿ پنهنجي هٿ ۾ رکي، ڊٻليءَ مان هيرن جي مُنڊي ڪڍي، هنجي اَنامڪا ۾ پائي چيو- ''هن ناچيز جو پيار پريو طحفو قبول ڪر سويٽ هارٽ!''

هيرن جي مُنڊي ڏسي هوءَ خوشيءَ ۾ نٽي ماپي. X X X X X

ٻہ ڏينهن گذريا.... ٽئين ڏينهن رات جو سَلونيءِ سُمهڻ لاءِ جئن ئي پنهنجي بيڊ تي اَچي ليٽي تہ سندس موبائيل جي گهنٽي وَڳي. اِسڪرين تي سريش جو نالو پڙهي، جهٽ ڪَن سان لڳائي چوچ مان 'سُروُ' چئي ڪيڪاريائين. سريش حڪم هلائيندي چيو- سَلوُ، سُڀاڻي رات جو اَٺين لڳي هوٽل هوني ڊِيوُ ۾ منهنجي هڪ جگري دوست جنم ڏينهن جي پارٽي رکي آهي، توکي مون سان گڏ اُتي هلڻو آهي. تون تيار رهجان، مان توکي گهران پِڪ ڪندس.

''پر سريش، نائيٽ پارٽيءَ لاءِ منهنجي مڪان مالڪڻ اَلائوُ ئي ڪونہ ڪندي؟''

''اُهو مان نہ ڄاڻان. تون ڪئن بہ ڪري، اُن کي پَٽائي، پرميشن وٺجانءِ. سَلوُ، تو اهڙي جاندار پارٽي ڪڏهن اَٽئنڊ ڪونہ ڪئي هوندءِ. چرِي، پارٽيءَ جي ٿيم ئي بِنداس آهي- Smoke & Sex، جنهن ۾ منهنجا سڀ دوست پنهنجي پنهنجي گرل فرينڊ سان گڏ ايندا، خوب

مرڻ ويل مُرڪ

سَلونيءَ موبائيل ڪَن تي رکي جئن ئي ’هيلو‘ چيو، سامهون کان سريش جو بيهودگيءَ ڀريو آواز هنجي ڪَنن سان ٽڪرايو- ”پڙوي! تنهنجي ايڏي همت، جو مون سان شاديءَ کان اِنڪار ڪيئہ، هاڻي اِنجو اَنجام ڏسجانءِ. توکي سماج ۾ مُنهن ڏيکارڻ لائق بہ ڪونہ رکندس!“

سريش جو هيءُ حيوانيت ڀريو روپ ڏسي هوءَ اَواڪ رهجي ويئي. سمورو جسم هڪ اَگيات ڊپ سبب ڪاندارجي ويو. ايترو ئي نہ، اَڄ هن جيڪا غار ڏني هئي، اُن سان هُنجو جڻ اَندرُ چيرجي ٽڪرا ٽڪرا ٿي پيو!

بلاشڪ شروعات ۾ سريش جي نهايت سنجيدگي ڀريل وَهنوار سبب سَلوني هن ڏانهن مائل ٿي هئي. هوءَ ڪيس هڪ سٺو دوست ۽ شپ-چنتڪ ڪري مڃيندي هئي. ڪوبہ ننڍو وڏو ڪم چوندي هئي تہ هوُ پنهنجي پهرين ڊيوٽي سمجهي هن ڪم کي اَنجام ڏيندو هو ۽ اهڙيءَ طرح ٻئي، چئين پنجين مهني ۾ هڪ ٻئي جي ايترو ويجهو ايندا ويا، جو کين خبر ئي نہ پيئي تہ اِها دوستي ڪڏهن ’پيار‘ ۾ تبديل ٿي ويئي هئي!

پر سَلوني، جو تہ هڪ سُلجهيل، سنسڪاروان ۽ اَڄ جي هوائن جي رُخ کان پوريءَ عرح خبردار هئي، اِن لاءِ هُن اِنهيءَ رشتي جي مريادا-ريکا پنهنجي اَندر ۾ چڪي ڇڏي هئي!

اڪثر ٻين ڇوڪرن وانگر سريش بہ سَلونيءَ جي سونهن جي تعريف ڪرڻ کان ڪين ڪُسائيندو هو. ڪڏهن هنجي ٻيٽ ’پدمڻيءَ‘ سان ڪندو هو تہ ڪڏهن سُهڻي يا هير سان! سَلوني پنهنجي تعريف ٻڌي ڪنهن ڪنهن مهل شرم وچان ڳاڙهي ٿي ويندي هئي ۽ ڪنڌ هيٺ جهڪائي، من ئي من ۾ مشڪڻ لڳندي هئي.

اوچتو سريش سلونيءَ اڳيان شاديءَ لاءِ پرپوز ڪيو. سَلونيءَ نهايت سنجيدگيءَ سان چيو- ”سريش، مون کي سوچڻ لاءِ وقت گهرجي. ايم.اي. فائينل جا اِمتحان سِر تي آهن، اِن لاءِ شاديءَ جي باري ۾ في اِلحال مون ڪجهه به سوچيو ناهي!

سَلوُ، پلي تون اِمتحان جي تياري ڪر، پر پنهنجو فيصلو جلدي ٻڌائجانءِ. هاڻي اِها جدائي منهنجي لاءِ برداشت ڪرڻ کان ٻاهر ٿيندي پئي وڃي! هُنجي لهجي ۾ تِلخي صاف محسوس ٿي رهي هئي.

X X X X X

سَلوني اِمتحان جي تياريءَ ۾ رُڌجي ويئي. ڏينهن ۾ هڪ ٻه ڀيرا جڏهن به سُريش سان موبائيل تي ڳالهائيندي هئي ته سريش شاديءَ جي فيصلي جي باري ۾ ضرور ڳالهه ڇوريندو هو، پر سَلوني اُن وقت اِها ڳالهه پيار سان ٽاري ڇڏيندي هئي.

هڪ ڏينهن سِٽي بس ۾ سريش جو نهايت ويجهو دوست اَشوڪ سَلونيءَ کي گڏجي ويو. ڳالهين ڳالهين ۾ اَشوڪ سَلونيءَ کي ٻڌايو ته سريش، ڪرڪيٽ جي سَٽي ۾ ايتري حد تائين قاتل آهي، جو ڪيس جاءِ به گِروي رکڻي پئجي ويئي اَٿس، ته به اِن لَت کان ٻاهر اَچڻ جو نالو نٿو وٺي ۽ هاڻي شراب جي نشي ۾ چوُر ٿي اَڪثر ماڻهن سان جهڳڙو ڪري وِهندو آهي. هڪ ٻه ڪيس به سندس جي خلاف هلي رهيا آهن.

اِهو ٻڌندي ئي سَلونيءَ جا ڪَن ڪڙا ٿي ويا. هنجو ڇهون حواس هڪ ڀيرو وري هُن اَڳيان ڪڙو ٿي ويو. هوءَ سوچڻ لڳي- ڪٿي هوءَ پڙهيل ڳڙهيل ۽ ڪٿي سمپل مئٽرڪ ڪيل سُريش. مٿان وري جوئا ۽ شراب جي علت! ٻنهي جو ڪٿئن ميل ٿي سگهي ٿو ۽ زندگي ڪامياب ٿي سگهي ٿي! هوءَ بس مان لهي گهر موٽي، پر آنڊ مانڊ مَتل رهيس ۽ ڪيس سڄي رات ننڊ به ڪونه آئي!

X X X X X

.... خير سان اِمتحان ختم ٿيا. ٻئي ڏينهن ٻئي ’شنڪر پئليس‘ ۾ چانهه تي گڏيا. چوُٽ ۾ ئي سُريش حق جَتائيندي پڇيو- سَلوني،

Enjoy ڪنداسين ۽ ها، بڌي ڇڏ- پارٽيءَ جي ٽيم جي حساب سان ئي تيار ٿجانءِ. او. ڪي.... اِئين چئي سريش فون ڪٽ ڪري ڇڏيو!

سَلوني ٻڏتر ۾ پئجي ويئي. سريش جي هن اِنويٽيشن ڪيس مُنجهائي ڇڏيو.... سوچيندي سوچيندي هنجو ڇهون حواس جاڳي اُٿيو. سريش جي اِنويٽيشن جو حُڪم وارو لهجو، پارٽيءَ جي سيڪس ۽ اِسموڪ واري ٽيم، مٿان وري اُنهيءَ ٽيم موجب سنيرڻ. ٻواءِ ۽ گرل فِرينڊ جو ميڙ ۽ هوني ڊِيوُ جهڙي ماڊرن هوٽل ۾ ڊانس، ڊِرنڪ ۽ اِسموڪ! اِن سِين جي ڪلپنا ڪري هوءَ هڪ اَگيات ڊپ ۾ وڪوڙجي ويئي. دل تي ڪينچيل مريادا جي ليڪ هن کي رکي اَحساس ڪرائڻ لڳي- سَلوني، هيءَ پارٽي تنهنجي لائق نہ آهي. هُن اُنهيءَ وقت اِهو فيصلو ڪري ورتو تہ چاهي ڪجھ بہ ٿي وڃي، هوءَ اِن پارٽيءَ ۾ اَصل نہ ويندي!

هُن اُنهيءَ وقت موبائيل تي سريش کي صاف لفظن ۾ اِنڪار ڪري Sorry چئي معافي ورتي. جواب ۾ سريش تَلخ اَکرن ۾ چيو- ”سَلوني، مون کي توکان اِها اُميد ڪانہ هئي.“ ۽ ڪاوڙجي فون ڪٽي ڇڏيو.

ٻن ڏينهن کان پوءِ جڏهن ٻئي ڊيٽنگ واري جاءِ- شنڪر پئليس هوٽل ۾ گڏيا تہ سَلونيءَ پرچائيندي چيو- ”سُروُ، تون اَجا تائين مون سان ناراض آهين ۽ ٻنهي ڪَنن کي پڪڙي ’ساري!‘ چيو. سُريش اُن نائيٽ پارٽيءَ جي وچوُر ڏيندي چيو- ”سَلوني! اُن ڏينهن پارٽيءَ ۾ سڀ پنهنجي پنهنجي گرل فِرينڊس سان گڏ آيا هئا، هڪ مان ئي ڇڙو هوس. خبر اَٿئي، ڪيڏو اُنهن اَڳيان شرمندو ٿيس. اُن رات سڀني شراب، سيڪس ۽ اِسموڪ خوب اينجواءِ ڪيو ۽ هڪ مان اُٻاٽڪو، ڏار ڏوُتڙيو. هنن کي مزو ماڻيندو ڏسي پوسرندرو رهيس! ڪنديِنءَ وشواس؟“ ”ساري بابا، ساري“ چئي سَلونيءَ هن کي آخر پرچائي ئي ورتو.

هنجو آپو کوهي وينو ۽ ٻئي ڏينهن سَلونيءَ کي ’پڙوي‘ اَکر سان مبوڌت ڪري، سماج ۾ مُنهن ڏيکارڻ لائق نہ رکڻ جي ڌمڪي ڏيئي ڏي! ۽ اِن ڌمڪيءَ جي ٻئي ڏينهن ٻُڌر هو. سَلوني پنهنجي روم ميٽ ساهيڙي مڌوءَ سان شام جو ستين ٻجي آرتيءَ مهل گڻيش جيءَ جي ندر ۾ پرساد چاڙهي جڏهن ٻاهر نڪتي تہ اَلائي ڪٿان اوچتو ئي سريش موٽربائيڪ تي اَچي پرگهٽ ٿيو ۽ تيزاب جي بوتل سَلونيءَ جي شرير تي اُڇلائي وٺي ڀڳو. چوڌاري چوٻول مچي ويو. جلن ۽ سوُر سبب هنجي مُنهن مان اهڙي تہ زوردار رڙ نڪتي، جو سڄي ڪائنات کي ٽي جڻ ڌوڏي ڇڏيو! سَلونيءَ خود پنهنجي اَکين جي سامهون مُنهن جي چمڙيءَ کي زمين تي ڪِرندي ڏٺو. ڪيس لڳو، جڻ ڪنهن هنجي سموري شرير کي باهہ لڳائي ڇڏي هجي! ماڻهن جو حجوم ڪٺو ٿي ويو. مڌوءُ سَلونيءَ کي گود ۾ سُمهاري همٿ ٻڌائيندي رهي. ڪنهن ڀلي اِنسان جي فون تي 108 ايمبولينس اُتي اچي پهتي ۽ جهٽ شهر جي وڏي اِسپتال جي Burn Ward ۾ سَلونيءَ کي ڀرتي ڪيو ويو. ڊاڪٽرن پنهنجي ڪوشش سان هنجي اَکين جي جوت تہ بچائي ورتي ر سڄو چهرو اَهڙو وِڪرت ٿي ويو، جو ڪير بہ ڏسي تہ ڊپ وچان اَکيون ڪٽي پوُري ڇڏي!

سَلونيءَ جا ماءُ پيءُ ڏيءُ جو هيءُ حال ڏسي اَگيات ڊپ ۾ وڪوڙجي ويا. چنڊ جي ٽُڪر کي اَلائي ڪنهنجي نظر لڳي ويئي.... پنهي جي اَکڙين مان رڪي رڪي لُڙڪ ٿي وَهيا.

مڌوءَ ڪاليج اِسٽاف جي مدد سان سريش جي خلاف FIR درج ڪرائي. پوليس ۽ ميڊيا بہ هن واقعي کي نهايت زوزدار ڍنگ سان ڪٽي، سَلونيءَ جي ماءُ پيءُ کي دلداري ڏيڻ لڳا تہ ڪين هڪ ڏينهن ڻهن کي اِنصاف ضرور ملندو ۽ گُنهگار جيل ۾ سلاخُن جي پٺيان جلد نظر ايندو. سَلونيءَ جي ڪلاسميٽس ۽ اِسٽاف مِلي ڪليڪٽر کي بہ اِنصاف ڪرڻ لاءِ هڪ درخواست ڏني.

مٿئين مهني ۾ آڪڻ ٽيج جو اَبوُجهہ مهوُرت آهي. ماں سمجهان ٿو، پنهنجي شادِيءَ لاءِ اِن کان شريشٺ مورت ٻيو ڇا ٿو ٿي سگهي؟

سَلونِيءَ جو چهرو ملول ٿي ويو. ڪجهہ لمحن لاءِ هوءَ جِنسي جڙ ٿي ويئي. من ۾ مَتل اُٿل پُٿل هنجي چهري تي صاف پسجي رهي هئي. بلاشڪ شروع شروع ۾ هنکي سُريش وڻندو هو، پر هوني ڊِيوُ هوٽل واري نائيٽ پارٽِيءَ لاءِ هلايل حڪم ۽ اَشوڪ ذريعي مُنجي شراب ۽ سَٽي واري لڳل لَت بابت ٻڌي سندس دل ۾ نهيل تصوير هنکي اَندر تائين ڏوڏي ڇڏيو. هونئن بہ ڏسي مَک ڳيهڻ ڏاڍو مشڪل ٿِي نہ پر ناممڪن هوندو آهي. سَلونِيءَ اُن وقت ’سوچڻ ڏي‘ اِئين چئي، اُتان گهر موٽي آئِي. سُريش هنجي من کي پروڙي ڪونہ سگهيو. هن سوچيو- اَڳيان پنيان سَلوني هنجي ٿِي آهي ۽ اِنهِيءَ سوچ جي هلندي سريش سلونِيءَ مٿان ڏينهون پوءِ حاوي ٿيڻ لڳو. ڪنهن مهل فون پِڪ نہ ڪرڻ تي، ڊيٽ لاءِ سڏ ڪرڻ کان پوءِ بہ ڪنهن اَڻ-ٽر مشغولِيءَ سبب اُتي نہ پهچڻ تي بدشد ڳالهائڻ لڳو. ڪنهن ڪنهن مهل پيتل هئڻ سبب ڪچيون ڪچيون ماءُ پيڻ جو گاريون بہ ڏيڻ لڳندو هو، جنهنجي ڪري هنجو آتم سنمان ڏاڍو آهت ٿيندو هو. هوءَ سوچيندي هئِي- جيڪڏهن هينئر ئِي اهڙو حال آهي تہ جي هن شخص سان شادِي ڪنديس تہ ڪٿي نِيجندي! آخر هڪ ڏينهن رات جو هن سريش کي موبائيل تي SMS ڪيو- سريش! تون مونکي آئيندهہ شادِيءَ لاءِ Force نہ ڪجانءِ. اَلبت اَسانجي وچ ۾ دوستِيءَ جو رِشتو ڪلهہ بہ قائم هو ۽ اَڳيان بہ رهندو. سَلونِي!

مَئسيج پڙهي سُريش کي جڻ باهہ لڳي ويئي. سَلونِيءَ جي هِيءَ جُريت! خودغرض، ڪم ڪڍائوُ.... منهنجي مٿان هِيءُ Use & throw وارو مُهاوَرو لاڳوُ ڪيائين. ڪهڙو مُنهن ڪٺي هاڻي دوستن جي اَڳيان هلندس.... اَهڙا سوچ ڊوئيندي، اَندر ئي اَندر ۾ اِنهن کي گهوٽيندي

ونيءَ کان هنجي واتان سچي داستان ٻڌي. پوءِ دلداري ڏيندي چيو-
ڙي، اسانجي هوندي هاڻي تون پاڻ کي بلڪل ڪمزور نہ سمجهجهانءِ.
يش جهڙن سِرڦرن نوجوانن کي سچو پريمي سمجهڻ ئي تو جهڙين
ڪرين جي وڏي ڀُل آهي. جي تنهنجي روپ تي مري مِٽجڻ وارو
يمي هجي ها تہ تو جهڙي سُهڻي هير کي تيزاب جي باهہ جي حوالي
رڻ جي اِڇا بہ من ۾ نہ آڻي سگهي ها. هي سڀ سِرڦرن مڙدن جي
وانيت آهي، اُنهن جو اَهنڪار آهي. اِستري هُنن لاءِ پير جي جُتيءَ
ل آهي. زر خريد غلام ئي تہ آهي، جنهن کي پنهنجي اِڇا جَتائڻ
، اِنڪار ڪرڻ جو مڙدن طرفان ڪو حق ئي مليل ناهي! ٻچڙي،
ترِيءَ جي دشمنن جي ويس ۾ اهڙا سِرڦرا جتي ڪٿي موجود آهن-
نلن، بلاتڪارين ۽ تيزابي راڪاسن جي روپ ۾!

ڏس سَلوني، ڪيس ڪورٽ ۾ هلي ئي پيو. توکي بہ هڪ نہ هڪ
نهن اِسصاف ضرور ملندو. پر تيستائين هيئن نراس، هتاش ٿي وِهڻ
ن ڪم ڪونہ هلندو. رهي توکي نوڪري نہ ملڻ واري ڳالهہ، تہ مان
د هلي ملي توکي اَسانجي سنستا ۾ نوڪري ڏيڻ جو آفر ڪٽي آئي
يان. مَئدم لتا اَپائنٽمينٽ ليٽر هن اَڳيان وڌائيندي چيو. سَلونيءَ
ي ماءُ هڪ فرشتي جي روپ ۾ مئدم لتا کي ڏٺو ۽ من ئي من ۾ هن
ي آسيسون ڪرڻ لڳي. سَلونيءَ نوڪريءَ جو ليٽر پڙهي هڪ دفعو وري
بن سِر زندگيءَ بابت سوچڻ لڳي. مئدم لتا ڪُرسيءَ تان اُٿندي
ونيءَ جا ٻئي هٿ پنهنجي هٿن ۾ جهلي چيو- سَلوني بيٽا، توکي
داس جيئڻو بہ آ ۽ لڙڻو بہ. OK.

سَلونيءَ ڪنڌ ڌوڻي 'ها' ڪئي. هنجي بدصورت چهري تي هڪ
ي ويل مُرڪ اُبري آئي....!

چشمديد گواهہ مذوءَ جي بيان جي آڌار تي پوليس سريش کي هڪ ڏينهن ڳولهي هٿ ڪيو ۽ جيل ۾ ڪٽي سَٽيائون.

سَلونيءَ جو سڄو پريوار صدمي جو شڪار ٿي پيو. سڀ کان وڏيڪ صدمو سندس پيءُ کي لڳو. اَندر ئي اَندر ۾ ڳرندو هڪ ڏينهن هوُ ب رَمندو رهيو. پوءِ تہ سڄي جوابداري سَلونيءَ جي ڪُلهن تي اَچي پيئي جيتوڻيڪ شروع شروع ۾ سَلونيءَ جي اَڳيان مدد لاءِ گهڻيئي هٿ وَڌيا جنهنجي ڪري هنجو علاج ممڪن ٿي سگهيو، پر پلاسٽڪ سَرجريءَ کان پوءِ بہ هنجي بدصورتي قائم رهي.

مَنوچڪتسڪ جي ڪائونسلنگ جي صدقي هن حادثي کان ٻاهر نڪرڻ ۾ کيس برابر ٽي سال لڳي ويا. هن گهڻيئي ڪوشش ڪئي تہ کيس ڪا سٺي نوڪري ملي وڃي پر هوءَ جتي بہ ويئي، بدصورتي سبب Reject ٿيندي ويئي. ماءُ ڌيءُ جو پيٽ گُذران مشڪل ٿيند پئي ويو. ماءُ ۾ ايتري سَگهہ ڪانہ هئي، جو هوءَ بہ هٿ پير هڻي ب پئسا ڪمائي سگهي. اِن جدوجهد جي هلندي هوءَ ڏينهون پو Frustrated ٿيندي ويئي. تيزاب هنجو چهرو ئي نہ جَلايو، اَکين ۾ موجود سپنن کي بہ جَلائي خاڪ ڪري ڇڏيو. جيئڻ جي لالسا دم ٽوڙڻ لڳي. هڪ وار تہ هن آتم هتيا ڪرڻ جي بہ ناڻي ورتي ۽ ماڻس جن جن مِٺن مائٽن کان مدد تي گُهري، اُنهن بہ مُنهن موڙي تي ڇڏيو سَلوني ڪنهن ڪم سانگي ٻاهر نڪرندي هئي تہ راند ڪندڙ ٻار هن کي ڏسي پريان ئي رڙيون ڪري وٺي ڀڄي غائب ٿي ويندا هئا. ايترو ئي نہ، سَلوني آرسيءَ ۾ پنهنجو مُنهن ڏسڻ جي بہ همت نہ ڪري سگهندي هئي. مُرڪ تہ جڻ هن کان هميشهہ هميشهہ لاءِ ڪسجي ويئي هئي!

X X X X X

هڪ ڏينهن اوچتو ئي سَلونيءَ جي قياس جوڳي حالت جو ٻُڌي تيزابي حملا روڪڻ نسبت نهيل NGO جي سيڪريٽري لَتا سَڪسينا سَلونيءَ جي در تي اَچي دستڪ ڏني. ڪمري ۾ وِهندي ئي پهرين تہ

ي هئي، اِن لاءِ سيبئي ڪولِيون پنهنجي وجود جي رکيا لاءِ محفوظ
نڌن تي وڃي لڪي ٿانئيڪيون ٿيون هيون.

مان اَڌ مُني ڪلاڪ کان پوءِ گهمي واپس گهر ڏانهن پئي موٽيس
، گهٽيءَ ۾ گهڙندي ئي هڪ گهر جي اَڳيان ماڻهن جو ميڙاڪو ڏسي
ڳياسا سبب تہ ”ڇا ماجرا آهي؟“، اُن پيڙ ڏانهن وڌي ويس. پيڙ ۾
هسي مان جڏهن ئي اَڳيان پهتس تہ نظارو ڏسي اَواڪ رهجي ويس.
مين تي هڪ جهوڙ ٻڍو سڌو سُمهيو پيو هو. عمر اَٽڪل اَسي پنجاسي
ہ هوندس. هن جو سرير ڄڻ هڪ هڏائون پڃرو ٿي لڳو. سندس پيٽ
ٻڌو تہ پڃڪيل هوس ڄڻ هڪ کُبو پئي لڳو. گهرائيءَ سان ڏسڻ تي
ئين لڳو، ڄڻ پيٽ ۽ پٺي ٻئي ايترا پڃڪيل ٿي لڳا، ڄڻ سنهي پاپڙ
يان هجن. مٿي تي ڇڇريل اَڇا وار هئا.... بدن تي هڪ لنگوٽيءَ
يتري ڌوتي پيل هئس، باقي سڄو بدن اُگهاڙو هوس. ساڄي پاسي
ان هڪ ميري، ڌار پيل لٽ پيئي هئي، جيڪا هنجي ٻڍاپي جو سهارو
ئي. سندس کابي پاسي هڪ ايلمونيم جي ميرِي، ٻُسي ٿالهي پيئي
ئي، جنهن تي ڇڙهيل مٽيءَ جي پَرت اِها شاهدي ڏيئي رهي هئي
ہ هن ٻڍي کي ٻن ٽن ڏينهن کان کنهن بہ سڄڻ کائڻ لاءِ ڪجهہ
ڪونہ ڏنو هو. اِن مان اَندازو لڳائڻ مشڪل نہ هو تہ هوُ ڪيڏو نہ بکايل
و. پيٽ ۾ شايد اَن جو هڪ داڻو بہ نہ ويو هو، جنهنجي ڪري پيٽ
پُٺي ٻئي پڃڪي پاپڙ جيان سَنها لڳي رهيا هئا.

اِهو مارمڪ درشيہ ڏسي مان پاڻ کي روڪي نہ سگهيس ۽ مون
ان اَڳ ير ۾ بيٺل هڪ شخص کان پڇيم، ”يائو، هن ٻڍي کي ڇا
يو، جو هيئن پَٽ تي پيو آهي؟“

هن ڏوراپي واري لهجي ۾ وراڻيو- ڇا ٻڌايانوَ يائي صاحب،
ڪجهہ دير اَڳ هيءُ اُجايل ۽ بکايل ٻڍو سامهون واري گهر وٽ بيهي
بلائڻ لڳو- ”ٻيلي، اَللہ جي واسطي مونکي هڪ روٽي ڏيو، مان ٻن
ينهن کان بکيو آهيان. سائين توهانجو ڀلو ڪندو.“

هارايل لُڙڪ

شام جو ٻه ڪلوميٽر پنڌ ڪرڻ منهنجو روز جو نيم هو ۽ اِن نيم
موجب مان جئن ئي گهمڻ لاءِ سنيري ٻاهر نڪتس ته ڦُڙ ڦُڙ مينهن
پوڻ شروع ٿي ويو ۽ ڏسندي ئي ڏسندي مينهن زور پڪڙي اِئين وَس
لڳو، جو چوطرف پاڻيءَ جا ريلا وَهڻ لڳا. مان پنهنجي گهر جي پور
۾ ٻيهي موسم جي ڀرين برسات جو لطف ماڻڻ لڳس. آخر هيءَ موس
جي ڀرين برسات هئي، جنهن تپي ٻاهه ٿي ويل ڌرتيءَ کي ناري
ڇڏيو. رِم جهم رِم جهم برسات.... نه رڳو اِنسان ذات پر سڄي پراڻي
جڳت کي بي پناهه خوشي ۽ ٻوڏ ۾ ٻيري ڇڏيو. وڻ ٽڻ، جايون جڳهيون
او ويندي سموري ڪائنات کي سنان ڪرائي سينگاري ڇڏيو. سانوڻ جي
ڀرئين مينهن هر اِنساني من ۾ پيار، رومانس ۽ خوشحاليءَ جي آس
جَڳائي ڇڏي.....!....

مُني ڪلاڪ کان پوءِ مينهن بس ڪئي ۽ مان گهمڻ لاءِ گهر کان
روانو ٿيس. ڇو ته مينهن سبب سڄ جلدئي بادلن جي پنيان وڃي لڪي
هو، اِن لاءِ چوطرف ٻين ڏينهن کان اَلڳ اَڄ جهٽ چوطرف ٿوري ٿوري
اوندهه شروع ٿي ويئي هئي. اوچتو ئي منهنجي نظر اُن نوجوان تي
وڃي پيئي، جيڪو هميشهه وانگر اَڄ به ٻُڇ ڪمائڻ خاطر ڪِولين کي
ڪڻ ڏيڻ لاءِ هڪ هٿ ۾ ٽارچ ۽ ٻئي هٿ ۾ ڪِولين جو ڪاچ ڪٽي،
ڪِولين جي تلاش ۾ چوطرف ڦري رهيو هو. سندس موٽر سائيڪل رو
جي هڪ پاسي بيٺي هئي. مان جئن ئي اُنجي ويجهو آيس، هن جي
نرڙ تي ڳهر جون بوندون ڏٺم. سندس مُنهن تي اُداسي ۽ نراسائي
جون لڪيرون صاف پسجي رهيون هيون. مان سمجهي ويس. اَڄ هن
کي هڪ به ڪِولي ڏسڻ ۾ ڪونه آئي آهي، جنهن کي ڪڻ ڏيئي ٻُڇ
ڪٽي سگهي. هوُ ٽارچ جي روشني چوطرف اُڇلائي ڪِولين کي ڳولهيند
رهيو، مَن ڪٿي اُهي ملي وڃن. پر ڇو ته مينهن سبب سڄي ڌرتي

پيرن کان هلنديِ اَچي هن جهوُر ٻُڍي جي مُنهن وٽ بيٺي. هرهڪ
ڪولِي اَلائي ڪٿان ڪڻ ڳولهي، اُنکي پنهنجي وات ۾ ڪٽي، اُن ٻڍي
جي ڪُليل مُنهن ۾ اُهو ڪڻ وجهي اَڳتي وڌنديِ ٿي ويئي.... ۽ اِهو
سلسلو ڪيتريِ دير تائين هلندو رهيو!

اِهو مارمڪ درشيہ ڏسيِ مان اَواڪ رهجي ويس! ڪولِين کي ايڏي
سمجهہ، جو هوُ پنهنجي حصي جو ڪاچ خود نہ کائي، اِنسان ذات کي
کارائي رهيون هيون. هُنن جي نگاهہ ۾ اِنسان جي وجود جي قيمت
سندن جي وجود کان گهٽو مٿي هئي، تڏهن ئِي تہ هنن خود بکيو رهي
بہ اِنسان کي زندهہ رکڻ جي اَهميت پئي ڏني.... مون اِن مارمڪ،
دماغ کي ڌوڏي ڇڏڻ واري درشيہ ڏانهن ير ۾ بيٺل اُنهيءَ سڄڻ جو
ڌيان ڇڪايو تہ اُهو بہ اِهو نظارو ڏسي دنگ رهجي ويو. چؤطرف هن
اِلاهيءَ جو چمتڪارڪ درشيہ چؤٻول مَچائي ڇڏيو. هڪ سڄڻ جوش ۾
سينو ڦُلائي چئي ئِي ڏنو- مالڪ سچ پچ مهربان آهي، اُنجي ڪارساجي
ناياب ۽ سمجهہ کان ٻاهر آهي. ننڍپڻ ۾ پڙهيل اُهي اَمرت وچن چڻ
سچي ۽ ساپيا هئڻ جي شاهدي ڏيئي رهيا هئا.... چؤطرف اُن مڪان
مالڪ تي ڦٽ لعنت شروع ٿي ويئي، جنهن ٿوري دير اَڳ هن بکايل
ٻڍي کي ذليل ڪري گهر کان هَڪالي ڪڍيو هو.... ۽ اِهي ڦٽ لعنت
واريون ڳالهيون ڏيري ڏيري اُن مڪان جي سيٺي ياتين جي ڪَنن
تائين وڃي پهتيون.

اوچتو منهنجي نگاهہ اُن مڪان جي دريءَ وٽ بيٺل نؤجوان
ڏانهن کڄي ويئي. اَڙي، هيءُ تہ اُهوئي نوجوان هو، جيڪو ٿوري دير
اَڳ مونکي رستي ۾ ڪولِين جي ڳولها ڪندي مليو هو، جيڪو نيم
سان ڪولِين کي ڪڻ ڏيئي، پُڃ ڪٺڻ لاءِ آمادهہ هو.... پاڻ کي ڪولِين
جو مسيحا سمجهڻ لڳو هو. مان حيران هوس: جيڪو اِنسان پنهنجي
هڙان هيترو خرچ ڪري، ٽارچ جا سيل ٻاري، پيٽرول ڦونڪي بہ پُڃ
ڪمائڻ لاءِ، سُڪون ماڻڻ لاءِ، وَرهين کان پاڻ پتوڙي رهيو هو، اَڄ هُن

اِهو ٻُڍي گهر جو مالڪ در کولي ٻاهر آيو ۽ بنا سوچي سمجهي ٻڍي کي ايترو تہ بدشد ڳالهايو ۽ ذليل ڪيو، جو هيءُ جهوُر ٻڍو اِهو اَپمان سَهي نہ سگهيو. هن کي وَر وَر اِهو اَرمان پئي ٿيو تہ مڪان جي مالڪ کي ڪيس ڏيري حالت ۽ درد ڀري پڪار تي بہ قياس نہ آيو ۽ حقارت سان نهاريِ در ڪٽي بند ڪري ڇڏيو. ٻڍڙي جي شايد هيل تائين اِنسان ذات لاءِ ٿوري گهڻي جيڪا آس بچيل هئي، اُها بہ اُمالڪ ٽُٽي پيئي ۽ جڏهن ٿي زور سان در بند ٿيڻ جو آواز ٻُڌائين، اُن سان دل تي ايڏو تہ صدمو رَسيو، جو جڏهن ٿي پنيان واپس ٿي وَريو تہ سندس ٽنگون ڏڏڻ لڳس ۽ ڪجهہ قدم مَس هليو جو ڦان ٿي پُٽيءَ پر ڪِري اَچي پَٽ پيو ۽ سندس ساهہ رُڪجي ويو.

ڇا؟ منهنجي مُنهن مان ڇڻ رڙ نڪري ويئي. هيل تائين مون اِئين ٿي پئي سمجهيو تہ هن جي ڳُڪيءَ ۾ اَڃا ساهہ باقي آهي. جيتوڻيڪ اِهي آخرين ساهہ پئي لڳم، ڇو جو هُن جو سڄو مُنهن کُليل هو، جنهنجي ڪري مونکي اِئين لڳو هو تہ هوُ جيئرو آهي.... ٻيڙ ۾ عجيب وَ غريب سُس پُس شروع ٿي ويئي هئي.... ڪو ڪٿان پئي آيو تہ ڪو ڪٿان پئي ويو.

من ۾ ننڍپڻ ۾ ڪنهن ڪتاب ۾ پڙهيل ڪجهہ ڳالهيون ذهن تي تَري آيون. جنهن ڇُهنب ڏني آ، اُهو چُڳو بہ ڏيندو. ايشوَر ڏايو ديالوُ آهي، جيڪو هاٿيءَ لاءِ مَڻ ۽ ڪِوليءَ لاءِ ڪَڻ جو اِنتظام پاڻيهي ڪندو آهي. هوُ بکيو اُٿاري پلي، پر بُکيو سُمهاريندو ڪين آهي!....

پر هيءُ ڇا! هِت تہ ايشوَر جي سَرجيل سيني ڪان سريشٽ ڪلاڪرتي.... ''اِنسان'' اَهڙن اَمرت-وَچنن کي ڪوُڙو ۽ غلط ثابت ڪري رهيو هو! ڪيڏا نہ اَرمان پنهنجي حيانءَ ۾ سانڍي هيءُ اُجايل ۽ بکايل ٿي دنيا جهان کي هميشهہ هميشهہ لاءِ ڇڏي رَمندو رهيو!

اوچتو منهنجي نظر هن جهوُر ٻُڍي جي ڦاٽل وات ۾ وڃي اَٽڪي. هيءُ ڇا....! اَلائي ڪٿان ڪِولين جي هڪ قطار ڏيري ڏيري

ساهيڙي

غريب نواز ايڪسپريس رات جي سناٽي کي چيريندي پنهنجي رفتار سان اَڳتي وڌي رهي هئي. ڪمپارٽمينٽ جا سڀ ياتري ننڊ جي آغوش ۾ وڪوڙيل هئا، پر شَما جي اَکڙين مان ننڊ نامعلوم ڪيڏانهن گُم ٿي ويئي هئي. رکي رکي مڙس جا اَپمان ۽ ذلت ڀريا زهريلا وينڻ هنجي ڪنن ۾ گونججي رهيا هئا. ”نڪري وڃ منهنجي گهر مان.... تون ڪُلٽا آهين، آواره آهين، بي وَفا آهين.... چريترهينڻ آهين.... تڏهن ئي ته ايڊس جي بيماري ڏوئي رهي آهين. تون ئي ته آهين اِنجي ذميوار. نڪري وڃ منهنجي گهر مان.... ڪونه ٿي کپين هاڻي مونکي. خبردار، جو وري تو پنهنجي منحوس شڪل ڏيکاري اَٿئي!

ايشوَر ساکشي هو ته هوءَ بي گناهه هئي. حقيقت ۾ ايڊس جي ذميوار هوءَ نه پر اُهو ڪمپائونڊر هو، جنهنجي دوران غلط اِنجيڪشن اِستعمال ڪرڻ سان اها لاعلاج بيماري هوءَ ڍوئي رهي هئي.... هن لَک صفايون ڏنيون، پر سڀ بيسوُد!

عوَرت جي بي عزتيءَ جي به ڪا حد ٿيندي آهي. آخر هنجو پنهنجو به ته ڪو سوَمان آهي.... شما اُنهيءَ وقت هڪ ننڍڙي هئنڊبئگ ۾ ڪجهه ضروري سامان ڪٺي، گهر جي چائنٽ اورانگهي، هميشهه هميشهه لاءِ مڙس کي اَلوداع ڪري هلي آئي هئي. هنکي هاڻي اِها چنتا ستائڻ لڳي ته اَڄ جڏهن هنجو دنيا ۾ ٻيو ڪير به ڪونهي.... هوءَ آخر ڪيڏانهن وڃي؟ ڪنهنجي پناهه وٺي؟

گاڏي جئن ئي پنهنجي آخري ماڳ اَجمير پهتي، شما به اُتي ئي لهي پيئي. هلندي هلندي هوءَ آدرش نگر روڊ تي نهيل هڪ وڏي مندر وٽ پهتي. بيحد ٿَڪل ۽ اُڃايل هئڻ سبب اُتي چبوتري تي ليٽي پيئي ۽ سَمڪ ئي نه پيس ته ڪيڏي مهل اُنجي اَک لڳي ويئي! ڪجهه

جو سمورو علم ۽ عقل، سمجهه ۽ ساڃهه ڪيڏانهن غم تي ويئي هئي، جو ڪولين جي پيٽ ۾ هزار ڳُڻا اَهميت رکندڙ اِنسان جي وجود کي پنهنجي اَفعالن سان، پنهنجي اَکين جي اَڳيان ختم ٿيندي ڏسندو رهيو! هُن ڪان ته اُهي ڪولين وڌيڪ ڀليون ۽ مهان هيون، جن پنهنجي وجود جي رکيا ڪان وڌيڪ اِنسان جي وجود کي مٿي رکي، اُنجي رکيا ڪرڻ جي ڪوشش ڪئي....!

مونکي لڳو اُن نوجوان کي پنهنجي اِن هار جو شدت سان اَحساس ٿي رهيو هو، جنهنجو ثبوت هو- هنجي اَکڙين مان جيڪي لُڙڪ وَهي رهيا هئا، اُهي ساکيات هارايل پاسجي رهيا هئا.

اوچتو ئي ڪمري جي دروازي تي هلڪي ’ٺڪ ٺڪ‘ ٿي. شما چرڪ ڀري اُٿي ڪڙي ٿي. ڊپ ۽ حراس سبب هنجي نرڙ تي اهڙي ٿڌ هوندي به ڀگهر جون ڪجهه بوندون تري آيون.

”ڪير آهين؟“ هن ڏڪندڙ آواز ۾ پڇيو.

”مان پوڄاريءَ جو پاٽيڪو آهيان.“ ٻاهران جواب آيو.

”پر بابا ته هِت ڪونهن، پاسي واري ڳوٺ ۾ ويل آهن.“ شما وراڻيو.

”ڪائي ڳالهه ڪانهي، اَچي ويندا.... تون در ته کول!“

شما ڳوڙهن قدمن سان پنهنجي ڊپ ۽ حراس تي ضابطو رکي در ڏانهن وڌي. هن جئن ئي در کوليو، تئن هڪ هڪ ڪري چار چار حوس جا پيڙيا اَندر ڊوڪجي آيا. شما کي اِها ماجرا ڪجهه سمجهه ۾ نه اچي. هنن چئني وحشي درندن واري واڙي سان شما جي عصمت کي تار تار ڪري ڇڏيو. گئنگ ريپ جي دؤران پنهنجي پوري طاقت سان شما آتم رکيا جي ڀرپور ڪوشش ڪئي، پر هنن چئن درندن ۽ اُنهن جي هٿن ۾ چاقو ۽ پستول ڏسي دهلجي ويئي. هن جون دانهون ۽ ڪوڪُون ڪائنات ۾ گونجنديون رهيون، پر هنجي مدد لاءِ بستيءَ جو ڪوبه ڇڳو مڙس ويجهو نه آيو. لاچار ۽ بيبس شما لاءِ سمرپڻ کان سواءِ چارو ئي ڪهڙو هو؟ چارئي درندا ويندي ويندي شما کي اِها به ڌمڪي ڏيندا ويا- خبردار! جي وات کوليو اَٿئي، جي پوليس وٽ ويئي آهين ته زنده ڪونه بچندينءَ، ياد رکجانءِ....!

شما جي اَندر ۾ هاهاڪار مَتل هو. سڀ ڪجهه ته لُٽجي چڪو هوس. اَڄاڻ شهر، اَڄاڻ ماڻهو. هوءَ ڪري به ڇا ٿي سگهي؟ اِن لاءِ چُپن تي خاموشيءَ جي مُهر ڪڙي لڳائي ڇڏيائين.... جڻ ڪالهه ڪاريءَ رات هن سان ڪجهه ٿيو ئي ڪونه هو. رکي رکي آسائتي نگاهن سان آسمان ڏانهن ضرور نهاريندي رهي....

ڪلاڪن کان پوءِ جڏهن هن جي اَک کُلي ته ڏٺائين- مندر جو بڍو پوڄاري هنجي سامهون بيٺو هو. نهايت پابوهه مان هن کان پڇيو- ٻچڙي! تون ڪير آهين؟ ڪٿان آئي آهين؟

پوڄاريءَ جي همدرداني ۽ پنهنجائپ پرئي وهنوار شما ۾ اُميد ۽ وشواس جڳايو ۽ پوءِ هن اَڳيان پنهنجي بيبس ۽ بدقسمت زندگيءَ جا سڀ ورق کولي ڇڏيا.

پوڄاريءَ ڪي وقت ۽ قسمت جي ماريل شما تي ديا اَچي ويئي. هن مٿي تي قرب ۽ آسيس ڀريو هٿ ڦيريندي پابوهه مان چيو- ٻچڙي! مون ٻڌڙي جي ڪجهه گذري، ڪجهه باقي. ها، جيسين جيئرو آهيان، تيسين تون نشچنت ٿي هِت رهي سگهين ٿي. پر ياد رکج، هن مطلبي ۽ بي رحم دنيا کان هوشيار رهجانءِ!

شما ڪي ته جڻ ڪو فرشتو ملي ويو. بابا! اِئين چئي هوءَ پوڄاريءَ جي هردي سان وڃي لڳي.

شما پنهنجي ماضيءَ کي وساري، ايڊس جهڙي لاعلاج بيماريءَ کي ڏوئيندي، زندگيءَ کي نئين سر جيئڻ جي همٿ پنهنجي اَندر ڪني ڪري لڳي اَڳتي وَڌڻ. آخر زندگيءَ جي مشعال جَلائي رکڻ ۾ ئي ته اِنجي سارٿڪتا آهي!

X X X X X

پر شما کي اِها سمڪ ئي ڪانه رهي ته مندر ۾ ايندڙ ويندڙ ماڻهن ۾ ڪي اهڙا به واسينگ هئا، جنجي سِر تي حوَس جو ڀوت سوار هو. جيڪي خوبصورت ۽ جوان شما کي اَلائي ڪيترن ڏينهن کان ٽيئي رهيا هئا.

اُها بيحد سرد رات هئي. پوڄاري به ڪنهن ڪم سانگي پاسي واري ڳوٺ ۾ ڪنهن ججمان جي گهر ويل هو. شما وٽ اوڍڻ لاءِ هڪ پراڻو ڪمبل هو ۽ وڇائڻ لاءِ هڪ ڦاٽل فراسي هئي. ڳاتي پَجندڙ ٿڌ سبب هوءَ سُڪڙجي، ڳوهجي موهجي هڪ ڳنڙي ٻڌجي سمهي پيئي هئي.

مندر تي اَساماجڪ عناصرن جو دخل شروع ٿي ويو ۽ شما اُن مندر ڪان ڪجهه قدم اَڳيان هڪ قبرستان جي چبوتري ڪي ئي پنهنجو آشيانو بڻائي اُتي رهڻ لڳي. هوءَ ايڊس جي مريض آهي، اِها خبر به اَلائي ڪئن لوڪ اَڳيان اُجاگر ٿي ويئي. پوءِ ته سڀ هنجي ويجهو اَچڻ ڪان ڇرڪڻ لڳا.

اُن رستي ڪان جڏهن لانگهائن جي شما تي نظر پوندي هئي، تڏهن اُنهن مان ڪي ايڪڙ ٻيڪڙ ماڻهو ديا ڪري، مانيءَ جو ٽُڪر هُن ڏانهن اُڇلائي، پُڇ ڪمائڻ جي سُڪون جو پرم پالي پيا خوش ٿيندا هئا.

شما جي حالت تي ترس کائي، هڪ ڏينهن هڪ مهلا سماج جي عيوضي هنجي ويجهو آئي ۽ همدرداني نوع ۾ چيو- ''پيڻ، تون چنتا نه ڪر. مان واعدو ٿي ڪيان ته جلد ئي اَسين سڀ ملي ڪري تنهنجو علاج ڪرائينداسين.''

نهايت طنزي مُشڪ شما جي چهري تي مِڙي آئي. ٻئي ڏينهن اَخبار ۾ شما ۽ مهلا پرتينڌيءَ جو فوٽو ڇپيو، پر اُها سماج شيوي مهلا وري شما ڏانهن نهاريو به ڪونه ته کهڙيءَ ڪُنڊ ويني آهين.... مدد ڪرڻ ته پري جي ڳالهه هئي!

شما جي حالت ڏينهون پوءِ بگڙندي پئي ويئي. نه کاڌو، نه دوا، نه پاڻي.... مِڙيوئي هوءَ ڀڳوان پروسي جيئي رهي هئي.

آخر اُهو ڏينهن به آيو، جڏهن پوري دنيا ۾ 'ايڊس ڊِوَس' ملهائڻ جون زور شور سان تياريون ٿي رهيون هيون. سموريون اَخبارون، ٽي. ويءَ جا چئنل، اُنهن چئنل تي وڏين وڏين ڊگنيٽريز دوار ايڊس جي بچاءَ ۽ علاج لاءِ نيون نيون رٿائون ۽ اُپاءَ پئي ٻڌايا ويا.

قبرستان جي ويجهو وَسيل بستيءَ جي ماڻهن يڪمُشت ٿي شما کي هر طرح جي مدد ڏيڻ لاءِ ڪليڪٽر کي هڪ گياپن ڏنو. اُن بستيءَ ۾ رهندڙ هڪ رٽائرڊ فوجيءَ مڪاني ٽي. وي. چئنل تي وڏي واقعي

ٻئي ڏينهن منجهند ڌاري جڏهن پوڄاري بابا پنهنجي مندر اَندر گهڙيو تہ بيحد اُداس، ويڳاڻي ويڳاڻي ۽ بدحواس حالت ۾ وينل شما کي ڏسي دهلجي ويو. ڌاڙي زور ٻرڻ تي شما ڪالهہ رات واري وحشي درندن جي دُراچار جي داستان ٻڌائي تہ ھُنجون بہ اَکيون ڀرجي آيون. اُمالڪ چيائين- ”ٻچڙي، اُٺ. هل، هينئر ئي پوليس ۾ رپورٽ ٿا لکايون.“

نہ بابا! ڪجهہ ڪونہ وَرڻو، اُلٽو مون سان گڏ توهانجي بہ بدنامي ٿيندي. توهان ئي تہ چوندا آهيو- دنيا ڏاڍي بيرحم، ڇَندي ۽ ڏُرنگي آهي!“

”پر هينءَ زور زناهہ.... هڪ اَبلا سان اَنياءُ ٿيندي بہ چپ رهڻ سان وحشي گوندن کي پاڻ وڏيڪ ھُشي ملندي. اُٿ، هل تہ پوليس اِسٽيشن هلون!“

شما هٿ ٻَڌي، ڏاڍي روئڻهارڪي آواز ۾ چيو- ڇڏيو بابا، رپورٽ ٻپورٽ جو چڪر.... هنن وحشي درندن کي قدرت خود ئي هڪ ڏينهن سزا ڏيندي. هنن کي خبر ناهي تہ مان ايڊس جي مريض آهيان ۽ اِها نُگري بيماري هنن جي جسم ۾ اَزخود پرويش پائي چڪي آهي. ڏسجو، هڪ ڏينهن خود ئي ڪوڙهيا ٿي مَرندا!“

ٻڍي پوڄاريءَ بہ اِها حقيقت ٻُڌي ڪٺي مات ڪئي. چوندا آهن- اِنسان جي جڏهن ڦِٽندي آهي، تڏهن ڇئني پاسي ڦِٽندي آهي. شما مڙس کان ڌتاڙجي، سماج جي نگاهن ۾ اَڇوت بڻجي پيئي. بيرحم ۽ مطلبي ماڻهن هنجي قياس جوڳي حالت تي رحم ڪرڻ، مدد ڪرڻ بدران هُنجي جُوان جسم ڏانهن ميري نگاهن سان ئي نهاريو. او ويندي قدرت بہ شما سان قهر ئي ڪيو جو وحشي واسينگن جي وَر چڙهي پيئي. ٻڍي پوڄاريءَ جي روپ ۾ هنکي زندگيءَ ۾ ڪجهہ آسائش جا ٻرورا نظر آيا، پر اُهي بہ اونداهين جي ٻن ۾ اَلوپ ٿي ويا. جڏهن سِگهو ئي اُهو پوڄاري بہ هڪ ڏينهن هن فاني دنيا کان ڪُوچ ڪري ويو!

ڏنگيندڙ داغ

گُل وانگر ٽڙندڙ، کلندڙ ساڪشيِ اوچتو هيئن مُرجهائجي وينديِ، ۽ ڀاڳهين چُپ ٿيِ وينديِ، ڪنهنکي بہ وشواس نہ ٿي آيو. زندگيءَ جي هيڏي سُٺي شروعات ۾ اهڙي ڪِرت شِڪست هئيِ، جنهن هن کي نراس، هتاش ۽ نڍال ڪري ڇڏيو هو!

هر ڪنواريِ ڇوڪريءَ وانگر هن بہ پنهنجي سپنن جي راجڪمار جا سُهڻا سپنا ڏٺا هئا. اَلائي ڪيترا ڇوڪرا ڏسڻ ڪان پوءِ ساڪشيءَ کي انس وچي اَنڪُر وڻيو هو ۽ هن خوشان خوش 'ها' ڪئي هئيِ! ڏاڍي خوش هئيِ ساڪشيِ! اَنڪُر جي سُهڻي گول چهري ۽ من موهيندڙ مُشڪ تي هوءَ بيحد فِدا هئيِ. هونئن بہ مڱڻي ڪان وٺي شاديِ ٿيڻ تائين جي وچ جا ڏينهن ڏاڍا اَديت، بيحد رومانچڪ ۽ هڪ علحدي مستيءَ وارا هوندا آهن. ٻئي ڇوڪرو ڇوڪري هڪ ٻئي جي ويجهو اَچي، دل جو هڪ ٻئي سان حال اوري اِئين محسوس ڪندا آهن، ڄڻ هوُ ٻئي هڪ ٻئي ڪان وَرهين ڪان واقف هجن. پر ساڪشيءَ جي اها خوشي، اهي اَحساس گهڻو وقت جٽاءُ نہ ڪري سگهيا. مڱڻي ڪان پوءِ هن ڪجهہ ڏينهن اَنڪُر جي فون جو ۽ نيٽ تي چئٽنگ جو شدت سان اِنتظار ڪيو، پر سڀ وئرٿ رهيو، بيسوُد رهيو.

هُن من کي سمجهائڻ چاهيو- اَنڪُر جي M.B.A. جو آخري سيميسٽر آهي، مٿان وريِ پارٽ ٽائيم Fortis اِسپتال ۾ جاب بہ اَٿس، نوڪري ڪم جي دٻاءَ سبب ٽائيم نہ ڪڍِي سگهندو هوندو. شاديءَ ڪان پوءِ سڀ ٺيڪ ٿيِ ويندو.

من کي اهڙي نموني آٿت ڏيندي ڏيندي ڇهين مهني ڪان پوءِ هو ڏينهن بہ اچي سهڙيو، جڏهن هوءَ شاديءَ جي مَندپ ۾ سُهاڳ جو لال جوڙو پائي، اَنڪُر جي پر ۾ ويڏيءَ جي مندپ ۾ اچِي ويٺي. جوڙي

گهوشٽا ڪئي تہ ”منهنجو واعدو آهي تہ جيڪڏهن شما کي اِنصاف نہ مليو، هن کي جوڳي مدد نہ ملي تہ مان اَنشن ڪندس.“....

اِهو واعدو ٻُڌڻ وارن ٻُڌو هوندو پر شما تہ اِنهن سيني کان دوُر پاڻ کي قدرت جي حوالي ڪري چُڪي هئي. هن لاءِ ’ايڊس ڏينهن‘، سيمينار ۽ جلسا، سڀ بيسوُد هئا.

قبرستان جي ٻاهر چبوتري تي ويٺل شما پنهنجي سوُنين اَکڙين سان پنهنجي ياڳ جي سِليٽ تي لکيل تهرير پڙهي رهي هئي- ۽ اها تهرير شما کان نہ ڪلهہ ڳُجهي هئي ۽ نہ اَڄ....

ٻئي ڏينهن صبوح جو سموري اِنسان ذات کان مدد جون اُميدون پنهنجي سيني ۾ سانڍي، هوءَ هميشهہ هميشهہ لاءِ هن دنيا کان ڪوُچ ڪري ويئي.

اوچتو ئي هڪ وشال ’ايڊس رئلي‘ نعرا هڻندي اَچي اُتان نڪتي. ”هڪ ٻہ ٽي چار، ايڇ. آئي. وِي. جي ٽيندي هار!“ هِن جوشيلي نعري آسمان کي گونجائي ڇڏيو.

اها رئلي جڏّن ئي قبرستان جي اُن چبوتري جي پرسان پهتي، مهلا سماج جي اُن ساٿيءَ عيوضيءَ جي نظر چبوتري تي پيل شما جي لاوارث لاش تي وڃي پيئي؛ پر هن لاش کي ڏسي، اَڻ ڏٺو ڪري، نعرن جي گوڙ شور ۾ خود کي لِڪائي، اَڳتي وڌي ويئي! اَلبت پنهنجن کان ٺُڪرايل ۽ زماني جي ستايل شما کي موُت پنهنجي ’ساهيڙي‘ بڻائي، پنهنجي ياڪُر ۾ ضرور ڀري ڇڏيو!

شما جي چهري تي هاڻي تمام جهنجهٽن ۽ آزارن کان مُڪت ٿيڻ جو سُڪون پسريل هو!

آيو! ڪري ٻہ تہ ڇا ڪري، وڃي ٻہ تہ ڪيڏانهن وڃي؟ سڄي رات هنجي سهڻن ڳلن تان ڳوڙها ڳڙندا رهيا.

صبوح جو جڏهن ٻئي باٿ روم لاءِ اُٿي، سندس موبائيل وَڄڻ لڳو. اِسڪرين تي سندس جيجل ماءُ ميران جو نالو ڏسڻ ۾ آيو- ٻچڙي، ڪئن خوش آهين نہ، شل جهٽ منهنجو جهولڻ تنهنجو اَڱڻ آباد ڪري! پهريون ڀيرو سندس ماءُ جي اِنهن دعائن ڪيس اَندر جي گهراين تائين جهوري ڇڏيو. ڇا ڪُڇي؟ ڪهڙي مُنهن سان چوي تہ اَمان! تنهنجون دعائون قَلجڻ ناممڪن آهن!

ضروري حاجت کان فارغ ٿي، ڏيکاءُ طور سنان پاڻي ڪري، جڏهن ٻئي سسُ سهُري جي ويجهو آئي، ٻنهي جا بناوتي چهرا ڏسي سمجهي ويئي تہ هوءَ هڪ رِٿيل سازش جي شڪار ٿي چڪي آهي. هن من ئي من ۾ مالڪ کي ياد ڪيو- ”منهنجا سائين، هاڻي تو تي ئي ننگ آهي، تون ئي ڪو رستو ڏيکارجانءِ، تون ئي ڪو ڀلو ڪجانءِ!“

هوءَ وقت جي وهڪري ۾ وَهڻ لڳي. ڪجهہ ڏينهن مڪاني مِٽن مائٽن جي نينڊ ٿي، اُنهن جي گهر اَنڪُر سان روٽي کائڻ ويندي رهي. هرڪو ساڪشيءَ کي مُنهن تي چٽي ڏيندو هوس- تنهنجا سسُ سهُرو سچ پچ ڀاڳن وارا آهن، جو اُنهن کي تو جهڙي پڙهيل ڳڙهيل، سُهڻي ۽ سباجهي نُنهن ملي آهي، نہ تہ....

ساڪشيءَ کي پنهنجي ساراهہ مان ٻہ جڻ سازش ليکا پائيندي نظر ايندي هئي!

لوڪ لڄا جي لحاظ موجب ساڪشي ۽ اَنڪُر ٻنهي کي گهر وارن هنيمون لاءِ مائونٽ آبوءَ موڪليو. ٽي ڏينهن ٻئي هڪ هوٽل ۾ رهيا. ساڪشي ’پيريڊئس‘ ۾ هئي، اِن لاءِ اَنڪُر ناڪام ڪوشش ۽ اُن مان پيدا ٿيندڙ نراشا کان چِڙجي ويو. ٻئي چوٿين ڏينهن ظاهره طور مُنهن تي ڪُوڙي خوشي چنبڙائي اچي پنهنجي گهر سهڙيا.

ڪي ڏسي، سيني جي خوشيءَ ڳاڙ رڙ نڪري پيئي- واهه! ڇا ته جوڙي آهي!

آخر ماءُ پيءُ سان پريل ڳلي سان ڀاڪر پائي، اکڙين مان وَهندڙ لُڙڪ اُگهي ۽ وداع ٿي، ساڪشيءَ ساهري گهر ۾ پير رکيو. هوءَ سيبئي ريتيون رَسمون نڀائي، سهاڳ رات واري ڪمري ۾ سهاڳ سيڄا تي اچي ويني. ڪيس پرٽيل ساهيڙين جون سهاڳ رات واريون ڳالهيون ۽ حڪايتون ياد ڪري ساڪشي هڪ عجيب رومانچ ۽ اَڳيات خوشنما اَحساس سان پرجي ويئي. گهونگهٽ ڪڍي سهاڳ سيڄا تي اَنڪُر جي اَچڻ جو هوءَ شدت سان اِنتظار ڪرڻ لڳي.

ڪافي اِنتظار کان پوءِ جڏهن اَنڪُر ڪمري ۾ آيو ۽ در بند ڪري سهاڳ سيڄا ڏانهن وڌيو ته ساڪشي غئبي رومانچ سان سرابور ٿي ويئي!

پر هيءُ ڇا؟ جتي جُنون جي حد تائين چاهت، پيار ۽ نزاڪت جي اُميد هئي، اُتي ساڪشيءَ کي مليو رُکو، ٿڌو ۽ مشيني وهنوار. جڏهن سهاڳ رات ملهائڻ جون تمام ڪوششون ڪري ڪري هوُ ٿَڪجي پيو ۽ پوءِ سهڪي سهڪي ساڪشيءَ کي پُٺِ ڏيئي سُمهي پيو، تڏهن ساڪشي آسمان مان ڪِري ڌڙام سان اَچِي ڄڻ پَٽ تي پيئي. هن کي ڪيس ’ڇهين اِندريءَ‘ ڄڻ صاف صاف چئي ڏنو- ساڪشي، تنهنجو اَنڪُر ’نامرد‘ آهي. اِن سچائيءَ سان روبرو ٿيندي ئِي هنجي اَندر ۾ هاهاڪار مچي ويو. هيڏو وڏو ڏوهه، ههڙو وشواس گهات! هوءَ اَندر ئِي اَندر ۾ پُرِي پاٽا ٿي پيئي. جنهن سيڄا تي هوءَ سُتل هئي، اُها سندس چوُطرف ڇَڪريءَ وانگر گهمڻ لڳي. هاڻ ڇا ٿيندو منهنجو؟ وشال پهاڙ جيڏي جواني آخر مان ڪيئن گهاريندس؟ هن کي لڳو، سُهڻي آرسيءَ جيان هنجا تمام خوبصورت سپنا پَٽ تي ڪِري چوُر چوُر ٿِي ويا آهن. هنجي روُح ٽُڪرا ٽُڪرا ٿي پيئي....! سڄي رات هوءَ سُڏڪا پريندي رهي. هنجي اُجڙيل زندگيءَ ۾ هنکي اُن وقت ڪوبه رستو نظر نه ٿي

هاڻي اَنڪُر جي زندگيءَ ۾ ساڪشيءَ جو وجود محض هڪ ڏيکاءُ بڻجي رهجي ويو هو. رات جو ١١ لڳي ڊيوٽيءَ تان موٽڻ کان پوءِ هوُ ڪپڙا مَٽي، ٽِڪو پَنجو کائِي، پلنگ جي ڪُنڊ وٺي سمهي پوندو هو. نه گهر ۾ ڪنهن سان ڳالهائڻ، نه ئي پُڇڻ تي ڪو جواب ڏيڻ! صبوح جو اُٿي چپ چاپ تيار ٿي، ساڪشيءَ دواران پاتل ٽِفن کڻي هوُ چپ چاپ ٻاهر نڪري ويندو هو. اَڏ ڏينهن M.B.A. ڪاليج ۾ ۽ اَڌ ڏينهن Fortis اِسپتال ۾. رات جو ساڍيو ١١ لڳي گهر موٽڻ هنجو رُٽين بڻجي چڪو هو.

اُن ڏينهن موڪل هئڻ ڪري اَنڪُر گهر ۾ وينو هو. ساڪشي صبوح جي چانهه ٺهڻ ڪوپن ۾ وجهي، مڙس جي پرسان اچي ويٺي. هن جڏهن ئي چانهه جو ڪوپ ڪيس هٿ ۾ ڏنو، اَلائي ڪئن ساڪشيءَ جي ٻانهن ۾ پيل سائي چوڙين سان اَنڪُر جو هٿ ٽڪرايو. هن جهٽ هٿ پري ڪندي چيو- ساري ساڪشي!

اِن Sorry لفظ ساڪشيءَ جي دل دماغ ۾ جڻ طوفان آڻي ڇڏيو. هڪ سياويڪ اِسپرش. سو به زال ۽ مڙس جي وچ ۾ ۽ پوءِ به اَپراڌ ٻوڌ! اِن هڪ لفظ نه رڳو ساڪشيءَ کي اَندر تائين چيري ڇڏيو، گڏوگڏ اِهو به سنديش ڏنو ته اَنڪُر مينٽلي سِڪ آهي. ڪنهن ڪنهن مهل ساڪشيءَ اَنڪُر کي پاڻ سان بڙ بڙ ڪندي ۽ ڪنهن وقت پاڳلن وانگر سندس ڳچيءَ کي گول گول ڦيرائيندي ڏٺو. پوءِ ته ساڪشيءَ جا تاڪ لڳي ويا!

هڪ دفعي اَنڪُر جڏهن ئي اِسپتال کان موٽيو ۽ پنهنجي مُنهاڙ ڪائي پي اَچي هنڌ تي ليٽيو ته هتاش ساڪشيءَ سندس پير ۾ ويهي رڙ ڪندي پڇيو- ”آخر مون تنهنجو ڇا بگاڙيو هو، جو توهان سيني مون سان هيڏو وڏو دوکو ڪيو؟“ ساڪشيءَ جو اِهو سوال گوليءَ مثل سڌو هنجي ڇاتيءَ تي وڃي لڳو. هن کي اُميد نه هئي ته ههڙي سِڌي سادي ڇوڪري هنجي نامرڊانگيءَ تي هيئن سِڌو حملو ڪندي!

جلدئي ساڪشيءَ کي اِهو اَحساس ٿي ويو تہ هنجي حيثيت گهر ۾ هڪ ڪاموري.... هڪ ميڊ سَروينٽ کان وڌيڪ ناهي. سس سهري کي ڏاجي سميت نُنهن ملي ويئي. نامزد پُٽ کي زال ملي ويئي ۽ پُٽ جي گرهستي وَسي ويئي. هنن کي اِهوئي تہ کپندو هو!

ايڪانت ملڻ تي هوءَ پنهنجي حالت تي خوب سوچيندي هئي- ڇا هوءَ ماءُ پيءُ کي سموري حقيقت ٻڌائي کين ڳڻتين ۾ وجهي؟ ڇا پرائو ڌن ٿي وڃڻ کان پوءِ پنهنجي پيڪي گهر وڃي؟ ماڻهو ڇا چوندا؟ ڪيڏا ڪشٽ ڪشالا سهي، قرض سِر تي کڻي، ماءُ پيءُ هنجي شادي ڪرائي. پاڻ کي هڪ ڀاري بار کان مَس وڃي مُڪت محسوس ڪيو هو. ڇا وري هنجي ڪلهن تي بوجهہ وجهي کين دکي ڪيان؟

اهڙا پوُر پوڻ سان ڪنهن ڪنهن مهل تہ سندس مٿو ايڏو سوُر ڪرڻ لڳندو هو، جڻ اِجهو ٿو ڦاٽي! اوچتو ڪيس اَکيون اُپ ڏانهن کڄي ويندبون هئس. من ئي من ۾ مالڪ کي پنهنجي ڏور سوُنپي، هوءَ وري وقت جي ڌارا ۾ وَهڻ لڳندي هئي.

مهني کان پوءِ رکشا بنڌن جي ڏڻ تي هوءَ سهري سان گڏ پيڪي گهر گهمڻ آئي. ساڪشي اَنڪل پنجويهہ ڏينهن پيڪن ۾ ٽِڪي پر ڪنهن کي بہ لَکا پوڻ نہ ڏنائين تہ هُنجي ساهري گهر ۾ ڇا حالت ۽ حيثيت آهي؟ اِنهن پنجويهن ڏينهن ۾ اَنڪُر جو هڪ بہ ڪوُڙو فون ڪين آيو تہ تون جيئين پيئي ڪين مري ويئي آهين، يا اَڃا گهڻا ڏينهن ٽڪندينءَ؟ ساڪشيءَ جي مائٽن بہ اِن ڳالهہ کي اِنڪري گهڻو مهتوَ نہ ڏنو جو اَنڪُر جا اِمتحان سِر تي هئا، وقتي ٽائيم نہ مليو هوندس.

پيڪن مان موٽڻ کان پوءِ نہ ساڪشي اَنڪُر جي ٻي رُکي، خاموشي ۽ ڪنهن ڪنهن مهل معمولي ڳالهہ کي وٺي هوُ ابترو تہ گهٽ وَڌ ڳالهائيندو هوس، جو هن کي وشواس ئي نہ ٿيندو هو نہ هڪ پڙهيل لکيل ۽ نوڪري شُدا اِنسان ايڏو اَمانويہ بہ ٿي سگهي ٿو!

جيڏي لنبي حياتي هڪ نامزد اِنسان سان گهاري.... ماءُ پيءُ کي ٻڌائين کان مُکت رکان؟ جي اِئين ڪيان به ته جڏهن دير سوير منهنجي ماءُ پيءُ کي اِن سچائيءَ جي ڄاڻ پوندي، هوُ اِهو صدمو برداشت ڪري سگهندا؟ جيڪڏهن مان هينئر پنهنجي ماءُ پيءُ کي اِها سچائي ٿي ٻڌايان ته منهنجا ڪمزور دل وارا ماءُ پيءُ اِها چوٽ برداشت ڪري سگهندا؟

اهڙن خيالن جي چڪرويوه ۾ ساکشي اَلائي ڪيتري دير ڦاٿل رهي. اوچتو هن ڏٺو- اَنڪُر کي اَک لڳي چُڪي آهي ۽ دين-جهان کان پري، بنا ڪنهن تناءَ جي ڪونگهرا هڻڻ ۾ مگنُ آهي!

ساکشي سوچڻ لڳي- هيءُ مڙد ڪيڏو نه خودغرض ۽ مڪار آهي. هيڏي سنگين ڄُرم ڪرڻ جي باوجود هُن کي ڪنهن به قسم جو اَفسوس ڪونهي. هوُ ڪٿي به پاڻ کي ڏوهاري نٿو سمجهي. هن کي اِها به چنتا نه اَهي ۽ نه هاڻي ٿي آهي ته هنجي هلت سبب ساکشيءَ ۽ اُنهيءَ جي مائٽن ڇا ڇا ڪوهيو آهي. سماج جي نظرئي سان ساکشيءَ جي دامن تي جيڪو داغ لڳو آهي، اُهو ڪيڏو نه اَمِٽ آهي! جڏهن اِها سچائي سماج ۾ ساکشيءَ جي مٽن مائٽن کي خبر پوندي، هوُ پاڻ کي ڪيترو نه هيٺو ۽ اَسهايه سمجهندا. جي ساکشي هن کي ڇڏي به ڏئي ٿي ته ڇا اِهوئي سماج داغ لڳل ساکشيءَ کي بي ڏوهي سمجهي، سهج روپ سان اَنگيڪار ڪندو؟ ڇا ساکشيءَ جي بي ڏوهيءَ هئڻ جي سچائيءَ کي مرڪز ۾ رکي ڪو نوجوان خوشيءَ هن کي اَپنائيندو؟

سوچ جو اِهو سلسلو هلندي هلندي آخر هڪ هنڌ اچي رُڪيو. اُن وقت رات جا ٽي ٿيا هئا. اَنڪُر ۽ هنجا ماءُ پيءُ دين جهان کان بي فڪر ننڊ جي آغوش ۾ غلطان هئا. ساکشيءَ من ئي من ۾ هڪ اَٽل نشچو ڪري، اَڪين مان وهندڙ ڳوڙها اُگهي، پنهنجي بئگ اَلماڙيءَ مان ڪڍي، اُن ۾ پنهنجا ضروري وٿا، سمورا ڳهه ۽ گهرج آهر ڪئش

هوُ اَندر ۾ ڏاڍو تِلمِلايو پر چو تہ هوُ ڏوهاري هو، اِن لاءِ ظاهره طور چپ رهيو. اَڄ ساڪشي بہ چڻ پري بيني هئي. اَنڪُر کي ڪٽهڙي ۾ ڪڙو ڪري هڪ ٻيو سوال داغيو- ”چا مون کان اَڳ تنهنجي بہ پيرا مائٽي ڪونہ ٽُٽي هئي ۽ اُنجو بہ ڪارڻ تنهنجي نامڙدانگي ڪونہ هئي؟ مڃان ٿي، منهنجي سڌي سادي مائٽن توهانجي چڱيءَ طرح جاچ ڪونہ ڪرائي، پر منهنجي مائٽن اَسانجي شهر ۾ رهندڙ تنهنجي ماسڙ تي ئي ڀروسو ڪيو. چا تنهنجي ماسڙ کي تنهنجي اِن سچائيءَ جي جاڻ ڪونہ هئي؟ توهان سيني جاڻي واڻي مِلي ڀڳت ذريعي اَسان کي پنهنجو شڪار بڻايو آهي.“

سچائيءَ سان ڀُر هيءُ ويڻ ٻڌي اَنڪُر جا تاڪ لڳي ويا. هاڻي هوُ سَڀ سوُڌو جهلجي چڪو هو. هوُ هر طرح سان ساڪشيءَ جو گنهگار هو. هوُ ئي نہ، هُن جا ماءُ پيءُ بہ، او ويندي ويجها ۽ پَريان مِت مائٽ بہ اِن رِٿيل سازش جو هڪ حصو هئا. اَنڪُر خود کي ساڪشيءَ اَڳيان ڪمزور، ٻوُنو ۽ هڪ جيتامڙي مثل ڀاسڻ لڳو.

ڪجھ لمحن لاءِ ٻنهي جي وچ ۾ ويران خاموشي پسرجي پيئي. اَنڪُر ڪنڌ هيٺ ڪري پلنگ تي اِئين ويٺو هو، چڻ هڪ سزايافتہ مُجرم هجي.

”ساڪشي! مونکي خبر ناهي، اِهو سڀ ڪئن ٿي ويو. مگر هڪ ڳالھ جو مان وَچن ٿو ڏيانءِ- توکي هن گهر ۾ باقي سڀ خوشيون ملندءِ، جيڪڏهن تون چاهين تہ مون سان گڏ پنهنجي سڄي زندگي گهاري سگهين ٿي. هڪ سُک کي ڇڏي، مان ٻيا سڀ سُک تنهنجي جهوليءَ ۾ وجهندو رهندس. نہ تہ تون آزاد آهين.... چاهين تہ پنهنجي مائٽن ۾ واپس وڃي سگهين ٿي!“

اَنڪُر جا اِهي ٻول ٻڌي هوءَ گهري سوچ ۾ ٻڏي ويئي. ڪا مهل هوءَ ٻُت بڻجي سوچيندي رهي- چا ڪريان، ڪيڏانهن وڃان؟ چا پهاڙ

سوئر

پوليس جي جيپ جيئن ئي نٿوءَ جي گهر اڳيان اچي بيٺي، ڪالونيءَ جا سُنل ماڻهو هڪ هڪ ڪري اُٿي کڙا ٿيا ۽ پنهنجين پنهنجين درين ڪان اَچي بيٺا. سڀئي سمجهي چُڪا هئا ته اِهو نٿوُ ضرور وري ڪو لفڙو ڪري آيو آهي!

اَجا مهنو اَڳ ئي اِهو نٿوُ ضمانت تي ڇُٽو هو. سندس گهر جي لڳو لڳ چيتن چڪيءَ وارو رهندو آهي، اُنجي نُنهن وِشنِي گهڻي گرمي هئڻ سبب پنهنجن ٻارن کي وٺي وڃي ڪُڏ تي سُمهي هئي. وشنيءَ جي ننڍي ڀيڻ ڪا آيل هئي، سا به ڪُڏ تي ڪُنڊ پاسيري تي سمهي پيئي هئي. رات جا ٻه ٿيا هئا. ڪالونيءَ جو چوڪيدار به ڦيرا پائي پائي ايڏو ٿَڪجي چڪو هو، جو ساهه پٽڻ لاءِ هڪ ٿلهي تي اَچي وينو مَس ته جهٽ اَک لڳي ويس. وحشي ۽ لوفر نٿوءَ جي اَندر ۾ لڪل سوئر جاڳي پيو. چوندا آهن- ڏائڻ به ٻه گهر ڇڏيندي آهي، پر بدمعاش نٿوُ ڪٿي ٿي مُڙيو. وشنيءَ جي ننڍي ڪنواري ڀيڻ ڏانهن هنجي اَک شروع ڪان ئي ميري هئي ۽ هوُ رڳو وَجهه ڳولهي رهيو هو. اَڄ نٿوُ هوئڻ ڪان ڪجهه وڌيڪ ئي پيتل هو، جنهنجي ڪري هوُ وحشي جانوَر بڻجي پيو. دٻيل پيرن سان ڪُڏ ٽپي هيٺ لٿو ۽ وشنيءَ جي ڀيڻ مٿان جُهڪيو ته اَلائي ڪهڙيءَ غئبي طاقت هيٺ هنجي ننڊ ڦِٽي پيئي ۽ پنهنجي مٿان نٿوءَ کي جهڪيل ڏسي اهڙي ته وٺي رڙ ڪئي، جو جهٽ ٽپو ڏيئي نٿوُ وٺي اُٿان ڀڳو. سڄي پاڙي ۾ گوڙ مچي ويو. عزت جي خاطر چيتنداس ۽ گهر وارا ڀلي چپ رهيا پر ٻئي ڏينهن سڄي پاڙي کي خبر پئجي ويئي ته نٿوُ ڪارو مُنهن ڪرڻ لاءِ رات چِت ٽپيو هو پر نياڻيءَ جي ڀِت ڀڳوان بچائي ورتي. وشنيءَ جي ننڍي ڀيڻ ٻئي ڏينهن ئي پنهنجي ڳوٺ ڪشنگڙهه هلي ويئي.

X X X X X

ڪٽِي پنهنجي پرس ۾ وِڌي. هڪ سفيد ڪاڳر ڪٽِي هن لکيو. ”اَنڪُر! ڪوڙ جي بنياد تي، سازش جو ڄار وڇائي قائم ڪيل رشتن جي هن دنيا ۾ جيئندي جيئندي هاڻي منهنجو دمُ گُهٽجڻ لڳو آهي. پيار، پنهنجائپ ۽ وَفا جي بدلي مونکي توهانجون گُهرجون پوريون ڪرڻ واري هڪ جِنس مثل سمجهيو ويو آهي. توهان سڀ گنهگار هوندي به بي گناهن وانگر ڪنڌُ مٿي ڪٽِي، سينو تاڻي جيئِي رهيا آهيو ۽ مان بي گناهه، بي ڏوهي هوندي به هڪ گنهگار وارِي زندگي جيئِي رهِي آهيان. پنهنجي جسم تي هڪ اَمٽ داغ ڍوئي رهِي آهيان، جيڪو هر پل، هر گهڙِيءَ مونکي ڏنگي رهيو آهي. مان چاهيان ته قانون جي مدد سان توهانکي عدالت جي ڪٽگهڙي ۾ گِهلي سگهان ٿي.... پر مان اِئين ڪونه ڪنديس. بلاشڪ توهانجو ڏوهه معافِيءَ لائق ڪونهي، پر جيڪڏهن توهان ۾ ذرا به غيرت آهي ۽ پرائشچت ڪرڻ چاهيو ته منهنجِي اِلتجا اَٿوَ- هاڻي ڪنهن بِيءَ پرائِي جائِيءَ ۽ معصوم نياڻِيءَ سان اَهڙو دوکو نه ڪندا، نه ته منهنجيون بددعائون توهانجو زندگِيءَ پر پيڇو ڪونه ڇڏينديون. اَلوداع!“ خط اَنڪُر جي وهاڻي پرسان رکي هوءَ هميشه لاءِ هن گهر کي ڇڏي، نامعلوم راهُن ڏانهن هلڻ لاءِ ٻاهر نڪري آئِي.

رهنديِ هئيِ، جيڪا هنجي پيڻ جي ساهيڙي هئيِ. هڪ ٻئي جي گهر اَچڻ وڃڻ شروع ڪان ٿي هو. درياھ سان اُن ماسترياڻيءَ کي جيڪو مڙس مليو هو، سو ڏاڍو ڀولو-ڀالو ۽ گهٽ دماغ وارو هو. نٿوءَ اُنجو اَجوڳ فائدو وٺيِ، ماسترياڻيءَ کي پنهنجي جار ۾ ڦاسائيِ، حوَس جو شڪار بڻائي ڇڏيو. جڏهن ٻنهيِ جي گهر وارن کي ۽ سڄي پاڙي کي اِن ڪُڌي ڪم جي خبر پيئيِ، پوءِ ته مَمڻ مَچيِ ويو. خاموش نٿوءَ جو پيءُ اُن ڏينهن ايڏو ته اَچيِ پنهنجي وحشيِ پٽ مٿان ڏمريو، جو غصي ۽ جوش ۾ اچيِ نٿوءَ اُنهيءَ رات ڪٽيِ زهر کائيِ ڇڏيو. پر جئن ئيِ پٽس کي خبر پيئيِ، اُمالڪ پٽ کي اِسپتال کڻائي ويو ۽ ڊاڪٽر، ڪمپائونڊر ۽ نرسُن کي هٿ جوڙي، پئسا کارايا، تڏهن وڃيِ نٿوءَ جيِ جانِ بچيِ ۽ پوليس ڪيس ڪان به بچيِ ويو.

ٿورن ئيِ ڏينهن ۾ نٿوءُ چاڪ چڱو ڀلو ٿيِ ويو پر اَفعال اُهي ئيِ ٻچڙا! واپس اُهائي سوئر واريِ نوُس نوُس چالو ٿيِ ويس. پاڙي وارا ڇو ته هن کي چڱيءَ طرح سڃاڻيِ چڪا هئا، اِن لاءِ نڪيِ ڪير هن سان ڳالهائڻ پسند ڪندو هو، نڪو گهر اَچ وڃ جو رستو ڏيڻ پسند ڪندو هوس. ڪِني سوئر ڪان هرڪو پري ڀڄندو آهي. ساڳِي ڪار پاڙي وارن جيِ هاڻي نٿوءَ سان هئيِ.

نٿوءُ پاڙي مان خوار ٿيڻ سبب پنهنجو نئون شڪار شهر کان پري هڪ ڪمري واري مڪان ۾ ماءُ پيءُ سان گڏ رهندڙ هڪ غريب معصوم سورهن سترهن سالن جيِ اِسڪول ۾ پڙهندڙ هڪ ڇوڪريءَ کي بڻايو. جنهن گهٽيءَ ۾ نٿوءَ جي وڏي ڀاءُ جو ريڊيميڊ جو دڪان هو، اُنجي پرسان ئيِ هڪ اِسڪول هو. ديپا نالي جيِ اُها غريب ۽ مسڪين ڇوڪري روز اُتان لنگهنديِ هئيِ. نٿوءَ هنجي غريبيِ ۽ معصوميت جو ناجائز فائدو وٺيِ، هن کي پنهنجي جار ۾ ڦاسائڻ شروع ڪيو. روز طرح طرح جون سوکڙيون ملڻ سبب ديپا به هن سوئر جي پنيان ڇَري ٿيِ پيئيِ. هڪ ڏينهن اِسڪول مان موٽنديِ وقت ديپا کي پاڻ سان وٺيِ، اُنهيءَ

گذريل ٽن سالن ۾ نٿوُ، سَٽوڙين ۽ شرابين جي سنگ ۾ ايڏو تہ خراب ٿي چڪو هو، جو ٽيهن سالن جو اَڇي ٽيو هو پر سندس جا اَفعال ٻُڍي آيل مِٽي مائٽيءَ وارا پريان ٿي پڄي ويندا هئا. X X X X X

.... درين کان بينل ڀاڙي وارن ڏنو تہ نٿوءَ کي پوليس وارا ڀَتڙ کان جهلي، گاڏين جا وَسڪارا ڪندا ٻاهر اَچي رهيا آهن. نٿوءَ کي ڌِڪو ڏيئي، جيپ ۾ بند ڪيائونس. ٻئي ڏينهن سيني ڪالونيءَ وارن کي اَخبار رستي خبر پيئي تہ سَٽي ۾ پنجاهہ هزار هارائڻ سبب نٿوءَ غصي ۽ پاڳلپڻي ۾ اَچي ٻِئي سٽوڙِيءَ جو مٿو ڦاڙي وڌو ۽ اُتان ڀڄي اَچي گهر لڪو هو. نٿوءَ خلاف ٿاڻي ۾ رپورٽ درج ٿيڻ سبب ئي اُن کي پڪڙڻ لاءِ رات پوليس وارا جيپ ڪٺي آيا هئا.

نٿوُ هاڻي اوڙي پاڙي ئي نہ، سڄي شهر ۾ خوار ٿي چڪو هو. پوليس جون گاريون ۽ مارون کائي پاڻ وڌيڪ اَٽاسو ٿي پيو هو. گهر وارا تہ هن مان ايترو تہ تنگ ٿي چڪا هئا، جو غصي ۾ ڪنهن ڪنهن مهل اِئين بہ چئي ڏيندا هئا- ”نڪي تو مُئو مَري، نڪي ٿي اَسانجي جانِ ڇُٽي!“ X X X X X

نٿوُ جنهن ڏينهن سَٽي ۾ هارائي ايندو هو، تنهن ڏينهن گهر وارن سان اَهڙا تہ تَڻ ڪٽي تَپائيندو هو، جو شرم وچان سندس ماءُ پيءُ گهر جا در دريون ڪٽي بند ڪري ڇڏيندا هئا. نٿوُ ماءُ کي رَن، ڪُتي، پڙوي چئي، اُن مان ٻين جون قصرون پيو ڪڍندو هو. پيءُ ويچارو عزت جي خاطر اِها ذلت بہ سهي ويندو هو ۽ ڪُنڊ پاسيرو ويهي رت جا ڳوڙها پيو ڳاڙيندو هو. چنتائن هن کي ايڏو تہ جهوري ڇڏيو، جو نوڪريءَ کان رٽائرڊ ٿئي بہ سال مَس ٿيا هوندس، پر هينئر کان ئي جهوُر ٻڍو لڳڻ لڳو.

نٿوءَ جي سوئر ورتي هاڻي ڏينهون پوءِ زور وٺندي وئي. گهر ۾ ڪير چوڻ-آکڻ وارو هو ڪونہ، جنهنجي ڪري هوُ ٿهائين وڌيڪ بد-اِخلاق، بد-زبان ۽ بد-دماغ بڻجي پيو. نٿوءَ جي پاڙي ۾ هڪ ماسترياڻي

هر گهتنا ماڻهن جي يادداشت سان جيترو جلد جُڙي ٿي، اوترو جلد ميسارجي بہ وڃي ٿي! اِهوئي سبب هو، جو ماڻهو نٿوءَ جي ڪارنامن کان وقت جي وٿيءَ سبب بيخبر ٿيندا ٿي ويا تہ ٻئي طرف نٿوُ سوئر کان بہ وڌيڪ ڪِنو ٿيندو پئي ويو ۽ اِن سبب سندس مائٽي در تي نہ ٿي چڙهي. نٿوءَ لاءِ اِها هڪ زبردست هار هئي. هُن هِن هار کي جيت ۾ تبديل ڪرڻ لاءِ هڪ خطرناڪ سازش رچي. اُنهن ڏينهن ۾ نٿوءَ جي گهر پنيان، ٻاهران بدلي ٿي آيل ڏيالداس نالي هڪ ماستر اَچي وينو. هوُ نهايت ئي شريف ۽ دانشمند هو. پرائيُن پڇڙُن کان سدائين پَري رهندو هو، اِن لاءِ نٿوءَ جي باري ۾ هن کي ڪا خاص ڄاڻ ڪانہ هئي. هن کي هڪ ئي سڪيلڌي ڌيءُ هئي، جيڪا سُلڇڻي ۽ سمجهدار هئي. هوءَ نٿوءَ جي ڀيڻ پدما سان هڪ دفعو مندر ۾ گڏي ۽ پوءِ ڏيري ڏيري هڪ ٻئي جي وڌيڪ ويجهو اينديون ويون، او ويندي گهر بہ کُلئي عام اَچ وڃ شروع ٿي وئي. نٿوءَ کي ٻيو ڇا کپندو هو؟ ماستر ڏيالداس جي ڌيءُ ميران جڏهن پدما جي گهر ايندي هئي، نٿوُ اُنجي سامهون نهايت شريف ٿي پيش ايندو هو ۽ منڙين منڙين ڳالهين رستي ميران تي ڇانئجي ويو. هڪ سني پاڙيسريءَ جي ناتي ڏيالداس جي پرسان رهندڙ لڇوُ ڪپڙي واري ماستر ڏيالداس کي نٿوءَ جي کُڏن ڪارنامن جو ڇِنو کوليندي آگاهہ ڪيو تہ هوُ پنهنجي ڌيءَ ميران کي روڪي، نہ تہ نٿوُ اَجوڳ فائدو وٺي، ڪيس برباد ڪري ڇڏيندو. ماستر ڏيالداس کي جڏهن اِها خبر پيئي تہ سندس ڌيءُ ميران نٿوءَ جي ڪافي ويجهو اَچي وئي آهي، تڏهن هن ڌيءُ ميران کي ڏاڍو سمجهايو تہ هوءَ پنهنجا پير پنيان ڇِڪي وٺي؛ پر پيار ۾ پاڳل ميران ٻُڌي اَڻ-ٻُڌي ڪري ڇڏي. نٿوءَ کي کپندو بہ اِهو هو. هن نهايت دورانديشيءَ سان ڪم وٺي هڪ خطرناڪ سازش رَچي ۽ اُن سازش موجب هڪ ڏينهن ڪاليج ويندي ميران کي رستي مان ئي اِسڪوٽر تي وهاري، نصيرآباد ڏانهن روانو ٿيو. ميران ڏاڍو روڪيس، منع ڪيس تہ هيئن گهران ڀَڄي

گهٽيءَ ۾ وڏي ياڙس جي گُدام ۾ اچي پهتو. اَبوڊ ديپا ناداني‌ءَ ۾ اُن ڏينهن پنهنجو سڀ ڪجهه وڃائي ويٺي ۽ جڏهن گهر وارن کي خبر پيئي تہ ديپا جي پيٽ ۾ ٻي مهني جو پاپ پَلجي رهيو آهي، پوءِ تہ هنن جي پيرن هيٺان زمين کسڪي ويئي. غريب ماءُ پيءُ عزت بچائڻ خاطر چپ چاپ شهر ڇڏي هليا ويا ۽ ڌيءُ جي شادي هڪ وڏي عمر واري رنڍ سان ڪري ڇڏي.

چوندا آهن سوئر سان ڪُشتي لڙڻ ۾ سوئر جو تہ ڪجهه ڪونہ ويندو، پر اَسين ضرور سوئر جي گندگيءَ جا شڪار بڻجي پونداسين. عزت ۽ مانَ مريادا خاطر نٿوءَ جي ڪڌن ڪرتوتن خلاف لڙائي لڙڻ بدران چپ رهڻ ۾ ئي ڀلائي سمجهي هلڻ سبب نٿوُ ڏينهون ڏينهن ويو بي‌لغام ۽ خطرناڪ جانوَر بڻجندو.

اُنهن ئي ڏينهن ۾ اَجمير جي اَشليل فوٽو ڪانڊ جو پردو فاحش ٿيڻ سبب ماڻهن جا تاڪ لڳي ويا. پر نٿوءَ لاءِ اِهو گناهہ پريو رستو روزي روٽيءَ جو چڱو وسيلو بڻجي آيو. عزت وارا ماڻهو تہ پاڻ وڏيڪ ساوڌان ٿي ويا پر نٿوءَ اِن کي پنهنجي حوَس پورتيءَ جو هڪ هٿيار ڪٽي بڻايو.

هڪ ڏينهن مونيڪا نالي هڪ ماڊرن ڪاليج گرل مٿان نٿوءَ جي نظر پئجي ويئي. نٿوُ اَهڙين ڇوڪرين جي ڪمزور نسُن کان اَڳي ئي واقف هو، سو ئي مونيڪا کي پنهنجي جار ۾ ڦاسائڻ ۾ هنکي ذرا بہ دير نہ لڳي. هن سوچي سمجهي سازش موجب مونيڪا سان گڏجي اهڙا اَشليل فوٽا کڍارايا، جو سنسڪاروان ماڻهو اُنهن کي ڏسندي ئي ڪٽي اَکيون بند ڪري ڇڏي! نٿوءَ مونيڪا جي سُهڻي جسم جو ڀِتو فائدو ورتو. ڀهرين حوَس پوري ڪيائين، پوءِ من پرجي وڃڻ تي فوٽن جو واسطو ڏيئي، بلئڪ ميلنگ شروع ڪئي. مونيڪا جو عزتدار پيءُ اَشليل فوٽو ڏسي دهلجي ويو ۽ نٿوءَ کي پنجاهہ هزار روپيہ ڏيئي، اُهي فوٽو ۽ نيگيٽو ورتا ۽ سگهو ئي ڌيءُ کي پرڻائي بس ٿي ويو.

زندگيءَ جي رفتار اَڄ ايتري تہ تيز ٿي ويئي آهي، جو هر ڳالهہ

ئي ٿيٺو هو. ميران جهڙي سُهڻي، سُلڇڻي ۽ پڙهيل-ڳڙهيل ڇوڪري ٿي مليس. نہ تہ نٿوءَ جي ڪُڌن ڪرتوتن ڪري مائٽي ڪونہ ٿي چڙهي!

ساڳئي ڏينهن، رات جو اٽڪل ٻارهين بجي نٿوُ ۽ ميران ٻئي پنهنجي پنهنجي گهر موٽيا. اُن ڏينهن تيز برسات پوڻ سبب بجلي گُل هئي، جنهنجي ڪري ٻنهي کي گهر موٽندي رڳو لڇوُ ڪپڙي واري ڏٺو.

ميران کي ڏسي سندس ماءُ ڇڪي ڪٽي ڇاتيءَ سان لاتو ۽ روئي جو روئي، بس ئي نہ ڪري. سندس پيءُ عزت ۽ شرم کان اَڌ تہ اَڳي ئي مَري چڪو هو. هاڻي ماڻ کان سواءِ هن وٽ بچيو بہ ڇا هو. جڏهن ميران سربستي ڳالهہ ٻڌايس تہ هوُ صرف شاديءَ جو ناٽڪ ڪري آيا آهن، ديهہ جي سطح ٿي هوءَ صاف ۽ پاڪ آهي، تڏهن ڏيالداس جي اَکين ۾ آشا جا ترورا ترِي آيا. ميران بلڪل پاڪ دامن هئي، اِها خاطري ٿيڻ کان پوءِ جڏهن هُن ڏيءُ کي نٿوءَ جي ڪُڌن ڪارنامن جو چٽو پيش ڪيو، تڏهن پهرين تہ هن کي وشواس ئي نہ پئي ٿيو، پر جڏهن ٻنهي ماءُ پيءُ کيس هڪ هڪ ڳالهہ جو ثبوت ڏنو، تڏهن ميران جون اَکيون کُلي ويون. سندس اَنڌو پيار ڪافور بڻجي اُڏامي ويس. اَپراڌ بوڌ سبب هن کي ايڏو تہ پڇتاءُ ٿيو، جو اُمالڪ ماءُ کان معافي گُهرندي، هن سان ڀاڪر پائي رُئڻ ۾ اَچي ڇتڪي.

ماستر ڏيالداس ۽ سندس گهر واريءَ ايشوَر جا لَک شڪرانا مڃيا تہ سندس معصوم ڏيءُ نرڳ ۾ وڃڻ کان بچي ويئي، نہ تہ سڄي عمر گوندي نٿوءَ اَڳيان گيسيون پرين ها ۽ ڪُتجي مَرن ها!

هيڏانهن جڏهن نٿوءَ ڏٺو تہ ميران بلڪل بدلجي ويئي آهي، تڏهن هن ڏيالداس کي تنگ ڪرڻ شروع ڪيو، جئن عزت جي ڊپ خاطر سِر جُهڪائي سگهي. نٿوُ اُهي ڪڍايل فوٽا ڏيهہ کي ڏيکاري دعويٰ ڪرڻ لڳو تہ ميران هُنجي زال آهي. رات جو ٻِي ٻِي بجي ڏيالداس کي ڌمڪيون ڏيڻ لڳو تہ ميران کي سڌيءَ طرح سندس زال قبول ڪر، نہ تہ سيني کي برباد ڪري ڇڏيندو.

شادي ڪرڻ غلط آهي، اِن ۾ بنهي ڌرين جي بدنامي ٿيندي پر نٿوُ ڪٿي مُڙڻ وارو هو. هن شرافت جو ڇار ميران مٿان اُڇلائيندي چيو- ”ڏس ميران، اِهو تون چڱيءَ طرح ڄاڻين ٿي ته پنهنجو پيار سچو آهي. بڌاءِ، اَڄ تائين مون تنهنجو ڪڏهن ناجائز فائدو ورتو آهي؟ ڪڏهن مون تنهنجي ديهه کي اِسپرش به ڪيو آهي؟ جيڪڏهن منهنجي من ۾ پاپ هجي ها ته مونکي گهڻيئي موقعا مليا، جڏهن مان تنهنجو اَجوڳ فائدو وٺي ٿي سگهيس، پر ڇا مون اِئين ڪيو؟“

بس، ڀولي-ڀالي ميران اِن ترڪ اَڳيان لاجواب ٿي ويئي. ميران کي چُپ ڏسي نٿوءَ جو جوش تَهائين وَڌي ويو. هن ميران کي سمجهائيندي چيو- ”ڏس ميران، پاڻ شادي-بادي ڪونه ڪنداسين، رُڳو هڪ ڪوُڙو ناٽڪ ڪنداسين، جنهن ۾ تون ءُ مان گلي ۾ مالها پائي، اَگنيءَ اَڳيان ڦيرا پائي، ٻه ٽي فوٽا ڪڍائينداسين؛ جيئن واپس گهر موٽي اَچي گهر وارن کي مڃائي وٺنداسين ته هاڻي اَسانجي وِڏي-وِڏان سان شادي ڪرايو. ڏسجانءِ، ٻنهي جا ماءُ پيءُ ڪيئن ٿا اِن رِشتي کي مُهر لڳائين.

ميران نٿوءَ جي ڊرامي واري ڳالهه ٻُڌي ڀهريائين ته ڊپ وچان ڏڪي ويئي، پر پوءِ نٿوءَ جي زور پرڻ تي ته هوُنه رڳو هڪ ڊرامو ڪندا، ڪو سچ پچ واري شادي ٿوروئي ڪندا؛ ميران آخر مڃي ويئي.

هيڏانهن ٻنهي جي گهران غائب ٿيڻ تي سڄي پاڙي ۾ ڦمڻ مچي ويو. ڏيالداس جي حالت اَهڙي ته قياس جوڳي ٿي پيئي، جڻ ڪَٽجيس ته خون نه نڪري! سندس گهر واري ته اوچنگارون ڏيئي روئڻ ۾ اَچي ڇتڪي ءُ رکي رکي بيهوش ٿي، هنڌ ۾ ئي ڊُرڪي ٿي پيئي.

نٿوُ پنهنجي سازش کي ڪامياب ٿيندو ڏسي اَندر ئي اَندر ۾ ڏاڍو خوش پئي ٿيو. خوش ٿئي به ڇونه، آخر هُن دوراندِيشيءَ کان ڪم ورتو هو. سندس ويهه ئي گيهه ۾ هيون! ڏيالداس کي اَڳيان پنيان ڪير هو ميران کان سواءِ، اِن لاءِ اَڳي پوءِ سڄي ملڪيت جو مالڪ نٿوُ

مِٺو ٻوجھ

ڪِلمُڪ ۾ ٻِنداس نيها ڪجھ ڏينهن کان بيحد خاموش، چُپ
چُپ ۽ ويڳاڻي لڳي رهِي هئي. بلاشڪ هوءَ هلي چلي رهي هئي، پر
جڻ مشين جيان. چهري تي دک جو ريکائون صاف پَسجي رهيون هيون.
مانسڪ دٻاءَ ۽ تناءَ سبب هنجي چهري جي سونهن ۽ مَٺيا نامعلوم
ڪيڏانهن گُم ٿي ويئي هئي. هنجو من اَندر ئي اَندر ۾ ويو ٿي ڪاڄندو.
نند ته ڄڻ هن کان رُسي ويئي هئي.

هوءَ ڪم-ڪاج لاهي، هنڌ تي اَچي ليٽي هئي، پر من بار بار
چونڪن چنڊي سسُ جي چيل ڳالھ ڏانهن ڪجي ويندو هوس- ''اِها
ڪَن-لاٽار چڏي چڏ.... هاڻي گهٽيئي ناٽڪ ڪيئھ، سونوگرافي ڪراءِ
ته خبر پوي!''

نيها سسُ جي نيت صاف پروڙي ورتي هئي. ٽن سالن جي ڏيءُ
جي ماءُ بڻجي چڪي نيها کي ڄڻ سسُ اَڳي ئي ڏوهاري بڻائي چڪي
هئي. هُن اَڻ-پڙهيل سسُ کي ڪير سمجهائي ته گربھ ۾ پلجندڙ ٻار
جي لِنگ نِرڌارڻ ۾ پيءُ جي ڪِروموسومس جو اَهم رول ٿيندو آهي.
هُن لاءِ پوٽي، پوٽي نه، مٺي ٻوجھ مثل هئي.

جئن مهنن جو جيوُ نيها جي ڪُک ۾ ساھ کڻي رهيو هو. هوءَ
هن معصوم کي جنم ڏيئي ماترتوَ جو ڳاٽ هڪ وار وري اوچو ڪرڻ
۾ لڳي ويئي هئي، پر سسُ هٿ ڌوئي اَچي پنيان پيئي هئس ته
ڪئن به ڪري سونوگرافيءَ ذريعي تپاس ڪرائي. جيڪڏهن ڪُک ۾
پَلجندڙ جيوُ پُٽ هجي ته نيڪ، نه ته ڪنيا کي ڪُک ۾ ئي قتل ڪري
چڏجي، جئن ڏيئرن جي سُورن ۽ جهنجهٽن کان ڇُٽي وڃجي.

نيها پنهنجو رَت سٽ ڏيئي، ساھ سان سانڍي، ڪُک ۾ پلجندڙ
جيوَ جي جنم جو اِنتظار ڪري رهي هئي پر هيءُ ڇا! سندس سسُ ۽
مُڙس ٻئي هن اَجنمي ٻار جي پنيان هٿ ڌوئي اَچي پيا هئا. ڪڪرمتي

جڏهن ڪالونيءَ جي مُکي چيناننڊ ڏٺو تہ نٿوُ ماڳهين نانگو ٿي بيٺو آهي ۽ پنهنجن ڪُڌن ڪرتوتن کان باز نٿو اچي، تڏهن هڪ ڏينهن سيٺِ پاڙي جي پئنچن گڏجي، نٿوءَ کي سبق سيکارڻ جو نشچو ڪيو. چوندا آهن - چاليهہ راتيون چور جو، ايڪيتاليهين رات ساڌ جي بہ اَوس ايندي آهي. پئنچن کي بہ موقعي جي تلاش هئي. هڪ ڏينهن نٿوُ رات جو ١٠ بجي جڏهن ٿِي پٽر ڪٽي ماستر ڏيالداس کي ڊيڄارڻ لاءِ هنجي گهر ڏانهن اُڇلائڻ لڳو، تنهن وقت ئي مُکي چيناننڊ ۽ ٻن-ٽن پئنچن هنکي سڀ سوڌو پڪڙي ورتو. پوءِ سيٺِ نٿوءَ کي ٽُڪ-ٻُڄا هڻندي چيو- ”ڪميڻا، چو ڪٽي تَڻ تَپايا اَٿيئي؟ هاڻي جيستائين توکي سبق نہ ملندو، تيستائين تون ڪونہ سُڌرندين.“ اِئين چئي ترتئون هڪ نائيءَ کي گهرائي ورتائون ۽ اُن کان نٿوءَ جو اَڌ مٿو ۽ اَڌ مُڇون ڪوڙائي ڇڏيون. ايترو ئي نہ، هن کي دائم سبق سيکارڻ لاءِ هڪ ڪَڇي کي ڇڏي، باقي سڀ ڪپڙا زوريءَ لاهرائي ڪٽي اُگهاڙو ڪيائونس ۽ ڳچيءَ ۾ هڪ تختي لَٽڪائي ڇڏيائونس، جنهن تي هڪ پاسي لکيل هو- ”مان سوئر آهيان“، تہ ٻئي پاسي لکيل هو- ”مان گوندو آهيان.“ سندس ڳچيءَ ۾ جوُتن جي مالها بہ ڪٽي پاتائونس ۽ پوءِ ٽُڪون-ٻُڄا هڻندا، جلوس ڪڍي، بازار مان گهمائيندا، سِڌو اَچي سِٽي ٿاڻي تي پهتا ۽ ڪالونيءَ جي پئنچن ملي ڪري، هنجي تمام ڪرتوتن خلاف ڪيس درج ڪرايو.

پوليس نٿوءَ کي لاڪ-اَپ ۾ بند ڪرڻ کان اَڳ هن کي اُها تہ مار ڏني، جو نٿوءَ جي دماغ جا وائيسر ئي گُم ٿي ويا. نٿوُ پنهنجي ٻُت جي ههڙي بدنصيب حالت ڏسي ايڏو تہ اَپراڌ ٻوڌ سبب ششدر ٿيو، جو ٻنهي هٿن سان ٿاڻي ۾ بيٺل ڏيالداس، مُکي ۽ ٻين پئنچن اَڳيان پنهنجو مُنهن ڪٽي ڍڪيو. اُن وقت نٿوءَ جي اَکين مان پڇتاءَ جا ڳوڙها وَهي، هِنجي ترين کان هيٺ ڪسڪندا، پَٽ ۾ ڪِرڻ لڳا.

سپ هُن سان گڏ آهن. پوءِ هوءَ پاڻ کي ڇو ڪمزور سمجهي، ڇو ڏاڍائپ سهي؟

نيها جو گهوٽ راجيش شهر کان ڏيڍ سؤ ڪلوميٽر پري هڪ شهر ۾ نوڪري ڪندو هو. هر ڇنڇر شام جو گهر ايندو هو ۽ سومر ڏينهن سويل پنهنجي ماڳ ڏانهن وَرندو هو. ڇنڇر ۾ اَڃا ٻه ڏينهن پيا هئا.

ليٽي ليٽي ئي نيها سوچڻ لڳي- اِستري ئي اِستريءَ جي دشمن ڇو آهي؟ ڇوندا آهن- سنويدنا اِستريءَ جو قيمتي ڳهڻو ٿيندو آهي ته پوءِ ڪُک ۾ پلجندڙ ڪَنيا جي پرتي بيرحمي ۽ نردئتا ڇو؟ نيها اَخبار ۾ پڙهيو هو ته هِنن ڊائگنوسٽڪ سينٽرن ۾ ڪنيا جو ڪُک ۾ قتل ڪرڻ جي ڪم کي اَنجام ڏيڻ واريون ٻه گهڻيون تڻيون ليڊي ڊاڪٽرياڻيون آهن، جيڪي پئسي ڪمائڻ جي لالچ ۾ بيشرميون ٿي، اِهو ڪُڌو ڪم ڪن ٿيون. هڪ سينٽر جي سيني تي هڪ دفعو نيها اِشتهار پڙهي حيران رهجي ويئي. اُن ۾ لکيل هو- پنج هزار لڳايو، پنجاهه هزار بچايو. ڄڻ ڏيڄ، ڏيڄ نه هجي، ڪو اَڻ-سَهندڙ بوجهه هجي، منو بوجهه هجي.

پريشان نيها جي من ۾ اوچتو خيال آيو. ڇونه هوءَ پنهنجي جيجل ماءُ کي فون ڪري ٻڌائي ته سندس سان ڪهڙي ويڌن آهي. هوءَ اُٿي، فون ڏانهن وَڌي ۽ فون ڊائل ڪرڻ لڳي. ڊائل ڪندي ڪندي ئي وري خيال آيس ته اِن سان سندس ماءُ پاڻ ٻيٺي پريشان ٿيندي. هن فون رکي ڇڏيو ۽ اَچي هنڌ تي ليٽي.

نيها من کي ٻئي پاسي ڪرڻ لاءِ ٽي. وي. چالو ڪئي. نيوزُ چئنل جي هڪ خبر هن کي ڏڪائي ڇڏيو! اُديپور جي پڇولا جهيل ۾ ٻن معصوم ڪنيائن جا همل پاڻيءَ جي سطح تي تَري آيا هئا. اِن خبر ڇوبول مَچائي ڇڏيو. سماج سيوي، ذهين ماڻهن نه رڳو ڪنيائن جي قتل کي هڪ عظيم گُناهه نهرايو، سرڪار کان ٻه گُهر ڪئي ته سماج جن ڊاڪٽرن تي وشواس رکي ٻِهوان جيان پوڄيندا ٿي آيا، اُنهن ئي پئسي جي لالچ ۾ اَچي، اِنسانيت کي لَڄائي جيڪو پاپ ڪيو هو، اُن

وانگر شهر ۾ جڳهہ جڳهہ تي کليل وبل اَلٽراسائونڊ ٽيڪنيڪ وارا ڊائگنوسٽڪ سينٽر جڻ اَجنمي ڄار جا دشمن بڻجي ڳالهہ اوچو ڪيو بيٺا هئا.

نيها جي سسُ کي بہ ڪنهن ستسنگياڻيءَ کو هِن سونوگرافيءَ جي ڳالهہ ٻڌائي هئي، پوءِ تہ هوءَ نيها جي پنيان ئي پئجي ويئي هئي. اُٿندي وِهندي رڳو هڪ ئي رَٽ لڳائي ڏني- سونوگرافِي، سونوگرافِي!

نيها رنڌڻي جو سڄو ڪم-ڪاج لاهي اَچي پلنگ تي ليٽي مَس تہ گهٽيءَ مان هڪ جلوس اَچي لنگهيو. هن جهٽ اُٿي دريءَ کان ليئو پائي ڏٺو.... شهر جي اِسڪول-ڪاليج جون ڇوڪريون قطار ۾ پنهنجي پنهنجي هٿن ۾ تختيون کڻي پئي آيون، جن تي لکيل هو- اَمان، مونکي جمڻ ڏيو.... ڪنيا ڀروُڻ-هَتيا پاپ آهي.... قانوني اَپراڌ آهي. هڪ تختيءَ تي مارمڪ سُوال لکيل هو- ناري ماتا آهي تہ قبول آ، ناري ڀيڻ آهي تہ قبول آ، ناري پتني آهي تہ قبول آ.... تہ پوءِ ڌيءُ جي روپ ۾ قبول ڇونہ آهي؟ هڪ ٻيءَ تختيءَ تي ڌيءُ جي اَهميت جو اَحساس ڪرائڻ واري عبارت سبب نيها جو ڌيان ڇڪايو- ڌيءُ کي نہ چاهيندا تہ نُنهن ڪٿان آڻيندا؟ ڌيءُ ئي نہ بچندي تہ سرشٽي ڪئن رچندي؟ هڪ ٻي تختيءَ تي مارمڪ نارو لکيل هو- اَڄاول ڪنيا جو قتل سڀ کان وڏو پاپ آهي. هي ڪهڙو زمانو آهي، ڌيءُ جو هڄارو پاپ آهي. هڪ ٻيءَ تختيءَ ڏانهن نيها نيها جي نظر ويئي، جنهن تي لکيل هو- ڇئي ويا سڀ سچ سنت مهان، هڪ ڌيءُ آ ڏهن پُٽن سمان.

۽ آخري تختيءَ ڏانهن نظر ويندي ئي نيها اَپيوٽ تي ويئي، جنهن تي لکيل هو- ڌيءُ جي جانِ بچائيندا سين، وَنش پنهنجو ڀنپائيندا سين.

نيها جي ڪَنن ۾ ڇوڪرين جا نعرا گونجڻ لڳا، جن کي ٻڌي هوءَ اُتساهہ ۽ آتم وشواس سان ڀرجي ويئي. هنجو ڪمزور من مضبوط ٿيندو ويو. هن کي لڳو، هوءَ اَڪيلي ناهي. سڄو سماج، سرڪار، قانون،

اوچتو هن کي لڳو، هوءُ پڇي رهيو آهي- اَمان! اَڄ مونکي جنم وٺڻ، وڏو ڪرڻ ۽ ڏوليءَ ۾ وداع ڪرڻ کان گهر وارا ۽ سماج ڇو ڪنڌ ڪڍائي رهيا آهن؟ وَرهين کان ڇو اِئين ٿيندو پئي آيو تہ جنم کان پوءِ ڌيئرن کي کير جي ڪُنڊ ۾ ٻوڙي، ڪٿ جي پائي سان گلو دٻائي يا سياري جي ڀيانڪ رات ۾ آلي ڪپڙي ۾ ويڙهي ڏڪندو ڪنهن رستي جي ڪنڊ ۾ ڦٽو ڪري يا وري آفيم جي زهر-ٻوٽي چٽائي ماريو ويندو هو. اَمان! گذريل سؤ سالن ۾ رڳو پرش ۽ سماج جي نظر ۾ فقط ايترو ئي ڦيرو آيو آهي، جو هاڻي مون سان موئت جي راند کيڏڻ وارا هاڻي اَڻ-پڙهيل نہ پر عامل رانديگر سامهون اچي رهيا آهن. سائنس جي مدد سان هاڻي ڪُک ۾ ڪنيائن جو قتل رانديگر ڊاڪٽر ڪري رهيا آهن!

نيها اِن ڳڳين ۽ ڪوڙي سچ کي ياد ڪري ڏڪي ويئي. هن ڪٿي پڙهيو ٻہ هو تہ اَڄ لالچي ڊاڪٽر سائنس جي اَک سان گرڀ ۾ پلجندڙ ڪنيا کي ڏسي ڪئن نہ ڪاسائين وانگر ڌار وارا اوزار ڪُک ۾ وجهي، جيجل ماءُ جي ممتا کي ٽُڪر ٽُڪر ڪري بيرحميءَ سان ٻاهر ڪڍي، ڪانگن ۽ ڪُتن حوالي ڪرڻ تي آمادھ ٿي چڪا آهن. اِن اَحساس ئي نيها جي اَندر ۾ ڏڪائيندڙ سيات پيدا ڪري ڇڏيو.

اوچتو هُن ٻُڌو تہ اَندر پلجندڙ جيوُ ڪجهہ پڇي رهيو آهي- اَمان، اَڄ ڌيئرن جو ڀاڳ ڇو ٽئہ تي چڪو آهي تہ هنن کي جنم وٺڻ کان اَڳ ئي ڪُک ۾ پورو ڪري ڇڏٽو آهي. ڌيءُ جي پيءُ کي ڇي ڇا تي ويو آهي، جنهن کي اَڄ منهنجو ٻچپن نہ ڪپي. جن ڪومل ڪچڙن هٿن کي، مُنين کي چُميون ڏيئي پيار ڪندا هئا، منهنجي کير جي ڏندن سان پنهنجين آڱرين کي چڪ پارائي اَلوڪڪ سُک ماڻيندا هئا، پنيءَ ۽ ڇاتيءَ تي چاڙهي ڊڊو-ڊَڊي راند ڪندي ڪونہ ٿڪجندا هئا، اَڄ اُنهن گهر وارن لاءِ مان هاڻي هڪ مِنو ٻوجهہ آهيان؟

نيها اِن مارمڪ سوال تي غوُر ڪري زار زار روئڻ لڳي. ممتا جو جڻ سمنڊ اُمڙي آيو. سُڏڪا پريندي، ممتا ڀريا هٿ پيٽ تي گُهمائيندي

لاءِ سخت ۾ سخت سزا ڏني وڃي.

نيها ته اِهو سڀ ڏسي اَندر ئي اَندر ۾ جُهري پيئي. يلي ئي اُهي ٻئي ڪنيائون ناجائز هيون، پر اُنهن جي مائٽن جي پرتي ساماجڪ سوچ ۾ اَڄ به ڪو ڦيرو نه آيو هو. سماج اَڄ به اَهڙي سنتان ۽ اُنجي ماءُ کي ڌڪاريندي پيئي اَچي، يلي ئي اِن ۾ ڏوهه پُرش ذات جو ئي ڇونه هو!

ٿوري دير اَڳ گهٽيءَ مان گذري ويل جلوس جي ياد ايندي ئي هوءَ اونهي سوچ ۾ ٻڏي ويئي. پيءُ جي لاڏلي، ماءُ جي سڪيلڌي ۽ گهر جي ڏِري ٿيندي آهي ڌيءُ.... اَڄ اِهائي ڌيءُ پنهنجي وجود جي بِکيا پنهنجي گهرن وارن ۽ سماج کان گُهري رهي آهي ته مونکي جِمڻ ڏيو! ڪيڏي نه اَرمان ۽ حيف جهڙي ڳالهه آهي!

پر نيها کي ڪنيائن جي جلوس کي ڏسي فخر ۽ سُڪون مليو ته سماج هاڻي جاڳي رهيو آهي، اِهو به سُٺو.

رات جو مانيءَ مهل نيها، سندس ڌيءُ، سَسُ ۽ ننڍو ڏير ڊائننگ ٽيبل تي ماني کائي رهيا هئا. اوچتو ئي ٽي. وِيءَ جي خبر سيني جو ڌيان پاڻ ڏانهن ڇڪائي ورتو. اُن ۾ ڏيکاريو ويو ته ڪنيائن جو قتل ڪندڙ ڊاڪٽرن کي هڪ سرڪاري عملي سڀ سوڌو پڪڙي ورتو آهي. اُهي ڊاڪٽر پنهنجو مُنهن لِڪائيندا، پوليس سان گڏ حوالات ڏانهن ويندي ڏيکاريا ويا.

نيها پنهنجي سَسُ ڏانهن اَرٿ پريل اَکيون کڻي نهاريو. اَکيون ملندي ئي سَسُ ڪنڌ ٻئي پاسي ڪيو. نيها جي کُک ۾ پلجندڙ جيوَ جي قتل لاءِ آمادهه سَسُ، پنهنجي نُنهن سان اَکيون مِلائي به ڪيئن ٿي سگهي؟

رات جا ٻارهن لڳا هئا. نيها هنڌ تي ليٽي ضرور پيئي هئي پر ننڊ هن کان ڪوهه پري هئي. اوچتو نيها جو ڌيان پنهنجي کُک ۾ پلجندڙ جيوَ ڏانهن ڪڇي ويو. هن پيٽ تي ممتا پريو هٿ گُهمايو.

رات جو ڪم-هاڄ ڪان پوءِ نيها بيڊروم ۾ ڳھڙي مَس ته راجيش جا ڪنور لفظ هنجي ڪَنن سان ٽڪرايا- ”ڇا ٻُڌئي، صبوح جو نوين بجي ڊائگنوسٽڪ سينٽر تي هلڻو آهي، وڏي مشڪل سان ٽائيم ورتو آهي.“ پٽيءَ جو اِهو فيصلو ئي نه هو، فتوىٰ پڻ هئي؛ جنهن جو صاف مطلب هو ته هنجو حڪم نه مڃڻ معنيٰ ڪنور سزا! اِنهن لفظن ۾ نيها کي راجيش نه پر سندس سسُ لڪل نظر آئي. نيها سنجيدگيءَ ۽ سمجهاڻيءَ واري نوع ۾ چيو- ”توهان ڏسو پيا، ٻين شهرن ۾ ڪنيا ڀَروُڻ هنيا جي خلاف جلوس نڪري رهيا آهن. اِسپتالن ۾ اِهو ڪُڌو ڪم ڪندڙ ڊاڪٽرن کي سڀ سوڌو پڪڙي، جيل ۾ وجهي رهيا آهن. پليز، سونوگرافيءَ جو خيال لاهي ڇڏيو. جيڪو قسمت ۾ هوندو، ڏنو ويندو.“

”مونکي سمجهائڻ جي ڪا ضرورت ناهي. مان جئن چوان ٿو، تئن توکي ڪرڻو ئي پوندو....“ راجيش جا لفظ نيها کي تير جيان چُڀڻ لڳا. نيها هڪ دفعو وري سمجهائڻ جي ڪوشش ڪئي پر راجيش ضد تي اَڙيل رهيو. نيها کي لڳو، جنهن ماترتوَ جو ڳات مٿي رکڻ لاءِ سرشٽيءَ جو سرجڻ-چڪر هڪ ماءُ جي ڪُک ۾ نوَ مهنا هلي ٿو، تمام سوُر هوءَ ماءُ خود سَهي ٿي ته پوءِ اُن جيوَ کي جنم ڏيڻ يا نه ڏيڻ جو فيصلو ڪرڻ وارا هنجا سسُ سهُرو يا مڙس ڪير ٿيندا آهن؟ اِهو حق هنن گھر وارن کي ڇو ملي؟

ڪجھ پَلن جي مانُ ڪان پوءِ نيها درد لفظن ۾ اِن مانُ جي مُهر ٽوڙيندي چيو- ”ڇاهي ڪجھ بہ ٿي پوي، مان اِن ٽپاس لاءِ اِسپتال ڪونہ هلنديس.“

نيها جو اِهو درد فيصلو ٻڌي راجيش تپي باهہ ٿي ويو. هن کي لڳو، نيها پاران هنجي پُرش-پڻي تي، هنجي اَهم تي جڻ ڪاپارو ڌڪ هنيو ويو آهي.

چيو- نہ منهنجي ٻچڙي، تون تہ منهنجي جگر جو ٽُڪر آهين. مان توکي جنم ڏينديس، هر قيمت تي ڏينديس، چاهي منهنجو سڀ ڪجهہ ئي ڇو نہ ڪسجي وڃي!

اَمان! ڇا مان رڳو پُراڻن ۽ اَهڙن ئي گرنٿن تائين محدود رهنديس؛ جتي مونکي سماج سرسوتي سمجهي پوڄا تہ ڪن، گيان تہ گُهرن، ڏيارِيءَ ڏينهن لڇمي ٻڌائي ڌن دولت تہ گُهرن. درگا جو روپ مڃي، شڪتيءَ جي ٻِکيا تہ پِنن! ۽ ٻئي طرف اِهي ئي سڀ سائنس جي مدد سان مونکي جيئري ئي قتل ڪرڻ کان باز نٿا اَچن! نہ اُنهن کي قانون جي پرواهہ آهي، نہ سروَ شڪتيوان ايشوَر جي! آخر مونکي سرشٽيءَ ۾ اَچڻ کان منهنجو رستو روڪي شروع کان اَڄ تائين سماج کي ڇا مليو آهي؟ پلي سماج کي اَحساس هجي تہ ڪُک ۾ ڪنيائن جو قتل ڪري هوُ وڏو اَپراڌ ڪري رهيا آهن، پر رڳو اَحساس سان ڇاٿو ٿئي؟ ڪجهہ وقت کان پوءِ اُهوئي 'هر هالا، مُنهن ڪالا' واري ڪار ئي تہ آهي!

ڪڏهن سماج سوچيو آهي تہ ڌيءُ جو رستو روڪي، سماج آئيندهہ جي ماءُ کان هميشهہ لاءِ محروم ٿي ويندو، وِڇڙي ويندو.... ڪنهن سوچيو آهي تہ اِنجو اَنجام ڪيڏو نہ خطرناڪ ٿيندو!

اِن سوال ۽ اُن ۾ لڪل ڀاوي منظر جي ڪلپنا ڪري ئي نيها ڏڪي ويئي. اَچاتل خوف جي اَحساس سان هُن جا لِڱ ڏڪڻ لڳا.

سوچيندي سوچيندي نيها کي ڪيڏي مهل اَک لڳي ويئي، ڪيس خبر ئي ڪانہ پيئي.

X X X X X

هن ڀيري ڇنڇر شام جو راجيش گهر آيو. پر اَڳي واري سَهڄتا ۽ پنهنجائپ جي جاءِ تي تَڻيل، پرميل ۽ پنيليل ٿي لڳو. نہ نندڙيءَ ڌيءُ کي هميشهہ وانگر ڀاڪر پائي هَنج ۾ کنيائين، نہ ئي نيها سان ئي سنئينءَ طرح ڳالهايائين. نيها سمجهي ويئي تہ هنجي بيرُخيءَ پٺيان ڪنهنجو هٿ آهي؟

”تنهنجي ايڏي همت! مون سان تي زبان لَڙائين! تہ ها
منهنجو بہ فيصلو ٻڌي ڇڏ. جيڪڏهن صبوح جو تپاس لاءِ تون نہ هلي
تہ پوءِ تنهنجو منهنجو رشتو ختم سمجهجانءِ. منهنجو توسان پوءِ ڪ
واسطو نہ رهندو. هاڻي تنهنجو هن گهر ۾ ڪو حق ڪونهي، ڪَن ڪو
ٻڌي ڇڏ!“

ٻتي وِسائي، مُنهن ڍَڪي پاسي ڪري راجيش تہ سُمهي رهيو،
نيها اَواڪ رهجي ويئي اِهي اَکر ٻڌي. لڳو هاڻي هنجو سڀ ڪج
ختم ٿي ويو آهي. هنجو تياڳ، سمرپڻ، هيل تائين گهر کي خوش
سان پرڻ لاءِ ڪيل ڪوششون، سڀ بيسوُد لڳڻ لڳيون. اِنسان اَه
خودغرض ۽ ناشُڪرا بہ ٿي سگهن ٿا، هن سوچيو بہ نہ هو. هن ڪان اَ
اَکين ۾ اُمڙي آيل سمنڊ هُن کي سمورو پِڄائي ڇڏيو.

اَڌ رات جو هوءَ پلنگ تان اُٿي، چپ چاپ ضروري سامان ٻڌ
۾ وجهي، ٽن سالن جي ڏيءَ کي هنج ۾ کڻي، درد سنڪلپ ۽ حوصل
سان هُن گهر کي هميشه هميشه لاءِ اَلوداع چئي، هوءَ ريلوي اِسٽيش
ڏانهن رواني ٿي ويئي!

جيوَن پريچيه

نالو : پروفيسر اَرجن ڪرپالاڻي

جنم : 13 آڪٽوبر 1951 - بياور (راجستان)

تعليم : ايم. ڪام (Bus. Admn.) گولڊ ميڊل
ايم. اي سنڌي گولڊ ميڊل

پيشو : رٽائرڊ، ڪاليج پرنسيپال، راجستان سرڪار

ڀاشا گيان : سنڌي، اُردو، هندي، اَنگريزي ۽ گجراتي

ڇپيل ڪتاب : ”لاوارث مُلھ“ ۽ ”هڪ ڏيڄاريندڙ سچ“
ڪهاڻين جا مجموعا

اَدبي خدمتون : ڪهاڻيون، مضمون، ڪوتائون، مختلف اَخبارن ۽ رسالن ۾ شايع ٿيل
آڪاشواڻي ۽ دوردرشن تان ڪهاڻيون، ڪوتائون ۽ وارتائون پرسارت ٿيل، اُردو ناٽڪ ”خواب اوُر دونهان“ جو سنڌي ترجمو

اِنعام : راجستان سنڌي اڪادمي جئپور پاران ”لاوارث مُلھ“ تي گوبند مالهي پرسڪار، ”هڪ ڏيڄاريندڙ سچ“ تي ايشوَر چندر پرسڪار ۽ اَکل ڀارت سطح تي ٿيل ڪهاڻي چٽاڀيٽي 2013 ۾ پهريون اِنعام حاصل ٿيل

رِسرچ : مانسڪ تڻاءُ، دامپتيه جيون ۾ ٽڪراءُ ۽ ٻارن جي منووگيانڪ سمسيائن تي مِني رِسرچ پروجيڪٽ

رُچي : تڻاءُ مُڪتي، دامپتيه ۾ ٽڪراءُ کان بچاءُ ۽ ٻارن جي ذهني منووگيانڪ سمسيائن کان مُڪتيءَ لاءِ نشڪام ڀاونا سان صلاح ڏيڻ

سرنامو : 3/10، شاستري نگر، بياور (راجستان)
فون: 01462-225215 موبائيل : 98292-73666